खंड 3

बुनियादी अवधारणाएँ

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 7 संस्कृति और समाज*

संरचना

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 संस्कृति और जीव विज्ञान

7.3 संस्कृतिः लक्षण एवं स्वरूप

7.4 संस्कृति की विशेषताएं

7.5 संस्कृति के प्रकारः भौतिक संस्कृति एवं अभौतिक संस्कृति

7.6 संस्कृति के तत्व

7.7 संस्कृति एवं सभ्यता

7.8 सांस्कृतिक परिवर्तन

- 7.8.1 सांस्कृतिक नवीनीकरण
- 7.8.2 सांस्कृतिक विसरण
- 7.8.3 संस्कृति सम्मिश्रण
- 7.8.4 सांस्कृतिक समीकरण

7.9 सांस्कृतिक विविधता

- 7.9.1 उपसंस्कृतिया
- 7.9.2 प्रतिरोधी संस्कृतियां
- 7.9.3 सांस्कृतिक आघात

7.10 सांस्कृतिक कट्टरता

7.11 सांस्कृतिक उदारता

7.12 बहुसंस्कृतिवाद

7.13 वैश्वीकरण एवं संस्कृति

7.14 संस्कृतिःभारतीय परिप्रेक्ष्य

- 7.14.1 सांस्कृतिक विविधता
- 7.14.2 सांस्कृतिक एकता एवं अखंडता

7.15 सारांश

7.16 संदर्भ

7.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप पढ़ेंगे :

- संस्कृति और समाज में संबंध;
- संस्कृति और समाजशास्त्र में संबंध;
- संस्कृति की प्रमुख विशेषताएं, संस्कृति और जीव विज्ञान, संस्कृति और सभ्यता, संस्कृति के तत्व, संस्कृति के लक्षण एवं सांस्कृतिक स्वरूप

*रोमा रानू दाश, शोधार्थी, जे.एन.यू

- सांस्कृतिक परिवर्तन तथा उसके कारण;
- सांस्कृतिक विविधता, बहुसंस्कृतिवाद;
- संस्कृति का वैश्विक प्रवाह अथवा वैश्वीकरणएवं सांस्कृतिक परिवर्तन; तथा
- संस्कृतिः भारतीय परिप्रेक्ष्य, विविधता तथा विविधता में एकता।

7.1 प्रस्तावना

संस्कृति और समाज परस्पर निर्भर है। हर समाज की एक संस्कृति होती है जो समाज के सदस्यों का मार्गदर्शन करती है। समाज और संस्कृति के बीच संबंध को समझने के लिए हमें यह जानना जरूरी है कि समाज आखिर है क्या? राल्फ लिंटन के अनुसार,"समाज व्यक्तियों का व्यवस्थित समूह है। संस्कृति किसी समाज के जिम्मेदार तथा समझदार लोगों की विशेषताओं का समुच्चय अथवा संकलन है" (लिंटन 1955-29)। समाज का क्षेत्र बड़ा है तथा संस्कृति उसका एक महत्वपूर्ण घटक है। संस्कृति के माध्यम से समाज के लोग अपने जीवन को महसूस करते हैं। दूसरे शब्दों में समाज व्यक्तियों व उनके समूहों से मिलकर बनता है जबकि संस्कृति समाज में रहने वाले लोगों की व्यवहार पद्धतियां हैं जो उस समाज के जीवन से सीधी जुड़ी होती हैं। संस्कृति मनुष्य की वह विशेषता है जो उसे जानवरों, पशु-पक्षियों आदि अन्य जीवो से अलग करती है। संस्कृति हमारे दृष्टिकोण, विश्वासों, मूल्यों और रहन-सहन की पद्धतियों का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार संस्कृति और समाज आपस में एक दूसरे से सीधे जुड़े हैं और उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

गिड्डेन्स तथा सुत्तोंन (2014) के अनुसार सामाजिक संबंधों तथा सामाजिक संरचना को जोड़ने वाले सूत्र को समाजशास्त्र में संस्कृति माना जाता है।

संस्कृति के बारे में विभिन्न विद्वानों की अलग-अलग परिभाषाएं हैं। अल्फ्रेड क्रोएबेर तथा क्लीड क्लूकहोन ने संस्कृति की 150 परिभाषाओं की पहचान की है। संस्कृति की पहली परिभाषा ई.बी. टॉयलर ने की है। उसके अनुसार, "संस्कृति ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, नियम, रीति रिवाज तथा उन अन्य सभी विशेषताओं का संचय है जो किसी समाज के सदस्यों में अंतर्निहित होती है"(टॉयलर,1871:1)। मैलिनोवस्की अरुंटा समाज का उल्लेख करते हुए कहता है कि रीति-रिवाज, भाषा, विश्वास तथा सोचने, महसूस करने व कार्य करने की पद्धतियां संस्कृति के महत्वपूर्ण घटक हैं जो हर समाज में मौजूद रहते हैं।

अब्राहम (2006) के अनुसार सामाजिक समूह या समुदाय के जीवन जीने कि पद्दतियां उनकी प्रकृति, क्रिया-कलाप, भाषा तथा तकनीक आदि सब का समुच्चय संस्कृति कहलाता है। सामाजिक सन्दर्भ में संस्कृति का स्वरूप सामान्य सन्दर्भ में संस्कृति के स्वरूप से बिलकुल अलग है।

सुथरलैंड एट अल (1961) के अनुसार किसी समाज की व्यवहार पद्धतियों, रीति-रिवाजों, विश्वासों, मान्यताओं, भाषा तथा सोचने व महसूस करने तथा कार्य करने के तरीकों आदि को संस्कृति कहा जाता है। मनुष्यों की अनुवांशिकता एक सतत प्रक्रिया है। जीव विज्ञान से संस्कृति की तुलना करने पर यह सत्य स्पष्ट हो जाता है।

7.2 संस्कृति तथा जीव विज्ञान

संस्कृति और जीव विज्ञान में पूरी तरह विपरीतता है। संस्कृति की अपनी विशेषताएं हैं तथा जीव विज्ञान की अपनी। जब मानव समाज की तुलना पशु पक्षी तथा जानवरों के झुंडों से

की जाती है तब सांस्कृतिक विशेषताएं ही मनुष्य को जानवरों से अलग खड़ा करती हैं। फिर भी कुछ ऐसी आधारभूत जैविक विशेषताएं भी है जो मनुष्यों और जानवरों में एक जैसी पाई जाती हैं जैसे भूख, प्यास, भय, मैथुनद्य मनुष्यों की तरह जानवर में भी व्यवहार करने के अपने तरीके होते हैं परंतु दोनों की व्यवहार पद्धतियों में जबरदस्त अंतर होता है जैसे भूख तथा मैथुन की इच्छा सभी जीवों में होती हैं। परंतु संस्कृति यह तय करती है कि मनुष्य इन दोनों इच्छाओं को अनुशासन में रखते हुए किस प्रकार पूरा करें। यही अनुशासन मनुष्य की संस्कृति है जो उसे एक प्रकार की गरिमा व सौंदर्य प्रदान करती है।

मानव समाज में सामाजिक व्यवहार पीढ़ी दर पीढ़ी संपर्क के माध्यम से समझदारी पूर्वक संप्रेषित होता रहता है जबकि पशु पक्षी आदि अन्य जीवो में है यह सब अनुवांशिकता के माध्यम से संप्रेषित होता है। पशु पक्षी आदि जीव प्राकृतिक प्रवृत्तियों से जीवन जीते हैं, वे मनुष्य की तरह व्यवहार नहीं सीख सकतेद्य पशु पक्षी आदि जीव प्रायः कुछ सार्थक ध्वनियों के माध्यम से अपना संदेश दूसरों तक पहुंचाते हैं। वे भाषा को जन्म नहीं दे सकते जबकि मनुष्य समाज ने अनेक भाषाओं को जन्म दिया है। मनुष्य समाज की एक संस्कृति होती है जो उन्हें सृष्टि के शेष जीव धारियों से अलग करती है। दूसरे शब्दों में पशु पक्षी अदि सभी प्रणियों का जीवन, प्रवृतियों पर निर्भर करता है और मनुष्यों का संस्कृति पर।

वॉर्स्ली (1970) के अनुसार संस्कृति को वर्गीकरण, भाषा तथा सांकेतिक चिन्हों के माध्यम से संप्रेषित किया जा सकता है।संकेतों का प्रयोग केवल मनुष्य ही कर सकते हैं। अन्य जीव जंतु संकेतों का इस्तेमाल करना नहीं जानते। सांकेतिक भाषा संस्कृति को विशेष रूप से संपन्न व सक्षम बनाती है। संकेत अथवा प्रतीक मनुष्य के लिए विशेष महत्व रखते हैं। किसी वस्तु विशेष का मूल्य प्रतीक के कारण मनुष्य के लिए विशेष हो जाता है जैसे, राष्ट्रीय ध्वज यद्यपि कपड़े का बना होता है परंतु किसी देश के लोगों के लिए वह कपड़े का टुकड़ा मात्र नहीं होता, वह उनकी राष्ट्रीयता का प्रतीक होता है। इसी प्रकार ईसाइयों के लिए क्रॉस एक चिन्ह मात्र नहीं है, वह निर्वाण का प्रतीक है।

7.3 संस्कृति के लक्षण एवं सांस्कृतिक स्वरुप

लक्षण संस्कृति के सबसे छोटे घटक हैं। हर संस्कृति के अनेक लक्षण होते हैं जैसे- रीति रिवाज, त्यौहार मनाना आदि जो मिलकर संस्कृति को आस्तित्व में लाते है तथा उसकी एक अलग पहचान बनाते हैं। चरण स्पर्श, हाथ मिलाना, भोजन व उसके करने के तरीके, पहनावा आदि सब संस्कृति के द्योतक हैं। किसी संस्कृति के सारे लक्षण मिलकर समूची संस्कृति का निर्माण करते हैं। मजूमदार तथा मदान (2008) मानते हैं कि कोई भी संस्कृति एक स्वतंत्र संस्थान नहीं होती अथवा यह कहें कि संस्कृति अपने आप में स्वतंत्र आस्तित्व नहीं हैं बल्कि यह विभिन्न सांस्कृतिक लक्षणों तथा उनके अन्तर्सम्बन्धों से निर्मित संरचना है। किसी संस्कृति के सारे लक्षण जैसे प्रथाएं, मान्यताएं व चलन आदि मिलकर उसे एक विशिष्ट स्वरुप प्रदान करते हैं जिसके कारण वह दूसरी संस्कृतियों के बीच अलग पहचानी जा सकती हैं। सुथरलैंड एट अल के अनुसार सामोआ के निवासी कावा पीते हैं और कावा पीना उनकी सांस्कृतिक पहचान बन गई है। कावा शराब नहीं है परंतु एक प्रकार का मादक पेय है और सामोआ में इस पेय को त्योहारों व उत्सवों के अवसरों पर विशेष रूप से तैयार करने और परोसने की प्रथा प्रचलित है। समोअन समाज में अन्य अनेक प्रथाओं की तरह कावा पीने की प्रथा भी समाहित हो गई है और वह इस समाज की एक विशेष सांस्कृतिक पहचान बन गई है। किसी भूभाग के लोगों अथवा क्षेत्र विशेष के निवासियों में कुछ आदतें यां प्रथाएं ऐसी रच बस जाती हैं कि वे उनकी सांस्कृतिक पहचान बन जाती हैं। ऐसे सभी क्षेत्र उस संस्कृति विशेष के लिए जाने जाते हैं। अपनी इन विशेषताओं के कारण वे विशेष

सांस्कृतिक क्षेत्र कहलाते हैं। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों जम्मू कश्मीर तथा दक्षिण में तमिलनाडु राज्य की अपनी विशिष्ट संस्कृति के कारण अलग पहचान बन गई है।

7.4 संस्कृति की विशेषताएं

संस्कृति और समाज

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जिस समाज में वह रहता है उसकी एक सामाजिक संस्कृति होती है जो उसके जीवन में गहराई तक उतर जाती है। परस्पर सामाजिक संपर्क के कारण एक प्रकार की संस्कृति किसी समाज के लोगों के जीवन का अनिवार्य अंग बन जाती है। संस्कृति मनुष्य के व्यवहारों को नियंत्रित करती है तथा उसकी रोटी, कपड़ा और मकान आदि मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

क्लीड क्लूकहों के अनुसार संस्कृति जीवन की एक विशेष शैली का निर्माण करती है। उसे उस समाज में स्थापित करने तथा उसके विशिष्ट वातावरण में रहने के अनुकूल बनाती है।

संस्कृति को सीखा जाता है तथा उसका आदान-प्रदान भी होता है।

संस्कृति एक व्यवहार पद्धति है जिसे मनुष्य अपनी जन्मस्थली से, अपने परिवार व समाज से सीखता है। जन्म के समय बच्चे की अपनी कोई पहचान नहीं होती। संस्कृति उसके जन्म के समय उसके साथ नहीं आती, न ही वह उसके अंदर से प्रकट होती है। जिस परिवार, परिवेश तथा समाज के बीच वह जन्म लेता है उन्हीं से सीखता है और उसे सीखकर वह उस समाज का सभ्य सदस्य बन जाता है। धीरे-धीरे अपने समाज के मूल्य व नियमों की आदत डाल लेता है और वह सुसंस्कृत कहलाता है। मनुष्य को सभ्य प्राणी कहा जाता है। धीरे-धीरे वह अपने समाज के मूल्यों तथा नियमों के अनुसार स्वयं को ढाललेता है। इसी लिए उसे सभ्य कहा जाता है। जिस समाज में मनुष्य रहता है उसकी संस्कृति का प्रभाव उसके अंदर गहरा उतर जाता है। समाज के लोग एक दूसरे से सांस्कृतिक प्रभाव ग्रहण करते हैं तथा एक दूसरे को अपने सांस्कृतिक गुणों से प्रभावित करते हैं। इस प्रकार सांस्कृतिक मूल्यों का आदान-प्रदान जीवन भर चलता है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान

मनुष्य अपनी आने वाली हर पीढ़ी को अपनी संस्कृति प्रदान करता है। जीवन भर एक देश के लोग दूसरे देश के लोगों को अपने सांस्कृतिक मूल्य प्रदान करते रहते हैं तथा उनके सांस्कृतिक मूल्यों को ग्रहण करते रहते हैं। माता पिता, अभिभावक, शिक्षक, मित्र आदि सभी भूमिकाओं में मनुष्य अपनी परंपराओं व रीति-रिवाजों से एक दूसरें को परिचित कराते रहते हैं। अनुवांशिक विशेषताओं के आदान प्रदान तथा संस्कृति के आदान प्रदान में मौलिक अंतर है। अनुवांशिक विशेषताएं आवश्यक रूप से स्वतः ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पहुंचती रहती हैं। अनुवांशिक विशेषताएं जैसे- त्वचा का रंग, बालों की प्रकृति, आंखों का रंग, आदि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाते रहते हैं। समाज में मनुष्य की आदतें, विचार, सोच, माता पिता के दृष्टिकोण आदि सांस्कृतिक आदान प्रदान की क्रिया द्वारा प्राप्त करते हैं।राल्फ लिंटन के अनुसार, "संस्कृति समाज के सदस्यों की जीवन शैली है।" विचारों, रीति-रिवाजों, परंपराओं आदि सांस्कृतिक मूल्यों को लोग एक दूसरे से सीखते व सिखाते रहते हैं तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पहुंचाते रहते हैं।

संस्कृति प्रतीकात्मक है

संकेतों तथा प्रतीकों को हम सदा महत्व देते आए हैं। सांस्कृतिक हस्तक्षेप से संकेतों तथा प्रतीकों को सार्थकता प्राप्त होती है। जैसे राष्ट्रीय ध्वज मात्र कपड़े का टुकड़ा नहीं है अपितु

उसकी अपनी एक संस्कृति है। जैसे ईसाइयों के लिए क्रॉस निर्वाण का प्रतीक है वैसे ही किसी देश के निवासियों के लिए राष्ट्रीय ध्वज उनकी प्रभुसत्ता एवं गरिमा का प्रतीक है।

संस्कृति गतिशील एवं परिवर्तनशील है

संस्कृति स्थिर नहीं है। यह राजनैतिक सत्ता के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त स्वयं में सुव्यवस्थित है। यह सदा बदलती रहती है और बाहरी प्रभावों को सदा ग्रहण करती रहती है। यह अंदर से भी बदलती है और बाहर से भी। अनेक सांस्कृतिक मूल्य अथवा तत्व या घटक मिलकर संस्कृति को समग्रता प्रदान करते हैं।

7.5 संस्कृति के प्रकारःभौतिक संस्कृति एवं अभौतिक संस्कृति

भौतिक तथा अभौतिक दोनों प्रकार के तत्व संस्कृति में शामिल है। घर, यातायात के साधन, कारखाने, खाद्य सामग्रियां आदि भौतिक सांस्कृतिक तत्व कहलाते हैं तथा रीति रिवाज, परंपरा, विचार, विश्वास, आस्थाएं, संपर्क प्रविधियां आदि संस्कृति के अभौतिकतत्व हैं। इस बात पर बहुत चर्चाएं हुई हैं कि संस्कृति के क्षेत्र में क्या-क्या शामिल किया जाए और क्या-क्या न किया जाए। कुछ विद्वान यह मानते हैं कि केवल उन्हीं चीजों को संस्कृति के दायरे में लाया जा सकता है जिन्हें व्यवहार में आदान प्रदान करते हैं लेकिन अन्य विद्वान भौतिक वस्तुओं को भी संस्कृति के अंतर्गत मानते हैं। गिड्डेन्स व सुटॉन्स (2014) के अनुसार संस्कृति के दायरे में केवल अभौतिक तत्व ही आते हैं। इमारतें, फर्नीचर आदि भौतिकवस्तुएं संस्कृति के दायरे में नहीं आतीं। लेकिन सभी समाजशास्त्री इस तर्क पर टिके नहीं रहे हैं।वे उपयोग में आने वाली भौतिक वस्तुओं को भी संस्कृति के अंतर्गत मानते हैं। इस प्रकार भौतिक तथा अभौतिक दोनों प्रकार के तत्व संस्कृति के अंतर्गत माने जाने लगे हैं। अतःसंस्कृति के दायरे में केवल ज्ञान, आस्था, कर्मकांड ही नहीं आते परंतु मानव निर्मित चीजें जैसे उपकरण, इमारतें, यातायात के साधन, संपर्क के माध्यम भी संस्कृति के अंतर्गत आते हैं। ग्रीन (1964) के अनुसार,"समाज द्वारा दिया जाने वाला ज्ञान, आदान प्रदान की आदर्श प्रणालियाँ, कर्मकांड, आस्थाएं व जानकारियां तथा उनमें होने वाले संशोधन एवं परिवर्तन भी संस्कृति के अंतर्गत आते हैं।"

7.6 संस्कृति के तत्व

भाषा

भाषा संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है। जो भाषा हम दैनिक जीवन में दूसरे लोगों के संपर्क में आते समय इस्तेमाल करते हैं उसमें हमारी संस्कृति झलकती है। भाषा से मनुष्यों की प्रजातियों की पहचान होती है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में सांस्कृतिक परंपराएं भाषा के माध्यम से ही पहुंचती हैं क्योंकि भाषा में उनके अर्थ अंतर्निहित होते हैं।सपीर-व्होर्फ हाइपोथिसिस के अनुसार,"भाषा प्रदान नहीं की जाती बल्कि सांस्कृतिक रूप से उसका निश्चयन किया जाता है और उसके माध्यम से विभिन्न विधियों द्वारा सांस्कृतिक सत्यता एवं मूल्यों का आदान प्रदान किया जाता है" (स्कैफेर और लम्म 1999)।

उदाहरण के लिए, अरब देशों में यातायात के लिए लोग अब भी अधिकतर ऊंटों पर निर्भर रहते हैं, यही कारण है कि वहां की भाषा में ऊंटों से संबंधित 3000 शब्द पाए जाते हैं। उसी प्रकार भारत में सहजन तथा करेला आदि सब्जियों के पहले भारतीय भाषाओं में विशेषण लगाने की परंपरा नहीं है। परंतु अंग्रेजी में सब्जियों के लिए ऐसे शब्द इस्तेमाल किए जाते हैं जिनमें या तो उन सब्जियों के स्वाद प्रतिध्वनित होते हैं या उनके आकार की झलक मिलती है। भाषा एवं संस्कृति एक दूसरे के साथ अंदर से जुड़े होते हैं।

विश्वास

अब्राहम (2006) के अनुसार सच्चाई के बारे में वे कथन अथवा विचार जिन्हें लोग स्वीकार करते हैं,विश्वास कहलाते हैं। जैसे भारत में बड़ी संख्या में लोग ईश्वर में विश्वास करते हैं तथा विवाह व अन्य महत्वपूर्ण अवसरों के लिए शुभ मुहूर्त निकलवाते हैं। इतना ही नहीं कुछ परिवारों में तो लड़का और लड़की की कुंडलियां मिलाये बिना उनकी शादी भी नहीं की जा सकती। फिर भी विश्वास सदा ऐसे स्थिर नहीं रहते, समय के साथ बदल भी जाते है। विश्वास संस्कृति का मूल्य है। जब हम एक संस्कृति में जीते हैं तो हमारा विश्वास कुछ और होता है परंतु जब हम दूसरी संस्कृतियों के संपर्क में आते हैं तो उनके अनुसार हमारे विश्वास भी बदल जाते हैं। जैसे गांव में रहने वाले लोग प्रायः ग्रामीण संस्कृति में जीते हैं और काफी हद तक अंधविश्वासी होते हैं परंतु जब वे शहरों में आ जाते हैं तब उनके अंधविश्वास समाप्त हो जाते हैं। लेकिन कभी-कभी हमारे विश्वास हमारे अंदर इतनी गहराई से उतर जाते हैं कि हम उन्हें कभी छोड़ नहीं पाते।

मान्यताएं

मान्यताएं समाज द्वारा स्वीकृत नियम है जो समाज के सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। सुथरलैंड (1961) के अनुसार सामाजिक नियम किसी समुदाय विशेष द्वारा विकसित किये जाते हैंऔर उस समुदाय के सदस्यों के व्यवहार के स्तर को तय करते हैं। वे समाज के सदस्यों के व्यवहार को दिशा देते हैं अथवा यह कहें कि सही व्यवहार कराने के लिए उन्हें निर्देश देते हैं। हरलामबोस और हेल्ड (2016) के अनुसार मान्यताएं कार्य की विशिष्ट मार्ग दर्शिकाएं हैं। वे विभिन्न स्थितियों में मनुष्य किस प्रकार व्यवहार करें इसे तय करती हैं। उदाहरण के लिए हर समाज में विभिन्न अवसरों पर वस्त्र धारण करने के लिए कुछ मान्यताएं होती हैं जैसे उत्सव में जाने के लिए हम अलग तरह के कपड़े पहनते हैं, किसी की मृत्यु हो जाने पर शोक प्रकट करने के लिए अलग तरह के कपड़े पहनते हैं, काम पर जाने के लिए अलग तरह के तथा अस्पताल जाने के लिए अलग तरह के। हर समाज में मान्यताएं अलग-अलग होती हैं उदाहरण के लिए जैसे कपड़े आदिवासी पहनते हैं वैसे अन्य समाजों में नहीं पहने जाते। मान्यताएं दो प्रकार की होती हैं औपचारिक मान्यताएं तथा अनौपचारिक मान्यताएं। औपचारिक मान्यताएं लिखित होती हैं तथा उनका उल्लंघन करने पर दंडित भी किया जा सकता है। अनौपचारिक मान्यताएं लिखित नहीं होतीं परंतु वे समाज द्वारा स्वीकृत होती हैं। इनका पालन न करने पर दंड का विधान नहीं है। अब्राहम के अनुसार औपचारिक मान्यता अनिवार्य रूप से लागू की जाती है जैसे- स्कूल की यूनिफार्म। अनौपचारिक मान्यताएं वे मान्यताएं हैं, जिनमें लोगों से उम्मीद की जाती है कि वे उन्हें माने जैसे सबके सामने प्यार नहीं करना तथा सलीके से कपड़े पहनना।

मान्यताओं को उनके लागू करने की अनिवार्यताओं के आधार पर फिर से वर्गीकृत किया जा सकता है। पहले वर्ग में वे मान्यताएं आती हैं जो अनौपचारिक होती हैं। यह हमारे कार्यों को दिशा देती हैं। इन्हें सामान्य मान्यताएं भी कहा जा सकता हैं जैसे- जब बड़े बोल रहे हों तो बीच में नहीं बोलना चाहिए और यदि छींक आये तो अपनी नाक ढक लेनी चाहिए। दूसरी श्रेणी में वेमान्यताएं आती है जिन्हें अधिक शक्ति से लागू किया जाता है क्योंकि उनसे समाज अथवा समुदाय के हित सीधे जुड़े होते हैं। इन्हें अनिवार्य मान्यताएं कह सकते हैं। किसी देश के कानून इन अनिवार्य मान्यताओं के आधार पर बनाए जाते हैं। इनमें मानव विवेक निहित होता है। अनिवार्य मान्यताएं सामान्य मान्यताओं व कानून के बीच के स्तर की होती हैं।

सांस्कृतिक मूल्य मनुष्य के अंतर्जगत से जुड़े होते हैं और वे मनुष्य के लिए क्या सही है और क्या गलत है उसके आधार पर मनुष्य को दिशानिर्देश देते हैं जबकि मान्यताएं बाहर से मनुष्य को अनुशासित करती हैं।

अब्राहम (2006) के अनुसार सांस्कृतिक मूल्य समाज में रहने वाले लोगों के बीच इस आधार पर एक समझौता होता है कि सभ्य समाज में क्या ठीक है और क्या ठीक नहीं है। वे समाज में ऐसे सामान्य मानक पैदा करते हैं जो इस बात की व्याख्या करते हैं कि कौन सी चीजें सामाजिक जीवन को सुंदर बना सकती हैं और कौन सी चीजें उसके नैतिक स्तर को गिरा सकती हैं। समाज में लोग जिस तरह का व्यवहार करते हैं उनके व्यवहार करने के तरीकों को मूल्य कहा जाता है। हर समाज के कुछ नैतिक लक्ष्य होते हैं जिन्हें प्राप्त करने में व्यक्तियों तथा उनके समूहों के मूल्य समाज की सहायता करते हैं। उदाहरण के लिए-जब राष्ट्रीय गीत बज रहा हो तो उसके सम्मान में खड़े हो जाना तथा अपने से आयु में बड़े लोगों को सम्मान देना आदि क्रियाओं के मूल में सांस्कृतिक मूल्य ही होते हैं। स्कैफेर तथा लम्म (1999) दुनिया के एक छोटे से देश पापुआ की संस्कृति का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि वहां सार्वजनिक हित के लिए किए जाने वाले कार्यों को व्यक्तिगत हितों के लिए किए जाने वाले कार्यों की तुलना में श्रेष्ठ माना जाता है। ऐराशोव एवं सिंह (2006) कहते हैं कि परिवार, संबंधी तथा पुरानी पीढ़ियां किसी संस्कृति के लिए सांस्कृतिक मूल्यों की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं।

प्रतिबंध एवं स्वीकृति

जो व्यवहार समाज के लिए अच्छे नहीं होते समाज उनकी स्वीकृति नहीं देता और ऐसे व्यवहारों के लिए संबंधित व्यक्तियों को किसी न किसी रूप में दंडित किया जाता है। जो व्यवहार समाज के अनुकूल होते हैं उनके लिए व्यवहार करने वालों को पुरस्कृत भी किया जाता है। इस प्रकार प्रतिबंधात्मक तथा स्वीकारात्मक दोनों ही रूपों में मनुष्य के व्यवहारों को समाज में देखा जाता है। जो व्यवहार नैतिक स्तर पर खरे उतरते हैं तथा समाज के लिए सहयोगी होते हैं उनके लिए लोगों को पुरस्कृत किया जाता हैं परंतु जो सांस्कृतिक मान्यताओं के विरुद्ध व्यवहार करते हैं उन पर जुर्माना किया जा सकता है या उनके लिए उन्हें जेल भी भेजा जा सकता है। स्कैफेर तथा लम्म (1999) कहते हैं कि किसी संस्कृति की मान्यताएं तथा उनमें किन कार्यों के लिए लोगों को पुरस्कृत किया जाता है और किन के लिए दंडित, यह बताते हैं कि किसी संस्कृति के मूल्य और उसकी प्राथमिकताएं क्या है। सबसे अधिक महत्व के सांस्कृतिक मूल्यों का अनुवीक्षण इस दृष्टि से अधिक गंभीरता से किया जाता है कि वे पुरस्कार के योग्य हैं अथवा प्रतिबंधों के। जबकि कम महत्व के मामलों को हल्के से लिया जाता है अथवा उन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता।

7.7 संस्कृति एवं सभ्यता

संस्कृति और सभ्यता प्रायः एक दूसरे के विरोधी समझे जाते हैं। प्रसिद्ध विद्वान ऑगबर्न तथा निम्कॉफ (1947) के अनुसार सभ्यता संस्कृति का अगला चरण है। सभ्यता उच्चस्तरीय, विकसित एवं सामाजिक रूप से स्वीकृत मनुष्यों के आचरण का प्रतिनिधित्व करने वाला सुसंस्कृत संगठन है जिसमें उच्च कोटि के सांस्कृतिक मूल्य समाहित हैं। जब मानव समाज सामाजिक एवं राजनैतिक रूप से विकास के उच्च सोपानों पर पहुंच जाता है तो उसे सभ्य समाज कहा जाता है। उसके इस गुण व स्तर को सभ्यता कहते हैं। संस्कृति मनुष्य के आंतरिक स्तरीकरण एवं आंतरिक उपलब्धियों का संचय है जबकि सभ्यता मनुष्य के बाह्य

स्तरीकरण एवं उपलब्धियों का प्रतिनिधित्व करती है। सभ्यता संस्कृति का भौतिक पक्ष भी है जैसे किसी समाज की वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियां। मजूमदार एवं मदान (2000) के अनुसार संस्कृति मनुष्य की नैतिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक उपलब्धियों का समुच्चय है। संस्कृति उसके संकेतों और प्रतीकों व मूल्यों से जानी जाती है जबकि सभ्यता संस्कृति के बाद आती है तथा मनुष्य की बाह्य उपलब्धियों से जानी जाती है। सभ्यता मनुष्य के सांस्कृतिक जीवन के उपादानों का समग्र समुच्चय है।

टॉय (2003) के अनुसार,"सभ्यता व्यक्तियों व समाज के सर्वांगीण विकास का प्रतिनिधित्व करती है और संस्कृति पर विशेष ज़ोर देती है।" संस्कृति की तुलना में सभ्यता का क्षेत्र व्यापक है क्योंकि यह मानव समाज का प्रतिनिधित्व करती है। सभ्यता का क्षेत्र बहुत बड़ा है परंतु फिर भी संस्कृति सभ्यता की तुलना में समाज में उच्च स्थान पाती है।

बोध प्रश्न

1) संस्कृति एवं समाज में क्या संबंध है? चार पंक्तियों में व्याख्या कीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) सांस्कृतिक संदर्भ में मनुष्य तथा पशुओं में अंतर स्थापित कीजिए। केवल चार पंक्तियों में उत्तर दीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7.8 सांस्कृतिक परिवर्तन

संस्कृति गतिशील है। समय-समय पर संस्कृति के तत्व बदलते रहते हैं। आधुनिकता के दौर में दुनियाभर के समाजों की संस्कृति में भारी बदलाव आया है। भोजन शैली, कपड़े पहनने के ढंग, पारिवारिक आकार एवं संगठन, शिक्षा, जातीय पहचान, धार्मिक व सांप्रदायिक पहचान आदि मामलों में नई पीढ़ी में सांस्कृतिक बदलाव देखने को मिला है। संस्कृति में परिवर्तन सामान्यतः सांस्कृतिक नवीनीकरण, सांस्कृतिक सम्मिश्रण, सांस्कृतिक विसरण, सांस्कृतिक समीकरण आदि के कारण आते हैं।

7.8.1 सांस्कृतिक नवीनीकरण

नवीनीकरण तथा नव-निर्माण का नयेपन के अवतरण से सीधा संबंध है। चाहे भौतिक पक्ष हो या कलात्मक पक्ष, कहानी सुनाने की प्रथा, नए विचार, नई-नई जानकारियां आदि। उदाहरण के लिए मंदिर की नक्काशी हो या ताजमहल के सफ़ेद संगमरमर पर की जाने वाली नक्काशी का सन्दर्भ हो या अंतरिक्ष में उपग्रह के प्रतिस्थापन का मामला, यह सब सांस्कृतिक नवीनीकरण के अंतर्गत आता है। कुछ महत्वपूर्ण मामलों में संशोधन या सामान्य समयानुसार परिवर्तन भी नवीनीकरण के अंतर्गत आता है। इस प्रकार नवीनीकरण सांस्कृतिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण अंग है। नवीनीकरण के बिना नतो सांस्कृतिक विसरण संभव है, न सांस्कृतिक सम्मिश्रण और न ही सांस्कृतिक समीकरण।

7.8.2 सांस्कृतिक विसरण

सांस्कृतिक विसरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी संस्कृति के तत्व एक समाज से दूसरे समाज में पहुंचते हैं। यह एक प्रकार का सांस्कृतिक विस्तार है जो एक समुदाय से दूसरे समुदाय तक होता है। यातायात के साधनों तथा संपर्क के माध्यमों और लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा करने अथवा जाकर बस जाने से बिना किसी रोक-टोक के एक समाज की संस्कृति के भोजन, वस्त्र, जीवन शैली, शिक्षा आदि से जुड़े सांस्कृतिक तत्व दूसरे समाजों में पहुंच जाते हैं।

सांस्कृतिक विसरण प्रायः दो स्तरों पर होता है- भौतिक संस्कृति का विसरण तथा अभौतिक संस्कृति का विसरण। वीलियम ऑगबर्न (1966) के अनुसार अभौतिक संस्कृति के तत्व इतनी आसानी से नहीं बदलते जितनी आसानी से कि भौतिक संस्कृति के तत्व बदल जाते हैं। अभौतिक सांस्कृतिक तत्वों के तुलनात्मक रूप से, कठिनाई से बदलने अथवा न बदल पाने की प्रक्रिया को सांस्कृतिक व्यवधान (cultural lag) कहा जाता है। उदाहरण के लिए पूर्वी दुनिया के देशों को पश्चिमी तकनीक को अपनाने में अधिक समय नहीं लगता परंतु पश्चिमी संस्कृति को आत्मसात करना उनके लिए मुश्किल हो जाता है। कुछ मामलों में तो यह संभव ही नहीं हो पाता। सांस्कृतिक व्यवधान के कारण तेजी से बदलती तकनीक के युग में सांस्कृतिक मूल्यों का न बदल पाना तनाव पैदा करता है जबकि तकनीक के स्तर पर तब तक बहुत कुछ बदल चुका होता है। इससे सामाजिक संतुलन व सामाजिक समरसता स्थापित करने में बड़ी कठिनाई आती है। सुप्रसिद्ध समाज विज्ञानी ऐमाइल दुर्खेइम के अनुसार लंबे समय तक सांस्कृतिक व्यवधान की स्थिति बनी रहे तो विभ्रमों तथा विद्रोहों की स्तिथि उत्पन्न हो जाती हैं और सामाजिक विघटन की क्रिया आरम्भ हो जाती हैं तथा आपसी समझदारी वसद्भाव को गंभीर खतरा पैदा हो जाता है।

7.8.3 सांस्कृतिक सम्मिश्रण

दो संस्कृतियों के परस्पर संपर्क में आने से सांस्कृतिक विसरण की स्थिति उत्पन्न होती है। जब दो संस्कृतियां मिलती हैं तब वे एक दूसरे से विचारों एवं मूल्यों का आदान-प्रदान करती हैं। इससे दोनों संस्कृतियों का विस्तार होता है। इस विस्तार की क्रिया को सांस्कृतिक विसरण कहा जाता है। जब एक संस्कृति दूसरी संस्कृति के प्रभाव में आकर बदलने की प्रक्रिया आरंभ कर देती है तब उसे सांस्कृतिक सम्मिश्रण कहा जाता है। इससे सांस्कृतिक स्तर पर नवीकरण भी होता है और भारी मात्रा में सांस्कृतिक तत्वों का आदान-प्रदान भी। ऐसे में अल्पसंख्यक संस्कृति अपने कुछ सांस्कृतिक तत्वों को बचा कर रख लेती है।

7.8.4 सांस्कृतिक समीकरण

सांस्कृतिक सम्मिश्रण की स्थिति में बड़ी संस्कृति प्रायः छोटी संस्कृति को निगल ही जाती है। अपने अस्तित्व को समाप्त होता देख अल्पसंख्यक संस्कृति वाले लोग अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं को इस भय से समेटने और संजोकर रखने में लग जाते हैं कि कहीं उनका सांस्कृतिक अस्तित्व ही समाप्त न हो जाए। उदाहरण के लिए विकास की बड़ी-बड़ी योजनाएं लागू की जाती हैं और बड़े- बड़े जंगल साफ किये जाने लगते हैं तो कबीलाई संस्कृति अथवा आदिवासियों की संस्कृति खतरे में पड़ने लगती है और आदिवासियों के लिए दूसरी संस्कृति वालों के साथ घुल मिल पाना मुश्किल हो जाता है। वे अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए संघर्ष करने लग जाते हैं। परन्तु धीरे धीरे वे मुख्य संस्कृति के साथ सामंजस्य बैठाना शुरू कर देते हैं। इस स्थिति को सांस्कृतिक समीकरण कहा जाता हैं

7.9 सांस्कृतिक विविधता

किसी भी समाज में प्रायः विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों वाले लोग निवास करते हैं। एक समुदाय की संस्कृति दूसरे समुदाय से भिन्न होती है और वह उसकी अलग पहचान बनाती है। पूरे समाज की संस्कृति एक व्यापक संस्कृति होती है जिसमें विभिन्न उपसंस्कृतियों व प्रतिरोधी संस्कृतियां भी समाहित रहती हैं, जो कभी-कभी सिर उठाती हैं तो समाज में सांस्कृतिक टकराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

7.9.1 उपसंस्कृतियां

किसी समाज की प्रमुख संस्कृति बहुसंख्यक लोगों की संस्कृति होती है और अल्पसंख्यकों की संस्कृति उपसंस्कृति कहलाती है। बड़ी जनसंख्या वाले देशों में प्रायः अनेक संस्कृतियों के लोग निवास करते हैं जिनमें कुछ उपसंस्कृतियां भी होती हैं।स्केफर और लेम (1999) के अनुसार उपसंस्कृति समाज की पूरी संस्कृति के एक अवयव की तरह होती है जो अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने के लिए सदैव संघर्ष करती सी दिखती है। इस संस्कृति के अपने कुछ औपचारिक तौर तरीके होते हैं, कुछ मूल्य होते हैं तथा कुछ ऐसी मान्यताएं भी होती हैं जिनका पालन इस संस्कृति वाले लोग सख्ती से करना चाहते हैं जिससे उनका सांस्कृतिक अस्तित्व बचा रहे। उपसंस्कृति के मूल्य एवं मान्यताएं पूरे समाज की व्यापक संस्कृति की तुलना में अधिक सख्त होते हैं। अल्प संस्कृति वाले लोगों में व्यापक संस्कृति वाले लोगों की तुलना में अपनी संस्कृति के प्रति, अपने सांस्कृतिक मूल्यों एवं मान्यताओं के प्रति पूर्वाग्रह अधिक रहता है।

अब्राहम (2006) के अनुसार उपसंस्कृतियां पूरे समाज की संस्कृति का अंग मात्र नहीं होती बल्कि वे अपने आप में सम्पूर्ण संस्कृति होती हैं जो समाज में अपनी विशिष्ट स्थिति को बनाए रखने के लिए सजग रहती हैं। उदाहरण के लिए नीलगिरि के पर्वतीय क्षेत्र की टोडा संस्कृति, केरल की नैयर और इज़ाबा संस्कृति, राजस्थान की राजपूत संस्कृति, असम की बोडो संस्कृति उपसंस्कृतियां होते हुए भी अपने आप में पूर्ण संस्कृतिया हैं। कुछ विशिष्ट संस्कृतियां व्यवसायों के आधार पर भी विकसित हो जाती हैंजैसे औद्योगिक समाज की संस्कृतियां तथा राजनैतिक दलों की संस्कृतियां। इसके अलावा कुछ विसामान्य उपसंस्कृतियां भी होती हैं जैसे अपराधियों, माफियाओं तथा नशेड़ियों की संस्कृतियां। अमेरिकन समाज में इंग्लैंड से आए अंग्रेजों की न्यू इंग्लैंड संस्कृति,साउथर्न संस्कृति तथा टेक्सॉन संस्कृति भी ऐसी ही उपसंस्कृतियां हैं। जब हम उपसंस्कृतियों की बात करते हैं तो

युवाओं की संस्कृति तथा युवाओं की उपसंस्कृति का भी जिक्र आता है। युवाओं की उपसंस्कृति का अर्थ है एक ऐसी संस्कृति जो केवल युवाओं से संबंधित होती है जिसमें उन्हें विशेष प्रकार के मूल्यों, स्तरों, व्यवहार पद्धतियों आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे वे अपने से बड़े लोगों के समाज के बीच अपनी अलग पहचान बनाये रख सकें।

7.9.2 प्रतिरोधी संस्कृतियां

यद्यपि समाज में विभिन्न उपसंस्कृतियों का अस्तित्व रहता है परंतु इनमें से कुछ उपसंस्कृतियां जो खास वर्ग के लोगों की होती हैं, समाज की प्रमुख संस्कृतिके साथ हमेशा ताल मेल बिठाकर नहीं चलतीं। वे समाज की व्यापक संस्कृति को चुनौती देती हैंऔर कभी-कभी उनके ठीक विरुद्ध जाती हुई सी दिखती हैं। उदाहरण के लिए- डकैतों का जीवन स्तर, उनकी मान्यताएं एवं विचार पारंपरिक समाज के लोगों से बिल्कुल भिन्न होते हैं। प्रतिरोधी उपसंस्कृतियों में युवाओं की संस्कृति भी होती है जो पुरानी पीढ़ी के लोगों की संस्कृति से तालमेल बैठाना नहीं चाहते। कुछ देशों में तो युवा अपनी अलग संस्कृति बनाने में लगते दिख रहे हैं जिनमें केवल युवा ही शामिल हो सकते हैं। विभिन्न तकनीकों के विकास, राजनीति में अतिवादियों का उदय तथा हिप्पी संस्कृति आदि इसके सटीक उदाहरण है। स्कैफेर और लेम (1999) ब्रिटेन में 1968 में पैदा हुई एक नई उपसंस्कृति का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इस सांस्कृतिक समूह में केवल वे युवा शामिल थे जो अपना सिर मुड़ा लेते थे, पूरे शरीर पर टैटू खुदवाते थे, इस्पात के नुकीले जूते पहनते थे और वे ब्रिटिश समाज की प्रमुख सांस्कृतिक धारा के प्रति विद्रोही थे। उनकी सोच में रंगभेद, लूटमार, हिंसा और हत्या जैसे मानवता विरोधी मूल्य शामिल हो गए थे। इस प्रकार की विद्रोही उपसंस्कृतियों को विसंगत अथवा विरोधी संस्कृतियां भी कहा जाता है।

7.9.3 सांस्कृतिक आघात

जब लोग किसी अपरिचित संस्कृति के संपर्क में आते हैं और उसके साथ संतुलन नहीं बैठा पाते तो वे एक प्रकार की परेशानी तथा विचलन का अनुभव करते हैं। इससे उन्हें सांस्कृतिक स्तर पर आघात पहुंचता है। हमारे समाज में बहुत सारी ऐसी उपसंस्कृतियां भी हैं जिनसे हम ठीक से परिचित तक नहीं हैं। जब हम किसी ऐसी संस्कृति के लोगों के संपर्क में आते हैं जिनका रहन-सहन, तौर-तरीके चौंकाने वाले हों तो हमें एक धक्का सा लगता है। उदाहरण के लिए जब हम किसी अन्य देश की यात्रा पर जाते हैं तो उनकी जीवनशैली और उनके तौर तरीके हमें इतने विचित्र लगते हैं कि उनके साथ हम तालमेल नहीं बिठा पाते। इस तरह की अजनबी तथा विचित्र संस्कृतियों के संपर्क में आने से जो चोट पहुंचती है उसे सांस्कृतिक आघात कहा जाता है। लोगों का यह स्वभाव होता है कि वे अपनी संस्कृति को दूसरों की संस्कृति से श्रेष्ठ मानते हैं।

7.10 सांस्कृतिक कट्टरता

विलियम ग्रैहम सुन्नेर (1906) के अनुसार जब किसी संस्कृति विशेष के लोग अपने सांस्कृतिक मूल्यों एवं मान्यताओं से बाहर आना ही नहीं चाहते हैं और दूसरों को भी उसी नजरिए से देखते हैं तथा उनसे भी वैसा ही बन जाने की अपेक्षा रखते हैं तो इस स्थिति को सांस्कृतिक कट्टरता कहा जाता है। वे अपनी मान्यताओं पर अडिग रहते हैं तथा दूसरों से अलग दिखाई पड़ते हैं। वे अपने सांस्कृतिक मूल्यों के हिसाब से ही दूसरों का मूल्यांकन करने में लगे रहते हैं। दक्षिण भारत के लोग यह मानते हैं कि उनकी संस्कृति उत्तर भारत के निवासियों की संस्कृति से श्रेष्ठ है। अनेक भू भागों के लोग अभी भी यह मानते हैं कि

अफ्रीका में पाषाण युगीन कबीलाई आदिवासी निवास करते हैं और वह एक अंधेरा महाद्वीप है। सांस्कृतिक पूर्वाग्रह की सोच से ग्रस्त लोग अपनी संस्कृति को इतना ऊंचा मानते हैं कि वे अन्य संस्कृतियों को गलत मानने लग जाते हैं। यह बात स्वीकार नहीं कर पाते कि दूसरों की संस्कृति उनकी संस्कृति से केवल अलग ही है परंतु गलत नहीं है। ऐसी सांस्कृतिक कट्टरता वाले लोग दूसरी संस्कृति वाले लोगों से डरने भी लगते हैं।

7.11 सांस्कृतिक उदारता

जब किसी संस्कृति के लोग यह मान कर चलते हैं कि दूसरी संस्कृति के लोगों का रहन सहन, उनके रीति रिवाज, उनकी संस्कृति के हिसाब से ठीक हैं भले ही वे हम से मेल नहीं खाते, तो इसे सांस्कृतिक उदारता कहते हैं। अब्राहम (2006) के अनुसार किसी संस्कृति का हर तत्व उस संस्कृति से जुड़े लोगों के अनुसार कार्य करता है। अतः विभिन्न संस्कृतियों के रीति-रिवाजों और व्यवहारों को गलत अथवा सही नहीं माना जाना चाहिए। उनका मूल्यांकन उनकी संस्कृति के अनुसार ही किया जाना चाहिए। अनेक अमेरिका निवासी इस बात पर आश्चर्य करते हैं कि भारत के किसान उन गायों का मांस क्यों नहीं खाते जो भूख से मरने पर विवश होती हैं। सांस्कृतिक उदारता कभी-कभी उस सीमा तक पहुंच जाती है कि वह सांस्कृतिक पूर्वाग्रह की विरोधी दिखने लगती है और दूसरी संस्कृतियों को अपने से उच्च मानने लगती है।

7.12 बहुसंस्कृतिवाद

जाति, धर्म, भाषा आदि के आधार पर विकसित कुछ संस्कृतियां ऐसी भी होती हैं कि जिन के नैतिक मूल्य एवं मान्यताएं उन्हें दूसरों से अलग करते हैं। जब इस प्रकार की संस्कृतियों के लोग किसी अन्य देश अथवा समाज में निवास करते हैं तो उन्हें सांस्कृतिक विभिन्नताओं के बावजूद एक दूसरे के साथ तालमेल बिठाना पड़ता है और एक दूसरे के सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सम्मान व स्वीकार की भावना पैदा करनी पड़ती है। किसी समाज में मौजूद ऐसी सांस्कृतिक स्थिति को बहुसंस्कृतिवाद कहा जाता है। इस प्रकार दो या दो से अधिक संस्कृतियों के मिलने और उससे उत्पन्न होने वाली सांस्कृतिक स्थिति को बहुसंस्कृतिवाद कहा जाता है।

किमलिका (2012) के अनुसार बहुसंस्कृतिवाद एक वैधानिक एवं राजनैतिक समायोजन है। उनके अनुसार पश्चिम में बहुसंस्कृतिवाद का जन्म पुरातन सांस्कृतिक प्रारूपों एवं रंगभेद अथवा नस्लवाद की अनुवांशिक परंपराओं के स्थान पर आधुनिक लोकतांत्रिक नागरिकों के उदार एवं प्रगतिशील विचारों को स्थापित करने के प्रयासों के परिणामस्वरूप हुआ है। अब्राहम (2006) के अनुसार जब विभिन्न संस्कृतियों के लोग किसी देश अथवा समाज में एक साथ निवास करते हैं तो उनकी संस्कृतियों के आपस में मिलने जुलने से उनके बीच एक आपसी समझ विकसित होती है और एक दूसरे के सांस्कृतिक मूल्यों एवं मान्यताओं के प्रति आदर व स्वीकार का भाव उत्पन्न हो जाता है। बहुसंस्कृतिवादी समाज की तुलना सलाद से भरे कटोरे से की जा सकती है। ऐसी स्थिति में विभिन्न समुदाय अपने अपने सांस्कृतिक मूल्यों को बचाए रखने के लिए उस हद तक प्रयास करते हैं कि दूसरों के साथ सांस्कृतिक टकराव की स्थिति उत्पन्न न हो, फिर भी बहुसंख्यकों की संस्कृति प्रायः अल्पसंख्यकों की संस्कृति को निगल जाती हैं अथवा यह कहें कि उन पर भारी पड़ जाती है।जब से समाज में वैश्वीकरण की स्थिति उत्पन्न हुई है तब से विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले लोगों की एक साथ रहने और मिलकर काम करने की संभावनाएं बढ़ती गई हैं। इससे बहुसंस्कृतिवाद अस्तित्व में आया है, और यह एक ऐसा विषय है जिस पर

आजकल खूब चर्चाएं हो रही हैं और लोग यह पूछने लगे हैं कि क्या बहुसंस्कृतिवादी समाज की अवधारणा को दुनिया भर में व्यापक रूप से स्वीकृति मिल जाएगी?

7.13 वैश्वीकरण एवं संस्कृति

सुनंदा सेन (2007) का विचार है कि,"वैश्वीकरण सीधा वैश्विक समग्रता से जुड़ा है। जब से बाजारों का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार हुआ है तब से बाजारों ने विभिन्न राष्ट्रों व राज्यों की समस्त सीमाओं को लांघते हुए व्यापार, व्यवसाय, वित्तीय विस्तार, तकनीक, ज्ञान, संस्कृति, यहां तक कि जन आंदोलनों के माध्यम से वैश्विक अखंडता व समग्रता की स्थिति उत्पन्न कर दी है।" अब यातायात, संचार एवं संपर्क के माध्यमों के तेजी से विकसित होने के कारण विभिन्न संस्कृतियों के बीच संपर्क एवं संबंध स्थापित होना स्वाभाविक हो गया है और नए मूल्यों, विचारों व सार्थकताओं वाले लोगो के संपर्क में आने के कारण जन आंदोलनों की शैलियों का विश्व स्तर पर आदान-प्रदान संभव हो गया है। वैश्वीकरण ने अर्थव्यवस्था, राजनीति, संस्कृति आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तनों की स्थिति उत्पन्न कर दी है।

अर्जुन अपदुरई ने वैश्विक संस्कृति के प्रवाह पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि,"वैश्विक संस्कृति पांच आयामों में प्रवाहित होती है। पर्यटकों का एक देश से दूसरे देश में जाना, एक भूभाग के लोगों का दूसरे भूभाग में पलायन, शरणार्थियों का अन्य देशों में प्रवेश तथा लोगों का व्यवसाय, रोजगार, शिक्षा आदि अनेक कारणों से एक जगह से दूसरी जगह जाना। इस सब से किसी देश की राजनीति एवं संस्कृति प्रभावित होती है। वैश्विक संस्कृति का प्रवाह चार माध्यमों से तेजी से हो रहा है। 1) तकनीकी विस्तार - वैश्वीकरण के दौर में एक देश की तकनीक राष्ट्रीय सीमाओं को लांघते हुए अनेक देशों में पहुंच रही है। यह प्रक्रिया तकनीकी विस्तार कहलाती है। 2) वित्तीय विस्तार-धन तथा वित्तीय संसाधनों का मुद्रा बाजार तथा शेयर बाजारों के जरिए वित्तीय विस्तार हो रहा है। 3) संचार माध्यमों का विस्तार-टेलीविजन, फिल्म आदि का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसार हो रहा है जिनसे सूचनाओं का आदान-प्रदान वैश्विक स्तर पर संभव हो गया है। 4) वैचारिक विस्तार - विचारधाराओं का आदान-प्रदान अब वैश्विक हो गया है जिससे स्वतंत्रता, न्याय, अधिकार, लोकतंत्र, प्रभुसत्ता आदि संबंधी विचारों का प्रवाह वैश्विक स्तर पर होने लगा है।

7.14 संस्कृति : भारतीय सन्दर्भ

7.14.1 सांस्कृतिक विविधता

भारतीय समाज बहुआयामी एवं अत्यधिक जटिल समाज है। इसमें विभिन्न समुदायों व संस्कृतियों के लोग निवास करते हैं। एस.सी.दुबे (1990) के अनुसार भारतीय सभ्यता 5000 वर्ष पुरानी है। इतनी लंबी अवधि में भारत में विभिन्न संस्कृतियों वाले लोगों ने अनेक बार घुसपैठ की है जिनकी भाषाएं भी भिन्न-भिन्न थी। इससे भारतीय समाज में विविधता, संपन्नता एवं विशालता लगातार बढ़ती गई है। भारत में इस समय बड़ी संख्या में भाषाएं तथा बोलियां मौजूद हैं। अनेक प्रकार की आस्थाएं, अनेक प्रकार के रीति रिवाज, अनेक प्रकार की मान्यताएं तथा परंपराएं मौजूद हैं। भारत में 22 राष्ट्रीय स्तर की भाषाएं हैं तथा सौ से अधिक बोलियां हैं। भारतीय समाज वास्तव में दुनिया का एक ऐसा समाज है जिसमें सबसे अधिक धार्मिक तथा सांस्कृतिक विविधताएं मौजूद हैं। कुछ क्षेत्रों की भाषाएं और बोलियां ऐसी भी हैं जिनको अभी तक पहचाना नहीं जा सका है। अकेले नागालैंड में 19 प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं। भारत में जिन धर्मों के लोग निवास करते हैं उनके नाम

हैं- 1) हिन्दू धर्म 2) इस्लाम धर्म 3) ईसाई धर्म 4) सिख धर्म 5) बौद्ध धर्म 6) जैन धर्म 7) पारसी 8) यहूदी 9) बहाई धर्म। हिंदू धर्म बहुसंख्यकों का धर्म है। अन्य सभी धर्मों के लोगों की संख्या कम है। पारसी, यहूदी और बहाई धर्म के मानने वाले लोगों की संख्या तो बहुत ही कम है। हिंदू धर्म और हिंदू संस्कृति की जड़ें बहुत पुरानी हैं। हिंदू सभ्यता तथा हिंदू समाज का अस्तित्व कम से कम पिछले 5000 वर्षों से है। अन्य धर्मों व सभ्यताओं का जन्म अथवा भारत में आगमन बहुत बाद में हुआ है। भारतीय समाज के लोग विभिन्न जातियों, उपजातियों तथा वर्गों में विभाजित हैं। हर जाति की अपनी विशिष्ट मान्यताएं, परंपराएं, रीति-रिवाज हैं। भारतीय समाज तीव्र आंतरिक विरोधों तथा असमानताओं के लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है।

एक ओर भारत में अत्यंत संपन्न निवास करते हैं जिन्हें संभ्रांत वर्ग (elite) कहा जाता है। इनकी संख्या बहुत कम है। दूसरी ओर गरीबों, पिछड़ों और मात्र मजदूरी पर निर्भर लोगों की संख्या बहुत अधिक है। इन दोनों के बीच सामान्य वर्ग के लोग भी भारतीय समाज में मौजूद हैं जिनकी संख्या बहुत बड़ी है। इन्हें मध्यमवर्ग कहा जाता है।

इसके अलावा भारत में जनजातियों के लोग भी रहते हैं जिनकी अपनी एक विशिष्ट संस्कृति है। जिनकी पहचान तथा अनुवांशिक परंपरा भी दूसरों से बिल्कुल अलग है। इन्हें प्रायः आदिवासी कहा जाता है तथा उनकी संस्कृति को कबीलाई संस्कृति कहा जाता है। इन्हीं विविधताओं के कारण भारतीय समाज में अनेक प्रकार की सांस्कृतिक परंपराएं मौजूद हैं। जैसे- शास्त्रीय, लोक तथा कबीलाई संस्कृति आदि। इन सभी परंपराओं को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता हैः लघु अथवा सामान्य परंपराएं और व्यापक अथवा विशेष परंपराएं। सुप्रसिद्ध समाज विज्ञानी रॉबर्ट रेडफील्ड ने भारतीय परंपराओं को दो वर्गों में विभाजित किया है- साधारण परंपराएं तथा विशेष परंपराएं। साधारण परंपराओं में वे परंपराएं आती है जिनका लिखित स्वरूप नहीं मिलता, वे केवल एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हैं। विशेष परंपराएं वे परंपराएं है जिनका उल्लेख साहित्य तथा धार्मिक पुस्तकों में लिखित रूप में पाया जाता है। आधुनिक युग में ये परंपराएं भारतीय समाज में काफी हद तक टूटती दिखाई पड़ रही हैं। इसके अलावा विभिन्न परंपराओं के बीच परस्पर संबंधों में वृद्धि हुई है इससे इनके मूल स्वरूप काफी बदले हैं।

यद्यपि अब रोजगार, बाज़ार तथा संचार मीडिया व सोशल मीडिया के कारण भारत में अनेक प्रकार के परिवर्तन आ रहे हैं। स्पष्टतः भारतीय समाज दो वर्गों में विभाजित दिख रहा है, एक वर्ग में वे लोग आते हैं जो अधिक पढ़े लिखे हैं और उनका जीवन स्तर उच्च कोटि का है। दूसरे वर्ग में वे लोग आते हैं जो कम पढ़े लिखे हैं अथवा पढ़ लिख ही नहीं पाए हैं। वे मजदूरी आदि पर निर्भर करते हैं और उनका जीवन स्तर बहुत साधारण है। शिक्षा का समाज में बहुत महत्व होता है और वह जीवन स्तर को विशेष रूप से प्रभावित करती है। भारतीय समाज में जो विशेष रूप से शिक्षा प्राप्ति कर पा रहे हैं उनका वर्ग अलग है और जो सामान्य शिक्षा से ही काम चला लेते हैं उनका वर्ग अलग है। जो शिक्षा समाज के विकास में विशेष योगदान दे सकती है वहीं शिक्षा भारत में सांस्कृतिक एवं सामाजिक विभाजन का कारण बनी हुई दिख रही है। पियरी बोर्डयू (1986) इस स्थिति को सांस्कृतिक श्रेष्ठता (cultural capital) की संज्ञा देता है। भारतीय समाज में केवल धार्मिक आधार पर ही सांस्कृतिक विविधता की स्थिति नहीं है, अपितु भौगोलिक विभिन्नताओं के कारण भी भाषाओं, व्यवहारों, क्रियाकलापों, मनोरंजन के साधनों आदि की विविधताओं की वजह से भी भारत में सांस्कृतिक विविधता की स्थिति बनी हुई है।

7.14.2 सांस्कृतिक एकता एवं अखंडता

संस्कृति विशेषज्ञ एस सी दुबे का विचार है कि इतनी सारी व्यवस्थाओं के बावजूद भारतीय समाज की खूबसूरती यह है कि यहां विविधताओं में भी एकता समाहित है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है जिसका संविधान यह गारंटी देता है कि भारत में रहने वाले सभी लोगों की धार्मिक व सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखा जाएगा। संस्कृति के विभिन्न घटकों- धर्म, संगीत, साहित्य, कला, स्थापत्य कला, चित्रकला, नृत्य कला, नाट्य कला, रीति-रिवाज तथा परंपराएं एवं मान्यताएं सभी का भारत की अखंडता में योगदान है। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि भारतीय समाज के सामने समस्याएं नहीं आतीं। अनेक समस्याएं तो इसी दशक में सामने आई है जैसे सांस्कृतिक आंदोलन, धार्मिक कट्टरता, भाषाई संघर्ष, आंचलिकता आदि के आधार पर अनेक विवाद सामने आए हैं। भारत पर अनेक बार विदेशी आक्रमण हुए हैं। इससे यहां के समाज को अनेक प्रकार की आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक समस्याओं का सामना करना पड़ा है। इतनी सारी विसंगतियों व उथल-पुथल के बावजूद भारत के विकास में उदारवाद, निजीकरण तथा वैश्वीकरण का विशेष योगदान रहा है और भारतीय समाज कभी टूटा नहीं। यह कहा जा सकता है कि अनेकानेक विविधताओं, विरोधों व असंतोषों का सामना करते हुए भारत की विशेष संस्कृति ने भारत की एकता को आघात नहीं पहुंचने दिया है और यह साबित कर दिया है कि भारतीय संस्कृति भारतीय समाज की एक प्रबल धुरी है।

बोध प्रश्न

1) सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए जिम्मेदार विभिन्न कारणों का उल्लेख कीजिए? उत्तर केवल 4 पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) सांस्कृतिक विविधता से आप क्या समझते हैं? भारतीय समाज में इतना विविध क्यों है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7.15 सारांश

संस्कृति और समाज का आपस में गहरा संबंध है। समाज का स्वरूप व्यापक है और संस्कृति उसका एक अंश है। समाज व्यक्तियों तथा उनके अनेक समूहों व समुदायों से मिलकर बनता है। संस्कृति मनुष्यों की विभिन्न व्यवहार पद्धतियों, उनके समस्त क्रियाकलापों, विचारों, विश्वासों, दृष्टिकोणों तथा मनुष्य सुलभ सभी विशेषताओं से मिलकर बनती है। संस्कृति के बारे में दुनिया भर के विद्वानों ने अनेकानेक व तरह-तरह के विचार व्यक्त किए हैं क्योंकि विभिन्न समाजों की संस्कृतियां भिन्न-भिन्न होती हैं।

यद्यपि पशु पक्षी व अन्य जीव भी अपने वातावरण के प्रति अनुकूलता विकसित कर लेते हैं परंतु मनुष्यों की अनुकूलता विकसित करने की पद्धतियाँ पशुओं के तरीकों से बिल्कुल अलग है। यही कारण है कि जीव विज्ञान और संस्कृति एक दूसरे से बहुत अलग हैं।

संस्कृतियां भाषाओं के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाई जाती रहती हैं। संस्कृति का आदान-प्रदान रीति-रिवाज़ों, विश्वासों, मान्यताओं, मूल्यों, वर्जनाओं, नियमों, संस्थानों आदि के माध्यम से होता है। इस प्रकार संस्कृति सामाजिक है, प्रतीकात्मक है तथा गतिशील है। संस्कृति के विशिष्ट तत्व है भाषा, रीति-रिवाज, विश्वास, मान्यताएं, वर्जनाएं, मूल्य एवं नियम। सभी संस्कृतियों की आधारभूत संरचना होती है जैसे सांस्कृतिक लक्षण, सांस्कृतिक स्वरूप, सांस्कृतिक क्षेत्र आदि जो समाज में आपसी संपर्क को बढ़ावा देने में सहयोग करते हैं तथा सभ्यताओं को संस्कृति से अलग करते है। सभ्यता संस्कृति के बाद की अवस्था है।

संस्कृति गतिशील है और इसी लिए यह बदलती भी रहती है। इसके बावजूद संस्कृति के अंदर एक स्थायित्व भी है जो उसकी अलग पहचान को बनाए रखता है और उसके कारण एक संस्कृति लंबे समय तक दूसरी संस्कृति से अलग-थलग रह सकती है। जब संस्कृतियां एक दूसरे के संपर्क में आती हैं तो उनमें नवीनीकरण, सम्मिश्रण, विसरण तथा समीकरण आदि क्रियाओं के कारण परिवर्तन आते हैं।विविधिता का गुण भी संस्कृति के मूल में निहित रहता है। सांस्कृतिक विविधता की प्रवृत्ति पाषाण कालीन समाज में भी देखने को मिलती है और तथाकथित आधुनिक समाज में भी।

सांस्कृतिक विविधता की दृष्टि से देखें तो भारतीय समाज इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। सांस्कृतिक विविधता भारत को विश्व भर के देशों में विशेष स्थान प्रदान करती है। यह भारत की पहचान बन चुकी है। यहां यह उल्लेख करना भी जरूरी है कि हर समाज में एक प्रमुख संस्कृति होती है और उसके नीचे अनेक उपसंस्कृतियां तथा प्रतिरोधी संस्कृतियां भी अपना अस्तित्व बनाए रखती हैं। यदि मुख्य संस्कृति अपनी सह संस्कृतियों के साथ समरसता स्थापित करने में असफल हो जाती है तो समाज में सांस्कृतिक टकराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

हर संस्कृति की अपनी एक खास विशेषता होती है। मनुष्य का स्वभाव है कि जब वे दूसरी संस्कृतियों वाले लोगों के संपर्क में आते हैं तो अक्सर अपनी संस्कृति को दूसरों की संस्कृ ति से श्रेष्ठ मानते हैं। सांस्कृतिक विविधता तथा सांस्कृतिक विशेषता के बावजूद विभिन्न संस्कृतियों वाले लोग एक दूसरे के संपर्क में आते हैं और साथ-साथ रहते भी हैं, जिससे बहुसंस्कृतिवादी समाज का जन्म होता है। संस्कृतियों के कुछ मूल्य तथा उनकी कुछ विशेषताएं होती हैं जो समाज में सांस्कृतिक एकता एवं अखंडता की स्थिति स्थापित करने में सहयोग करती है।

आधुनिक वैश्वीकरण के युग में वैश्विक संस्कृति का प्रवाह होने लगा है और इसका परिणाम यह हो रहा है कि दुनिया के लगभग सभी देशों के लोग अपने सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को त्यागते हुए वैश्विक एवं मानवीय संस्कृति को स्वीकार करते जा रहे हैं।

7.16 सन्दर्भ

अब्राहम, एम.एफ. (2006). कंटेम्पररी सोशियोलॉजीः ऐन इंट्रोडक्शन तो कॉन्सेप्ट्स एंड थ्योरी. दिल्लीः ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

अप्पादुरई, ए (1996). मॉडर्निटी एट लार्जः कल्चरल डायमेंशन ऑफ़ ग्लोबलाइज़ेशन. लंदनः यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिनेसोता प्रेस।

बोर्दियू, पी (1986). द फॉर्म्स ऑफ़ कैपिटल इन इमरे सज़मान एंड टिमोथी कपोसी (एड्स) कल्चरल थ्योरीः ऐन अन्थोलॉजी।

बुरावय, एम., एंड लुकास, जे. (1992). द रेडियन पास्टः आइडियोलॉजी एंड रियलिटी इन हंगरीस रोड टू कैपिटलिज्म. यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।

डूब, एस. सी. (1990). इंडियन सोसाइटी. नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट।

दुर्खेइम, ई. (2003). अनोमिए. की आइडियाज इन सोशियोलॉजी, 22-26।

ऐरसोव, बी.एस., एंड सिंह, व्हाई. (1991). द सोशियोलॉजी ऑफ़ कल्चर. प्रोग्रेस पब्लिशर्स।

ग्राम्स्की, ऐ, एंड होअरे, क्यू. (1971). सेलेक्शंस फ्रॉम द प्रिजन नोटबुक्स (वॉल. 294). लंदनः लॉरेंस एंड विशारत।

गिड्डेन्स, ऐ.,एंड सुत्तोंन, पी. डब्लू. (2014). एसेंशियल कॉन्सेप्ट्स इन सोशियोलॉजी. पॉलिटी प्रेस।

ग्रीन, ए. डब्लू (1964). सोशियोलॉजी; ऐन एनालिसिस ऑफ़ लाइफ इन मॉडर्न सोसाइटी. मक्ग्रॉ-हिल।

हरलामबोस, म. एच. घ्म एंड हेल्ड, आर.(2006). सोशियोलॉजीः थीम्स एंड पर्सपेक्टिव्स. नई दिल्लीः ओयुपी।

जॉनसन, एच. एम. (1960). सोशियोलॉजीः ए सिस्टेमेटिक इंट्रोडक्शन. अलाइड पब्लिशर्स।

जोसफ, ऐस.(1998). इंटररॉगटिंग कल्चर क्रिटिकल पर्सपेक्टिव्स ऑन कंटेम्पररी सोशल थ्योरी, सेजः नई दिल्ली।

कैमलिका, विल (2012). मल्टीकल्चरलिस्मः सक्सेस, फेलियर एंड द फ्यूचर. यूरोपः माइग्रेशन पालिसी इंस्टिट्यूट।

लिंटन, आर (1955). द ट्री ऑफ़ कल्चर. न्यू यॉर्कः अल्फ्रेड ए. क्नोप्फ़।

मजूमदार, डी. ऐन., एंड मदन, टी. ऐन. (2008). ऐन इंट्रोडक्शन टू सोशल एंथ्रोपोलॉजी. नॉएडाः मयूर पेपरबैक्स।

मेरटोन, आर. के. (1996). ऑन सोशल स्ट्रक्चर एंड साइंस. यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।

मुरडॉक, जी. पी. (1965). कल्चर एंड सोसाइटीः ट्वेंटी-फोर एसेज. यूनिवर्सिटी ऑफ़ पिट्सबर्ग प्रेस।

ऑगबर्न, डब्ल्यू.एफ़ (1966). सोशल चेंज विद रेस्पेक्ट टू कल्चर एंड ओरिजिनल नेचर. ऑक्सफ़ोर्ड इंग्लैंडः डेल्टा बुक्स।

ऑगबर्न, डब्ल्यू. एफ़ एंड निमकॉफ, एम. घ्फ़. (1947). ए हैंडबुक ऑफ़ सोशियोलॉजी।

पारसंस, टी. (1972). कल्चर एंड सोशल सिस्टम रीविसिटेड. सोशल साइंस क्वार्टरली, 253-266 रोबर्ट, एस. एल., सुथरलैंड, जे. एल. डब्ल्यू., एंड मिल्टन, ए. एम. (1961). इंट्रोडक्टरी सोशियोलॉजी। स्कैफेर, आर. टी., एंड लेम, आर. (2000). सोशियोलॉजीः ए ब्रीफ इंट्रोडक्शन. मक्ग्रॉ-हिल.।

सेन, ऐस. (2007). ग्लोबलाइजेशन एंड डेवलपमेंट. न्यू दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट।

समनेर, डब्ल्यू. जी. (2013). फोल्कवैस-ए स्टडी ऑफ़ द सोशियोलॉजिकल इम्पोर्टेंस ऑफ़ उसगेस, मैनर्स, कस्टम्स, मोर्स एंड मॉरल्स. रीड बुक्स लिमिटेड।

तै, ई. (2003). रिथिंकिंग कल्चर, नेशनल कल्चर, एंड जैपनीज़ कल्चर. जैपनीज़ लैंग्वेज एंड लिटरेचर, 37(1), 1-26।

टॉयलर, एडवर्ड बी. (1871). प्रिमिटिव कल्चरः रिसर्चेस इनटू द डेवलपमेंट ऑफ़ माइथोलॉजी, फिलॉसोफी, रिलिजन, लैंग्वेज, आर्ट एंड कस्टम. लंदनः जॉन मुर्रे, अलबेमर्ले स्ट्रीटद्य।

वॉर्स्ली, पीटर (1970) इंट्रोडूसिंग सोशियोलॉजी. पेंगुइन बुक्सः यू.एस.ए.।

इकाई 8 सामाजिक समूह और समुदाय*

संरचना

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 समुदाय की परिभाषाएं

8.3 समुदाय की विशेषताएं

8.4 सामुदायिक भावना के तत्व

8.5 सामुदाय और संघ

8.6 सामाजिक समूह की परिभाषा

8.7 समूह वर्गीकरण के आधार

8.7.1 प्राथमिक और गौण समूह

8.7.2 जेमिन्सचाफ्ट और जेसेलशाफ्ट

8.7.3 आतंरिक समूह और बाह्य समूह

8.7.4 सन्दर्भ समूह

8.8 सामाजिक समूह और सामुदायिक मतभेद

8.9 सारांश

8.10 संदर्भ

8.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप जानेंगे :

- समुदाय की परिभाषा देना;
- समुदाय के आधार और तत्वों की पहचान करना;
- समुदाय और संघ के बीच संबंधों का वर्णन करना;
- समुदाय की विशेषताओं पर चर्चा करना;
- सामाजिक समूहों और उनके विभिन्न वर्गीकरणों का वर्णन करना;
- सामाजिक समूह की प्रमुख अवधारणा को समझना;
- सामाजिक समूहों की प्रकृति और प्रकारों का वर्णन करना;
- सामाजिक समूहों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करना;

8.1 प्रस्तावना

जहां भी किसी समूह के सदस्य छोटे या बड़े इस तरह से रहते हैं कि वे इस या उस हित में नहीं बल्कि आम जीवन की बुनियादी स्थितियों को साझा करते हैं, हम उस समूह को एक समुदाय कहते हैं। एक समुदाय अनिवार्य रूप से सामाजिक जीवन का एक क्षेत्र है। यह कुछ हद तक सामाजिक समन्वय द्वारा चिह्नित किया जाता है। इस प्रकार, समुदाय अंतः

*रुक्मिणी दत्ता,शोधार्थी,इग्नू

स्थापित संबंधों का एक चक्र है। एक समुदाय की सीमाओं के भीतर सदस्य अपने आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक और अन्य गतिविधियों को ले जा सकते हैं। इसलिए समुदाय एक निर्धारित सामाजिक स्थान के भीतर सामाजिक जीवन का कुल संगठन है; जैसे कि गांव, जनजाति, शहर, जिला।

समूह का अर्थ उन मनुष्यों का संग्रह है जिनके पूर्ण एक दूसरे के साथ सामाजिक संबंध हैं। सामाजिक संबंध में पारस्परिकता के साथ-साथ पारस्परिकता के बारे में जागरूकता शामिल है। इस मानदंड के आधार पर, आबादी के उन हिस्सों में से कई जिन्हें कभी-कभी सामाजिक समूह नाम दिया जाता है, वे नहीं भी हो सकते हैं। सामान्य समझ के लिए हम दो या दो से अधिक व्यक्तियों के किसी भी संग्रह को समूह मानते हैं, जिनके सदस्य एक दूसरे के साथ व्यक्तिगत तरीके से पहचान करते हैं और बातचीत करते हैं। कुछ समूहों का छोटा आकार (अक्सर 15-20 से अधिक लोग) सभी सदस्यों को साझा मूल्यों और मानदंडों की सहायता से संपर्क करने और बातचीत करने में सक्षम बनाता है। नतीजतन, समूह के सदस्य अपने बीच और समूह के साथ मजबूत अंतर-व्यक्तिगत बंधन महसूस करते हैं। समकालीन समाजों में अनगिनत प्रकार के समूह हैं, जिनमें परिवार, दोस्तों के गुट, कार्य दल, किशोर गिरोह, खेल दल, जूरी, रैप समूह और सभी प्रकार की समितियां शामिल हैं। हम सभी ऐसे कई सामाजिक समूहों के सदस्य हैं जो हमारी दैनिक गतिविधियों को प्रभावित या आकार देते हैं। परिवार हमारे अधिकांश जीवन में एक अत्यंत महत्वपूर्ण समूह है, क्योंकि प्रेम और स्नेह, प्रतिबद्धताएं, विवाह और संबंधों के बंधन हमें परिवार के भीतर निकटता से जोड़ते हैं। यहां तक कि अगर हम भी अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ नहीं रहते हैं या दैनिक आधार पर उनके साथ बातचीत नहीं करते हैं, तो भी हम आम तौर पर पत्र, फोन कॉल और मिलने के माध्यम से इन पारस्परिक संबंधों को बनाए रखते हैं। समूह को प्राथमिक या गौण के रूप में वर्गीकृत करना उनके सामाजिक संबंधों की गहराई और समावेश को इंगित करने का एक सुविधाजनक तरीका है।

8.2 समुदाय की परिभाषाएं

1) बोगार्डस के मुताबिक, समुदाय एक सामाजिक समूह है जिसमें 'हम अपनापन महसूस करते हैं' और 'किसी दिए गए क्षेत्र में रहते हैं।

2) किंग्सले डेविस के लिए, समुदाय सबसे छोटा क्षेत्रीय समूह है जो सामाजिक जीवन के सम्मिलित कर सकता है।

3) गिन्सबर्ग समुदाय को सामाजिक जीवन के एक समूह के रूप में परिभाषित करते हैं जिसमें सभी अनंत विविधता और संबंधों की जटिलता शामिल होती है, जो उस सामान्य जीवन के परिणामस्वरूप होती है।

8.3 समुदाय की विशेषताएँ

सभी समुदायों को आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता नहीं है। कुछ समुदाय सभी समावेशी और दूसरों से स्वतंत्र हैं। आदिम लोगों में, सौ से अधिक व्यक्तियों के कुछ समुदाय, (उदाहरणः यूएसए की युरोक जनजाति) जो लगभग अलग-थलग हैं। लेकिन आधुनिक समुदाय, विशेष रूप से बड़े समूह बहुत कम आत्म-निहित हैं। रिश्तेदारी और पारिवारिक संबंधों के बजाय आर्थिक और राजनीतिक निर्भरता, हमारे आधुनिक समुदायों की एक प्रमुख विशेषता है। इसके अलावा, एक समुदाय में निम्नलिखित विशेषताएं हैंः

1) निश्चित क्षेत्र

2) जनसंख्या

3) सामाजिक संबंध

4) सांस्कृतिक समानता

5) हम अनुभव

6) संगठित अन्तःक्रिया

महान और छोटे समुदाय

राष्ट्र और विश्व के आयामों तक समुदाय के विस्तार के बावजूद, छोटे समुदाय अभी भी व्यवहार्य इकाइयों के रूप में बने हुए हैं। राष्ट्र या विश्व राज्य गाँव या पड़ोस को खत्म नहीं करते हैं, हालाँकि उनके चरित्र को बदला जा सकता है। सामाजिक प्राणी के रूप में, हमें समुदाय के छोटे और साथ ही बड़े क्षेत्रों की आवश्यकता है। महान समुदाय हमें अवसर, स्थिरता, अर्थव्यवस्था, समृद्ध विविध संस्कृति के प्रति निरंतर प्रोत्साहित करती है। लेकिन छोटे समुदाय में रहते हुए हम निकट, अधिक अंतरंग संतुष्टि पाते हैं। बड़ा समुदाय शांति और सुरक्षा, देशभक्ति और कभी-कभी युद्ध, ऑटोमोबाइल और रेडियो प्रदान करता है। छोटा समुदाय दोस्त और दोस्ती, गपशप और सामना करने के लिए प्रतिद्वंद्विता, स्थानीय गर्व और निवास प्रदान करता है। दोनों पूर्ण जीवन प्रक्रिया के लिए आवश्यक हैं।

समुदाय के मामले

एक समुदाय का चिह्न यह है कि किसी का जीवन उसके भीतर पूर्ण रूप से व्यतीत हो सकता है। कोई व्यक्ति व्यावसायिक संगठन या एक चर्च के भीतर पूरी तरह से नहीं रह सकता है; एक जनजाति या एक शहर के भीतर पूरी तरह से रह सकते हैं। तब समुदाय की बुनियादी कसौटी यह है कि किसी के सभी सामाजिक संबंध इसके भीतर पाए जा सकते हैं। समुदाय तब सामाजिक जीवन का एक क्षेत्र है जो कुछ हद तक सामाजिक सुसंगतता द्वारा चिह्नित है। समुदाय के आधार हैं। 1) स्थानीयता और 2) सामुदायिक भावना।

1) **स्थानीयता:** एक समुदाय हमेशा एक भौगोलिक क्षेत्र पर कब्जा कर लेता है। स्थानीयता समुदाय का भौतिक आधार है। उदाहरण के लिए, एक घुमंतू समुदाय, जिप्सी का एक बैंड, के पास स्थानीय किंतु परिवर्तित निवास स्थान है। हर क्षण, इसके सदस्य पृथ्वी की सतह पर एक निश्चित स्थान पर एक साथ रहते हैं। अधिकांश समुदाय बस गए हैं और भौतिक निकटता से एकजुटता का एक मजबूत बंधन प्राप्त करते हैं। लोगों का एक समूह केवल तब एक समुदाय बनाता है जब वे एक निश्चित इलाके में निवास करना शुरू करते हैं। समाज के विपरीत, एक समुदाय, एक हद तक, स्थानीय रूप से सीमित है। साथ रहने से लोगों को सामाजिक संपर्क विकसित करने में सुविधा होती है, सुरक्षा, संरक्षा और संरक्षण मिलता है। अधिकांश समुदाय बसते हैं और अपने इलाके की स्थितियों से एकजुटता का मजबूत बंधन बनाते हैं। हालाँकि, कुछ हद तक इस स्थानीय बंधन को आधुनिक दुनिया में संचार की फैली सुविधाओं से कमजोर कर दिया गया है; यह मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी ढांचे के प्रवेश से विशेष रूप से स्पष्ट है। लेकिन संचार का विस्तार स्वयं एक बड़े किंतु क्षेत्रीय समुदाय की शर्त है।

2) **सामुदायिक भावना:** विशिष्ट स्थानीय क्षेत्रों में रहने वाले लोग जिनमें सामाजिक सामंजस्य की कमी होती है, उन्हें आज की दुनिया में सामुदायिक चरित्र प्रदान करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, एक वार्ड या जिले या बड़े शहर के निवासियों को क्षेत्र के साथ जागरूक पहचान स्थापित करने के लिए पर्याप्त संपर्क या सामान्य हितों की कमी हो सकती है। ऐसा 'पड़ोस' एक समुदाय नहीं है क्योंकि इसमें अपनेपन की

भावना नहीं होती है - इसमें सामुदायिक भावना का अभाव होता है। स्थानीयता हालांकि एक आवश्यक शर्त है, किंतु एक समुदाय बनाने के लिए पर्याप्त नहीं है। एक समुदाय निस्संदेह एक सामान्य जीवन है। सामुदायिक भावना का अर्थ है एक साथ होने की भावना। सदस्यों में 'हम-भावना' विकसित होती है। इसका मतलब है समूह के साथ एक तरह की पहचान। पहचान की भावना के बिना, जागरूकता की भावना, जीवन जीने की भावना और जीवन में कुछ सामान्य हितों को साझा किए बिना कोई समुदाय नहीं हो सकता है।

8.4 सामुदायिक भावना के तत्व

1) **हम-भावनाः** यह वह भावना है जो पुरुषों को दूसरों के साथ खुद की पहचान करने के लिए प्रेरित करती है ताकि जब वे "हम" कहें तो भेद का कोई विचार नहीं है और जब वे कहते हैं "हमारा" तब विभाजन का विचार नहीं आता है। यह 'हम-भावना' पायी जाती है जहां पुरुषों की समान रुचि होती है, और इस प्रकार पूरे समूह के जीवन में, लेकिन यह कहीं अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट होता है जहाँ क्षेत्रीय समुदाय में जहाँ रुचि होती है।

2) **भूमिका की भावनाः** यह भावना व्यक्ति की ओर से पूरे जीवन में अधीनता को सम्मिलित करती है, जीवन के दैनिक अनुशासन में प्रशिक्षण और अभ्यारस से उत्पन्न होती है, जिससे कि हर व्यरक्ति को लगता है कि उसे एक भूमिका निभानी है, जिसे पूरा करने का उसका अपना कार्य है। सामाजिक परिदृश्य के पारस्परिक आदान-प्रदान में अपनी भूमिका निभानी पड़ती है।

3) **निर्भरता की भावनाः** यह समुदाय पर निर्भरता की व्यक्तिगत भावना को अपने जीवन की एक आवश्यक शर्त के रूप में संदर्भित करता है। इसमें शारीरिक निर्भरता दोनों शामिल हैं, क्योंकि उसकी/उसका भौतिक जरूरत उसके पूरा करता हो और एक मनोवैज्ञानिक निर्भरता हो, क्योंकि समुदाय एक बड़ा "घर" है जो उसे/उसके लिए जीवन निर्वाह करता है, उसे भी आत्मसात करते हुए जिसमें वह कम से कम परिचित है, अगर यह पूरी तरह से उसके जीवन के अनुकूल नहीं भी है। समुदाय अकेलेपन और डर के लिए आश्रय है, जो उस व्यक्ति अलगाव के साथ होता है जो हमारे आधुनिक जीवन की विशेषता है।

समुदाय का मानदंड

हम, ज्यादातर, एक बहुत छोटे समुदाय के सदस्य हैं, हालांकि हम बड़े शहरों में रह सकते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे हितों को एक संकीर्ण क्षेत्र में काट दिया जाता है। इसके विपरीत, हम एक गाँव में रह सकते हैं और फिर भी एक ऐसे समुदाय से संबंधित हो सकता हैं जो हमारी सभ्यता के पूरे क्षेत्र में है या कि व्यापक है। किसी भी सभ्य समुदाय, जैसा कि मैकाइवर बताते हैं, चारों ओर 'दीवारें' नहीं होती जो इसे पूरी तरह से काट देती हैं, जो भी इस देश के शासकों द्वारा तैयार किया जा सकता है। समुदाय बड़े समुदायों के भीतर मौजूद होती हैंः एक क्षेत्र के भीतर शहर, एक राष्ट्र के भीतर क्षेत्र और विश्व समुदाय के भीतर राष्ट्र जो फिर से विकास की प्रक्रिया में है।

एक समुदाय तब सामाजिक जीवन का एक क्षेत्र है जो कुछ हद तक सामाजिक सुसंगतता द्वारा चिह्नित है। मैकाइवर के अनुसार, एक समुदाय का चिह्न यह है कि किसी का जीवन उसके भीतर पूर्णतः जीवंत हो सकता है। एक चर्च के एक व्यावसायिक संगठन के भीतर

पूरी तरह से पंक्तिबद्ध नहीं किया जा सकता है; कोई पूरी तरह से एक जनजाति या एक शहर के भीतर ही रह सकता है।।

कुछ सवाल उठ सकते हैं जैसे, कुछ हालत में कुछ लोग लंबे समय तक इकट्ठा होते हैं, फिर इस सभा को समुदाय कहा जाएगा या नहीं? ऊपर दिए गए शर्त के बारे में प्रश्नों के तीन सेट दिए गए हैं। इन सवालों के बीच पहले दो को सकारात्मक जवाब मिलता है जबकि आखिरी को नकारात्मक -

1) क्या हम अपने अर्थ में मठ या कॉन्वेंट या किसी जेल को समुदाय कहेंगे? ये प्रतिष्ठान क्षेत्रीय रूप से आधारित हैं और वे वास्तव में सामाजिक जीवन के क्षेत्र हैं। हालांकि, कई, निवासियों के कार्यों की सीमित सीमा के कारण उन्हें सामुदायिक स्थिति से वंचित करेंगे। लेकिन क्या मानवीय कार्य हमेशा एक समुदाय के स्वभाव से सीमित होते हैं? हमें इस प्रश्न का उत्तर सकारात्मक रूप में देना चाहिए।

2) क्या हम अप्रवासी समूहों को समुदाय कहेंगे , जो बड़े अमेरिकी शहरों के बीच में अपने स्वयं के रीति-रिवाजों को पालते हैं और अपनी भाषा, बोलते हैं? मैकाइवर के अनुसार ऐसे समूह स्पष्ट रूप से आवश्यकताओं के अधिकारी हैं।

3) क्या हम सामाजिक जाति को जिसके सदस्य अपने साथी नागरिकों को अधिक घनिष्ठ सामाजिक संबंधों, से बाहर करते हैं, समुदाय कहेंगे? यहां नकारात्मक उत्तर अधिक उपयुक्त है, क्योंकि हमारी परिभाषा को पूरा करने के लिए, समुदाय समूह को स्वयं किसी विशेष स्थान को ग्रहण करना चाहिए। एक सामाजिक जाति में सामाजिक सामंजस्य होता है, इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन इसमें समुदाय के क्षेत्रीय आधार का अभाव है।

निष्कर्ष के रूप में, समुदाय को निम्नलिखित तरीकों से परिभाषित किया गया है -

क) लोगों का समूह।

ख) एक भौगोलिक क्षेत्र के भीतर।

ग) विशेष और अन्योन्याश्रित कार्यों में श्रम के विभाजन के साथ।

घ) एक सामान्य संस्कृति और एक सामाजिक व्यवस्था के साथ जो उनकी गतिविधियों का आयोजन करती है।

ङ) जिनके सदस्य अपनी एकता के प्रति सचेत है और समुदाय से संबंधित हैं।

च) जिसके सदस्य संगठित रूप से कार्य कर सकते हैं।

8.5 समुदाय और संघ

सामाजिक समूहों के सबसे महत्वपूर्ण विभाजनों में से एक संघ है। एक संघ एक विशिष्ट उद्देश्य या सीमित संख्या में उद्देश्यों के लिए एकजुट लोगों का एक समूह है। ऐसी सेना या स्कूल है, जिसका उद्देश्य राष्ट्र की रक्षा करना या ज्ञान प्रदान करना है।

दूसरी ओर एक समुदाय, एक स्थायी सामाजिक समूह है जो किसी प्राप्ति या उद्देश्य की समग्रता को गले लगाता है। इसके विपरीत इसके सदस्यों का जीवन पूरी तरह से उसी में रहता है; यहां उन्हें अपने सभी सामाजिक संबंधों का पता चलता है, जबकि इसके बाहर बहुत कम, लेकिन उसकी जरूरत होती है।

यह तय करने का कार्य कि क्या कोई समूह एक समुदाय है या एक संघ हमेशा आसान नहीं होता है। एक संघ के लक्ष्य की बहुलता जितनी अधिक होती है, वह समुदाय की अवधारणा के निकट आती है, हालांकि वह वहाँ तक कभी नहीं पहुंच सकती है। इस प्रकार भारत में तथाकथित समुदाय, जिन्होंने सांप्रदायिकता की समस्या को जन्म दिया, समाजशास्त्रीय अर्थों में समुदाय नहीं हैं। वे बल्कि जातीय समूह हैं जिनके भीतर कुछ सामाजिक और धार्मिक हित संतुष्ट होते हैं; लेकिन एक दूसरे पर और बड़े प्रांतीय या राष्ट्रीय इकाई पर इन समूहों की निर्भरता के कारण, वे एक समुदाय की परिभाषा को पूरा नहीं कर सकते हैं। उसी कारण से एक धार्मिक समुदाय या एक आश्रमवासी को पूरी तरह से एक समुदाय कहा जाता है, हालांकि यह काफी हद तक आत्म-निहित है। अभी तक संयुक्त राज्य अमेरिका के यूटोपियन समुदायों में से कई आगामी काल में तथा कुछ भारतीय गांवों को वास्तविक समुदाय के रूप में नहीं माना जा सकता है क्योंकि उनके निवासी बाकी लोगों से अलग एक साधारण आत्म-निहित जीवन जीते हैं।

बोध प्रश्न 1

1) समुदाय की अवधारणा को परिभाषित करें। सामुदायिक भावनाओं के विभिन्न तत्वों की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

2) समुदाय की विशेषताएँ क्या हैं? उदाहरणों के साथ इसके विभिन्न आधारों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) समुदाय और संघ के बीच संक्षिप्त में अंतर बतायें।

.....

.....

.....

.....

4) महान और छोटे समुदायों के बुनियादी पहलुओं की व्याख्या करें

.....

.....

.....

.....

8.6 सामाजिक समूह की परिभाषा

सामाजिक समूह की परिभाषा

1) एल्बियन स्मॉल एक समूह को किसी भी संख्या में, बड़े या छोटे लोगों के रूप में परिभाषित करता है, जिनके बीच ऐसे संबंधों की पाए गए है जिन्हें कि उन्हें एक साथ विचार किया होगा।

2) बोगार्डस परिभाषित करता है 'एक सामाजिक समूह को दो या दो से अधिक व्यक्तियों के रूप में विचार किया जा सकता है, जिनके कुछ सामान्य लक्ष्य हैं, जो एक-दूसरे को प्रेरित करते हैं, जिनकी समान निष्ठा है और वे समान गतिविधियों में भाग लेते हैं।'

3) ग्रीन अर्नोल्ड परिभाषित करता है 'समूह व्यक्तियों का एक जमाव है जो समय के साथ बना रहता है जिसमें एक या एक से अधिक हित और गतिविधियां होती हैं और जो संगठित होते हैं।'

4) विलियम्स परिभाषित करता है 'एक सामाजिक समूह अंतर-संबंधित भूमिका निभाने वाले लोगों का एक समुच्चय है और स्वयं या अन्य लोगों द्वारा अन्तःक्रिया की इकाई के रूप में मान्यता प्राप्त है। '

8.7 समूह वर्गीकरण के आधार

समाजशास्त्र मानव समूहों को विश्लेषण की अपनी प्राथमिक इकाई मानता है। यदि उन आधारों का वर्णन करने के लिए कहा जाए जिन पर सामाजिक समूह मौजूद हैं, तो विभिन्न प्रकार के समूहों के लिए अलग-अलग उत्तर मौजूद हो सकते हैं। ऐसे कई मानदंड हैं जिनके द्वारा सामाजिक समूहों को वर्गीकृत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, उनके हितों की प्रकृति, संगठन का स्तर, उनकी स्थायित्व की सीमा, सदस्यों के बीच संपर्क का प्रकार और इस तरह की चीजें शामिल हैं। गिंसबर्ग भी यही विचार रखते हैं और कहते हैं,' समूहों को कई तरह से आकार और स्थानिक वितरण के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है, रिश्तों की स्थायीता और समावेशिता जिस पर वे बने रहते हैं, गठन का तरीका, संगठन का प्रकार।

इस प्रकार, जबकि कुछ समाजशास्त्री समूहों के वर्गीकरण के लिए एक सरल आधार देते हैं, अन्य लोगों ने एक विस्तृत वर्गीकरण योजना दी है।

जॉर्ज सिमेल ने समूहों के वर्गीकरण के लिए आकार को कसौटी माना। चूंकि अपनी सामाजिक कंडीशनिंग के साथ व्यक्ति, समाजशास्त्र की सबसे प्रारंभिक इकाई है, सिम्मेल ने खानाबदोश के साथ शुरू किया। उन्होंने एकल व्यक्ति को समूह के रिश्तों के केंद्र के रूप में लिया और 'युग्म' और 'त्रय और एक तरफ अन्य छोटी सामूहिकता और दूसरी तरफ बड़े पैमाने पर समूह के माध्यम से अपने विश्लेषण को आगे बढ़ाया।

ड्वाइट सैंडरसन समूहों के वर्गीकरण के आधार के रूप में संरचना को लेते हैं। वह उन्हें अनैच्छिक, स्वैच्छिक और प्रतिनिधि समूहों में वर्गीकृत करते हैं।

सी.एच कुले समूहों को प्रकार के आधार पर, प्राथमिक समूह और द्वितीयक समूह में विभाजित करते हैं।

एफ.एच. गिडिंग्स संबंधों के प्रकार के आधार पर समूहों को आनुवांशिक या समूह में वर्गीकृत करते हैं।

डब्ल्यू.जी. सुमेर प्रकार की चेतना के आधार पर इन-ग्रुप और आउट-ग्रुप के बीच अंतर करते हैं।

जॉर्जहासेन समूहों को अन्य समूहों उनके संबंधों के आधार पर गैर-सामाजिक, छद्म सामाजिक या समर्थक-सामाजिक में वर्गीकृत करते हैं।

मिलर सामाजिक समूहों को क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर समूहों में विभाजित करते हैं।

8.7.1 प्राथमिक समूह और गौण समूह

प्राथमिक समूह 'शब्द' को 1909 में अपनी पुस्तक 'सोशल ऑर्गनाइजेशन' में चार्ल्स होर्टन कुले (1864-1929) ने बनाया था। एक प्राथमिक समूह अपेक्षाकृत छोटा होता है। इस समूह के सदस्यों में आम तौर पर आपस मे आमने सामने का संपर्क होता है। उनके पास अंतरंग और सहकारी संबंध होने के साथ-साथ मजबूत निष्ठा भी होती है। उन सदस्यों के बीच संबंध अपने आप में लक्ष्य होते हैं क्योंकि सदस्य केवल एक दूसरे के साथ जुड़कर आनंद प्राप्त करते हैं। उनकी धारणा मे कोई दूसरा लक्ष्य नहीं होता है। प्राथमिक समूह का अंत तब होता है जब एक या एक से अधिक सदस्य इसे छोड़ देते हैं, उन्हें दूसरों द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है। प्राथमिक समूह का सबसे अच्छा उदाहरण परिवार या दोस्ती या सहकर्मी समूह है।

गौण समूहः कई मामलों में गौण समूह प्राथमिक समूहों के विपरीत हैं। जैसा कि वे सामान्य बड़े समूहों में होते हैं, गौण समूहों के सदस्य एक दूसरे के साथ अपेक्षाकृत सीमित, औपचारिक और अवैयक्तिक संबंध बनाए रखते हैं। द्वितीयक या गौण समूह विशिष्ट या विशिष्ट रुचि समूह हैं। यह आम तौर पर श्रम का एक अच्छी तरह से परिभाषित विभाजन है। द्वितीयक समूह इस बात पर ध्यान दिए बिना जारी रख सकते हैं कि इसके मूल सदस्य इसके सदस्य हैं या नहीं। एक फुटबॉल टीम, एक संगीत क्लब, एक कारखाना, एक सेना आदि गौण समूहों के उदाहरण हैं।

प्राथमिक और गौण समूह के बीच अंतर

1) प्राथमिक समूह का आकार छोटा है; माध्यमिक समूह बड़ा है।

2) एक प्राथमिक समूह के सदस्यों के बीच एक व्यक्तिगत और अंतरंग संबंध मौजूद होता है जबकि द्वितीयक समूह के सदस्यों के बीच संबंध अपेक्षाकृत अवैयक्तिक है।

3) एक प्राथमिक समूह के सदस्यों के बीच आमने सामने का संचार संचार होता है, जबकि द्वितीयक समूह में सदस्यों के पास आमने-सामने का संचार बहुत कम होता है।

4) प्राथमिक समूह के सदस्यों में 'हम' की भावना के साथ निष्ठा की एक मजबूत भावना होती है लेकिन एक माध्यमिक समूह के मामले में गुमनामी सर्वाधिक होती है।

5) प्राथमिक समूह में अनौपचारिकता सबसे आम है। समूह में आमतौर पर एक नाम, अधिकारी या नियमित बैठक का स्थान नहीं होता है, लेकिन माध्यमिक समूह में ऐसी औपचारिकता होती है।

6) प्राथमिक समूह संबंधोन्मुखी होते हैं लेकिन माध्यमिक समूह लक्ष्य उन्मुख होते हैं।

7) प्राथमिक समूहों में, संबंध समावेशी होते हैं और इसीलिए एक व्यक्ति की अनुपस्थिति दूसरे द्वारा पूरी नहीं की जा सकती है। संबंधों की विशिष्टता माध्यमिक समूहों में नहीं पाई जाती है और इसलिए एक व्यक्ति को दूसरे के लिए बहुत आसानी से प्रतिस्थापित किया जा सकता है।

8) प्राथमिक समूहों में प्रेम, सहानुभूति, पारस्परिक सहायता आदि जैसे गुण पनपते हैं जबकि माध्यमिक समूह स्वार्थ और व्यक्तिवाद को बढ़ावा देते हैं।

9) समूह के निर्णय प्राथमिक समूह में पारंपरिक और गैर-तर्कसंगत हैं, जबकि माध्यमिक समूह के निर्णय अधिक तर्कसंगत हैं और दक्षता पर जोर दिया जाता है।

10) प्राथमिक समूह में किसी व्यक्ति की स्थिति उसके जन्म-क्रम और आयु के अनुसार तय की जाती है जबकि यह माध्यमिक समूहों में भूमिका के अनुसार तय की जाती है।

11) प्राथमिक समूह समय और महत्व में प्राथमिक हैं। जैसे, वे समाज की आधारशिला हैं, जबकि माध्यमिक समूह हमेशा गौड़ होते हैं।

आधुनिक दुनिया में प्राथमिक और गौण संबंध

आदिम लोगों और गांवों और छोटे शहरों के समुदायों में, व्यक्तियों को प्राथमिक बंधन द्वारा अधिकांश भाग के लिए एक साथ जोड़ा जाता है - समूह के अन्य सदस्यों को व्यक्तियों के रूप में जाना जाता है, न कि केवल औपचारिक क्रम में पदों के प्रतिनिधियों के रूप में। इस प्रकार, उनके प्रशिक्षुओं के लिए मध्ययुगीन संघ के सदस्य "बॉस (मालिक)" से अधिक था; वह एक परामर्शदाता, अनुशासक, अध्यापक, दोस्त (या दुश्मन) वगैरह था।

कार्य समूह

कुछ समूह न तो स्पष्ट रूप से प्राथमिक हैं और न ही माध्यमिक हैं, बल्कि प्रत्येक की कुछ विशेषताओं के साथ मध्यवर्ती हैं। टास्क समूह (या कार्य उन्मुख समूह) कुछ कार्य या कार्य के सेट करने के लिए गठित छोटे समूह हैं (निक्सन, 1979)। इनमें कार्य दल, समितियां और कई तरह के पैनल शामिल हैं। कुछ विद्वान कार्य समूह को हमारे समाज के समूह का सबसे सामान्य रूप मानते हैं (फिशर, 1980)। टास्क समूह छोटे होने के नाते प्राथमिक समूहों से मिलता-जुलता है, केवल छोटे समूह ही कुशल कार्य इकाइयाँ हैं। यही कारण है कि बड़ी श्रमिक सेनाएं छोटी टीमों में टूट जाती हैं। टास्क समूह भी उस बातचीत में प्राथमिक समूहों से मिलता-जुलता है जो आम तौर पर आमने-सामने और अनौपचारिक होते हैं। लेकिन कार्य समूह संपर्क अवैयक्तिक, खंडीय और उपयोगितावादी हैं। सदस्य एक दूसरे के रूप में एक व्यक्ति में अधिक रुचि नहीं रखते हैं और सभी व्यक्तियों के साथ संबंध नहीं रखते हैं, लेकिन सिर्फ कार्य समूह में काम के प्रदर्शन के साथ संबंध रखते हैं।

8.7.2 जेमिन्शाफ्ट और जेसलशाफ्ट

कुछ हद तक प्राथमिक और गौण समूहों की अवधारणा के समान हैं, फर्डिनेंड टोनीज़ (1887) द्वारा विकसित जेमिन्शाफ्ट और गेज़्लेसचफ्ट की अवधारणाएं हैं। ये दो शब्द मोटे तौर पर 'समुदाय' और 'समाज' के रूप में अनुवाद किए जाते हैं। जेमेन्शाफ्ट एक सामाजिक प्रणाली है जिसमें अधिकांश रिश्ते व्यक्तिगत या पारंपरिक होते हैं या अक्सर दोनों होते हैं। एक अच्छा उदाहरण सामंती जमींदारी है, एक छोटा समुदाय व्यक्तिगत संबंधों और स्थिति दायित्व के संयोजन के साथ नियंत्रित होता है। यद्यपि महान असमानता मौजूद होती है, जागीर का स्वामी व्यक्तिगत रूप से अपने विषयों के लिए जाना जाता था, जबकि उसके लिए उसके कर्तव्यों को उनके कल्याण के लिए उनके दायित्व द्वारा संतुलित किया गया था।

जेसल्शाफ्ट में परंपरा के समाज को अनुबंध के समाज के साथ बदल दिया जाता है। इस समाज में न तो व्यक्तिगत लगाव और न ही पारंपरिक अधिकार और कर्तव्य महत्वपूर्ण हैं। लोगों के बीच संबंधों को सौदेबाजी द्वारा निर्धारित किया जाता है और लिखित समझौतों में परिभाषित किया जाता है। रिश्तेदार अक्सर अलग हो जाते हैं क्योंकि लोग अजनबियों के बीच रहते हैं। व्यवहार के सामान्य रूप से स्वीकृत कोड बड़े पैमाने पर लाभ और हानि की तर्कसंगत या 'शीत-रक्त'गणना द्वारा प्रतिस्थापित किए जाते हैं। इस प्रकार जेमिन्शाचफ्ट में, प्राथमिक-समूह संबंध प्रमुख थे, जबकि गेसलस्चाफ्ट में, द्वितीयक-समूह संबंध महत्वपूर्ण थे।

जेमिन्शाफ़्ट और जेसल्शाफ्ट रिश्ते

1) पर्सनल (वैयक्तिक) इंपर्सनल (अवैयक्तिक)
2) अनौपचारिकऔपचारिक, संविदात्मक
3) पारंपरिकउपयोगितावादी
4) भावुकयथार्थवादी, 'सख्त उबला हुआ'
5) सामान्य विशिष्ट

8.7.3 आंतरिक समूह और बाह्य समूह

इस शब्द को डब्ल्यू. जी सुमनर द्वारा रिश्ते के बाहरी लोगों के विपरीत 'हम' संबंध में अंदरूनी सूत्रों का उल्लेख करने के लिए पेश किया गया था। सुमनर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक फोल्कवेज (1906) में 'इन-ग्रुप' शब्द का इस्तेमाल किया। कुछ समूह ऐसे हैं जिनमें मैं, मेरा परिवार, मेरा धर्म, मेरा विश्वविद्यालय, मेरा धर्म, मेरा पेशा, मेरा लैंगिक, मेरा राष्ट्र - कोई भी समूह जिसके पहले सर्वनाम, "मेरा" पहले से था। ये आंतरिक समूह में हैं, क्योंकि मुझे लगता है, मैं उनसे संबंधित हूं। ऐसे अन्य समूह हैं जिनमें मैं अन्य परिवारों, समूहों, व्यवसायों, जातियों, राष्ट्रीयताओं, धर्मों, अन्य लिंगों से संबंधित नहीं हूं – ये बाह्य समूह हैं, क्योंकि मैं उनके बाहर हूँ।

एक सामान्य समाज छोटे, पृथक बंधनों में रहते हैं जो आमतौर पर रिश्तेदारों के वंशज होते हैं। यह रिश्तेदारी थी जो एक समूह और बाहर समूह में स्थित थी और जब दो अजनबी मिलते थे, तो पहली चीज जो उन्हें करनी होती थी वह थी संबंध स्थापित करना। यदि रिश्तेदारी स्थापित की जा सकती है तो वे समूह में दोनों सदस्य थे। यदि कोई संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता था, तो कई समाजों में वे दुश्मन थे और तदनुसार कार्य करते थे। आधुनिक समाज में, लोग इतने अधिक समूहों से संबंधित हैं कि उनके समूह और बाहर के समूह संबंध ओवरलैप हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक छात्रावास में विभिन्न समूह हैं जो दूसरों को समूह से बाहर के सदस्यों के रूप में मानते हैं। हालांकि, एक अन्य छात्रावास के खिलाफ एक क्रिकेट मैच में, सभी छात्रावास के सदस्य आंतरिक समूह के रूप में व्यवहार करेंगे और मैदान पर अपनी टीम का हौसला बढ़ाएँगे।

इन-ग्रुप और आउट-ग्रुप तब महत्वपूर्ण होते हैं, जब वे व्यवहार को प्रभावित करते हैं। एक आंतरिक समूह के साथी सदस्यों से हम पहचान, निष्ठा और मदद की उम्मीद करते हैं। बाह्य समूह से हमारी उम्मीद बाहर के समूह की तरह बदलती है। कुछ बाह्य समूह से हम दुश्मनी की उम्मीद करते हैं; दूसरों से, अधिक या कम दोस्ताना प्रतियोगिता; दूसरों से, उदासीनता। समान बाह्य समूह से, हम उम्मीद कर सकते हैं कि न तो शत्रुता है और न ही उदासीनता, फिर भी हमारे व्यवहार मे एक अंतर तो रहता ही है। उदाहरण के लिए, 12 साल का लड़का जो लड़कियों से दूर रहता है वह बड़ा होकर एक रोमांटिक प्रेमी बन जाता

है और अपना अधिकांश जीवन वैवाहिक जीवन में बिताता है। फिर भी जब पुरुष और महिलाएं सामाजिक अवसरों पर मिलते हैं, तो वे सेक्स समूहों में विभाजित हो जाते हैं, शायद इसलिए कि प्रत्येक सेक्स दूसरे के कई संवादात्मक हितों से ऊब जाता है। गुट एक प्रकार का आंतरिक समूह है। इस प्रकार, हमारा व्यवहार एक विशेष प्रकार के इन-ग्रुप या आउट-ग्रुप से प्रभावित होता है, जो इसमें शामिल होता है। हालाँकि, यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि इन-ग्रुप और आउट-ग्रुप वास्तव में समूह नहीं हैं, जहां तक लोग उन्हें 'हम' और 'वे' के उपयोग में बनाते हैं और इन समूहों के प्रति एक तरह का दृष्टिकोण विकसित करते हैं। फिर भी, यह अंतर एक महत्वपूर्ण औपचारिक अंतर है क्योंकि यह हमें दो महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का निर्माण करने में सक्षम बनाता है।

क) इन-ग्रुप में बस उन लोगों को स्टिरियोटाइप करते हैं जो आउट-ग्रुप में होते हैं। इस प्रकार दिल्ली के लोगों को बिहार या यूपी में रहने वालों की रूढ़िबद्धता हो सकती है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस तरह के स्टीरियोटाइप आमतौर पर समूह के सदस्यों को दिखाई देने वाले समूहों के सदस्यों में पाए जाने वाले कम से कम सम्मानजनक लक्षणों के रूप में दिखाई देते हैं। भारत के प्रत्येक भाषाई राज्य के लोगों में अन्य भाषाई राज्यों के लोगों की एक रूढ़ि बनने की प्रवृत्ति है। उदाहरण के लिए, एक पंजाबी में स्टीरियोटाइप या एक सामान्यीकृत सोच होती है जिसमें कि एक गुजराती उस रूढ़िबद्धता में उपयुक्त नहीं हो सकता। वास्तव में, सामाजिक दूरी (बोगार्डस द्वारा विकसित एक अवधारणा) इस तरह के वर्गीकरण को प्रोत्साहित करती है और व्यक्तिगत भेदभाव को हतोत्साहित करती है। इस सिद्धांत का ज्ञान स्टीरियोटाइप में ऐसे वर्गीकरण के दुर्भाग्यपूर्ण प्रभावों को कम करने और लोगों के बीच आसान संचार को बाधित करने वाले अवरोधों को ध्वस्त करने में काफी मदद करता है।

ख) किसी आउट-ग्रुप से कोई भी खतरा, वास्तविक या काल्पनिक, आउट-ग्रुप के सदस्यों के खिलाफ इन-ग्रुप के सदस्यों को बांध देता है। इसे परिवार की स्थिति में हमारे अनुभव के संदर्भ में चित्रित किया जा सकता है। चीनी ऋषि, मेकिनस ने कई साल पहले कहा था: "भाई और बहन जो अपने घर की दीवारों के भीतर झगड़ा कर सकते हैं, किसी भी घुसपैठ को दूर करने के लिए खुद को एक साथ बांधेंगे"।

8.7.4 संदर्भ समूह

संदर्भ समूह हमारे निर्णयों और कार्यों के लिए मॉडल या गाइड के रूप में स्वीकृत किसी भी समूह को संदर्भित करता है। हालाँकि, इसे स्पष्टता के लिए और विस्तार की आवश्यकता है। कुछ स्थितियों में, हम उन मानदंडों के अनुरूप नहीं होते हैं, जिनसे हम संबंधित हैं, बल्कि उन समूहों से हैं जिनकी हम पहचान करना चाहते हैं।

एक संदर्भ समूह एक वास्तविक समूह नहीं हो सकता है। यह एक काल्पनिक भी हो सकता है। कोई भी समूह किसी के लिए एक संदर्भ समूह है यदि उसकी यह अवधारणा, जो यथार्थवादी हो सकता है या नहीं भी हो सकता है, वह स्वयं या उसकी स्थिति के आकलन के लिए उसके संदर्भ के ढांचे का हिस्सा है।

इस प्रकार, एक व्यक्ति जो आमतौर पर सामाजिक सीढ़ी को स्थानांतरित करने के लिए उत्सुक है, उसके पास अपने स्वयं के मुकाबले शिष्टाचार और उच्च सामाजिक वर्ग की भाषा के मानदंडों के अनुरूप होने की प्रवृत्ति है क्योंकि वह इस वर्ग के साथ पहचान चाहता है। भारतीय संदर्भ में'संस्कृतिकरण', संदर्भ समूह की अवधारणा का सबसे अच्छा चित्रण है, जहां जाति पदानुक्रम की ऊपरी सीढ़ी में लोगों को 'मॉडल' के रूप में लिया जाता है और उनके

नीचे के लोगों द्वारा नकल की जाती है। किसी विशेष समूह के सदस्यों के लिए, एक अन्य समूह एक संदर्भ समूह है यदि निम्न में से कोई भी परिस्थिति प्रबल हो -

1) जब पहले समूह के सदस्य दूसरे समूह की सदस्यता की इच्छा रखते हैं, तो दूसरा समूह अगले के लिए संदर्भ समूह बन जाता है। उदाहरण के लिए, आई.ए.एस प्रशिक्षु भारत में विश्वविद्यालय के कई छात्रों के लिए संदर्भ समूह के रूप में कार्य करते हैं।

2) जब पहले समूह के सदस्य किसी तरह से दूसरे समूह के सदस्यों की तरह बनने का प्रयास करते हैं, तो दूसरा समूह पहले के सकारात्मक संदर्भ समूह के रूप में कार्य करता है। यहां यह ध्यान रखना है कि पहला समूह दूसरे समूह की तरह बनना चाहता है। उदाहरण के लिए, गैर-ब्राह्मण, भारत के कुछ हिस्सों में ब्राह्मणों के व्यवहार के तरीकों का अनुकरण करने की प्रवृत्ति रखते हैं ताकि ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा प्राप्त हो सके (जैसा कि श्रीनिवास ने उल्लेख किया है)।

3) जब पहले समूह के सदस्य दूसरे समूह के सदस्यों के विपरीत कुछ संतुष्टि प्राप्त करते हैं, और यहां तक कि अपने और दूसरे समूह के सदस्यों के बीच अंतर बनाए रखने का प्रयास करते हैं, तो बाद वाला समूह पहले समूह के लिए नकारात्मक संदर्भ समूह होता है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में, गोरे अफ्रीकी अमेरिकियों के विपरीत बने रहने का प्रयास करते हैं और इस मामले में अफ्रीकी अमेरिकी गोरों के लिए नकारात्मक संदर्भ समूह बन जाते हैं।

4) जब आवश्यक रूप से दूसरे समूह के समान या इसके विपरीत होने का प्रयास किए बिना, पहले समूह के सदस्य दूसरे समूह या उसके सदस्यों को तुलना के लिए एक मानक के रूप में उपयोग करके अपने स्वयं के समूह या खुद को स्पष्ट करते हैं; दूसरा समूह पहले का संदर्भ समूह बन जाता है। उदाहरण के लिए, कुछ परिस्थितियों में कॉलेजों के गैर-शिक्षण कर्मचारी शिक्षकों के संदर्भ में अपने स्वयं के प्रदर्शन या रिकॉर्ड उपस्थिति का आकलन करते पाए जाते हैं।

कार्यक्षेत्र और क्षैतिज समूह

एक ऊर्ध्वाधर समूह (मिलर द्वारा दी गई अवधारणाएं) जीवन के सभी क्षेत्रों से सदस्यों के होते हैं, जबकि एक क्षैतिज समूह में मुख्य रूप से एक सामाजिक वर्ग के सदस्य होते हैं। डॉक्टर, इलेक्ट्रीशियन, इंजीनियर आदि के व्यावसायिक समूह पहले के उदाहरण हैं, जबकि जाति समूह ऊर्ध्वाधर समूहों के उदाहरण हैं।

संस्थागत और गैर-संस्थागत समूह

संस्थागत समूह वे हैं जो अनुष्ठानों, प्रतीकों, अधिकारियों, आचार संहिता, विनियामक शक्ति सहित दंडित करने के लिए कार्य करते हैं। राष्ट्र एक संस्थागत समूह है। सत्ता के लिए नागरिकों के संघ के रूप में राज्य पिकनिक पार्टी के विपरीत एक संस्थागत समूह है जो एक गैर-संस्थागत समूह है।

संविदात्मक और गैर-संविदा समूह

संविदात्मक समूह की शक्ति और सदस्यों की जिम्मेदारियों के साथ-साथ समूह की एक परिभाषा के भीतर एक अनुबंध होता है। यह एक औपचारिक समूह है जो संस्थागतकरण की ओर निश्चित प्रवृत्ति है। भारतीय संविधान, निगम, एक श्रमिक संघ के संगठन संविदा समूह के कुछ उदाहरण हैं। गैर-संविदा समूह छात्र, एक ट्रेन पर यात्री हैं आदि।

स्वैच्छिक और अनैच्छिक समूह

एक स्वैच्छिक समूह वह है जो एक व्यक्ति अपने स्वयं के साथ जुड़ता है। यह उसका विकल्प है कि वह सदस्य बने रहना चाहता है या नहीं। उदाहरण के लिए, एक क्लब सदस्यता स्वैच्छिक है। एक अनैच्छिक समूह वह है जो रिश्तेदारी या जाति समूह पर आधारित है और यह स्वैच्छिक समूह के सदस्यों का एक उदाहरण है।

अनौपचारिक और औपचारिक समूह

एक अनौपचारिक समूह वह है जिसमें कई व्यक्ति एक समान लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक साथ काम करते हैं। रिश्ते को संचालित करने के लिए औपचारिक नियमों और विनियमों का कोई सेट नहीं है। इसकी कोई निश्चित संरचना नहीं है। क्राउड एक अनौपचारिक समूह का एक उदाहरण है।

एक औपचारिक समूह में अधिकारियों के एक सेट के निर्देशन में नियमों के एक सेट के अनुसार दिए गए लक्ष्य की ओर एक साथ काम करने वाले कई व्यक्ति होते हैं। इसकी एक निश्चित संरचना है। एक नौकरशाही समूह एक औपचारिक समूह का एक उदाहरण है।

8.8 सामाजिक समूह और सामुदायिक मतभेद

सामाजिक समूह	समुदाय समूह
1) समूह एक कृत्रिम निर्माण है।	1) समुदाय एक प्राकृतिक विकास है।
2) समूह का गठन कुछ को महसूस करने के लिए किया जाता है।	2) समुदाय में सामाजिक जीवन का पूरा चक्र शामिल है
3) समूह की सदस्यता स्वैच्छिक है	3) समुदाय की सदस्यता अनिवार्य है।
4) समूह तुलनात्मक रूप से अस्थायी है	4) समुदाय तुलनात्मक रूप से स्थायी है।
5) समूह समुदाय का एक हिस्सा है	5) समुदाय एक संपूर्ण है।

बोध प्रश्न

1) सामाजिक समूह को परिभाषित करें, सामाजिक समूह के उद्देश्य क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) सामाजिक समूहों के विभिन्न प्रकार क्या हैं? उदाहरण सहित बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) इन-ग्रुप और आउट-ग्रुप ग्रुप के बुनियादी पहलुओं को समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) सामाजिक समूहों के वर्गीकरण के आधार क्या हैं? इसकी व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

8.9 सारांश

इस इकाई ने समुदाय और सामाजिक समूह की कुछ महत्वपूर्ण और बुनियादी अवधारणाओं को स्पष्ट रूप से समझाया है। समुदाय मनुष्यों का सबसे समावेशी समूह है, जो व्यक्तिगत सदस्य द्वारा उसके जीवन को पूरी तरह से जीने की संभावना से चिह्नित है। समुदाय को आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता है और वास्तव में इसमे कमी आने से सभ्यता अन्तःनिर्भर हो जाती है। इस इकाई ने संक्षेप में सभी समुदायों के दो आधारों, एक क्षेत्रीय हिस्से के पेशे और एक सामुदायिक भावना को शामिल कर उसे साझा करने की कोशिश की।

सामाजिक समूह की मूल अवधारणाएं, जैसा कि इस इकाई में समझाया गया है, समूह द्वारा इसका मतलब है कि मनुष्य का कोई भी संग्रह जो एक दूसरे के साथ सामाजिक संबंधों में लाया जाता है। सामाजिक रिश्तों में उन लोगों के बीच पारस्परिकता का कुछ अवस्था शामिल है, आपसी जागरूकता के कुछ उपाय जो समूह के सदस्यों के दृष्टिकोण में परिलक्षित होते हैं। इस कसौटी के आधार पर, जनसंख्या के कई उन विभाजनों को सामाजिक समूह नाम दिया गया। समूहों के वर्गीकरण का आधार, फिर, समूह बातचीत का आकार यासमूह अन्तः क्रिया की कुछ गुणवत्ता या समूह हित की कुछ गुणवत्ता या संगठन की अवस्था, या इनमें से कुछ संयोजन। प्रमुख प्रकार के समूहों का वर्गीकरण मुख्य रूप से

हितों की सीमा और प्रकृति और समूह संगठन की स्थिति पर आधारित है, जबकि अन्य कसौटी उपप्रकारों के बीच उभरे भेदों में अंतर्निहित होते हैं।

8.10 संदर्भ

गिंसबर्ग एम 1961. सोसिओलोजी. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

गीसबर्त पी 2010. फंडामेंटल्स ऑफ सोसिओलोजी. न्यू दिल्ली : ओरिएंट लोंगमन

हौर्टन, पॉल बी एंड हंट,चेस्टर एल. 2004. सोसिओलोजी. न्यू यॉर्क : टाटा मैगरा-हिल

मैकइबर, आर. एम 1924. कम्यूनिटी. लंदनः मैकमिलन

टोनीज़,एफ. 1955. कम्युनिटि एंड असोसियेशन. लंदनः रुतलेज एंड किगा पॉल

र्युटर, ई. बी. 1948. हैंडबुक ऑफ सोसिओलोजी. न्यू यॉर्क : द ड्राइडन प्रेस

यंग के. 1949. सोसिओलोजीः ए स्टडी ऑफ सोसिओलोजी एंड कल्चर. न्यू यॉर्क. अमेरिकन बुक कंपनी

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 9 संगठन और संस्थाएँ*

संरचना

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 संस्थान

- 9.2.1 संस्थान का प्रयोजन
- 9.2.2 संस्थानों के प्रकार

9.3 सामाजिक संस्थानों का परिप्रेक्ष्य

- 9.3.1 प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य
- 9.3.2 संघर्ष संबंधित परिप्रेक्ष्य
- 9.3.3 पारस्परिक अन्तःक्रिया (Social Interaction) संबधित परिप्रेक्ष्य

9.4 संगठन

9.5 संगठनों से संबधित दृष्टिकोण

- 9.5.1 अमिताई एट्जियोनी
- 9.5.2 मैक्स वेबर
- 9.5.3 इरविंग गॉफमेन

9.6 संगठनों का वर्गीकरण

9.7 संगठनात्मक व्यवहार

- 9.7.1 सदस्यों के व्यवहार
- 9.7.2 सदस्यों को सौंपी गई भूमिकाएं

9.8 सारांश

9.9 संदर्भ

9.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप, निम्न के बारे में सक्षम होंगेः

- संस्थानों और संगठनों के अर्थ को समझने में;
- संस्थानों और संगठनों के बीच अंतर को समझने में;
- वर्तमान में समाज की संरचना के विभिन्न प्रकार के संगठनों और संस्थानों की पहचान करने में;
- संगठनों संबंधित परिपेक्ष्य को समझने में;
- विभिन्न प्रकार के संगठनों को समझने में; तथा
- संगठनात्मक व्यवहार को समझने में।

9.1 प्रस्तावना

इस इकाई में संस्थानों और संगठनों को समाज की इकाइयों के रूप में देखा गया है। यह इकाई समाज, संस्थानों और संगठनों के बीच संबंधों पर प्रकाश डालती है। यह इकाई

*स्मृति सिंह, स्वतंत्र विदुषी

संस्थानों, संगठनों और संगठनात्मक व्यवहार से क्या तात्पर्य की विस्तृत जाँच करती है। संस्थानों और संगठनों, और समाज के साथ उनके संबंधों के विचार पर विभिन्न सामाजिक दृष्टिकोणों को भी यह इकाई रेखांकित करती है।

समाज व्यक्तियों और समूहों से बना है और यह उनके बीच मौजूद सभी प्रकार के रिश्तों का योग है। हालांकि समाज को अपने विभिन्न घटकों को व्यवस्थित करते हुए खुद को व्यवस्थित करने की जरूरत है। संस्थाओं और संगठनों के माध्यम से समाज खुद को व्यवस्थित और आदेशित करते हैं। संस्थान और संगठन समाज की स्थिरता और भविष्य हेतु उचित माहौल प्रदान करते हैं जो कि समाज की स्थिरता के लिए जरूरी है।

संस्थान नियमों के समूह हैं जो सामाजिक अन्तःक्रिया (Social Interaction) का ढांचा तैयार करते हैं (जैक नाइट, 1992)। संस्थानों को मानव क्रियाकलाप के लिए आचरण संहिता या नियमों और दिशानिर्देशों के समूह के रूप में जाना जा सकता है। संस्थान निर्धारित अथवा निहित नियमों द्वारा मानव अन्तःक्रिया (Social Interaction) की संरचना करते हैं जो अपेक्षाओं को सृजित करते हैं। संस्थानों के कुछ आदर्श रूप कानून, शिक्षा, विवाह और परिवार हैं।

संगठन विशिष्ट प्रकार के संस्थान होते हैं जिनकी स्पष्ट रूप से परिभाषित और निर्दिष्ट सीमा होती है और जो गैर-सदस्यों को सदस्यों से अलग करते हैं। संगठन विलक्षण होते हैं क्योंकि उनके सदस्य आदेश की श्रृंखला में बंधे हुए होते हैं। संगठन स्पष्ट रूप से जिम्मेदारियों, प्राधिकार और प्रभाव के क्षेत्रों का निर्धारण करते हैं। वे अपने सदस्यों को स्वायत्त प्रभारी की भूमिका प्रदान करके उन्हें एक पदानुक्रम में भी व्यवस्थित करते हैं। संगठनों के कुछ आदर्श रूप ट्रेड यूनियन, विद्यालय और अदालतें हैं।

शिक्षा के उदाहरण के रूप में किसी संस्थान तथा संगठन के उदहारण के रूप में किसी विद्यालय पर विचार करें। सभी गैर समाज कुछ तरीकों को बनाते हैं जिसमें वे अपने युवाओं के संकाय सदस्यों को प्रशिक्षित करते हैं और लाभ उठाते हैं; नए ज्ञान को सृजित करते हैं और मौजूदा ज्ञान को हस्तांतरित करते हैं। ऐसा करते हुए वे समाज के भीतर मानवीय अन्तःक्रिया (Social Interaction) और मानवीय क्रियाकलाप को आयोजित करते हैं। शिक्षा वह माध्यम बन जाती है जिसमें युवाओं को समाज के सदस्यों के रूप में अपनी भूमिका, अपेक्षाओं और कर्तव्यों को बताया जाता है। सभी समाजों (जातियों, जनजातियों, कृषि, औद्योगिक) ने अपने युवाओं तक ज्ञान, मूल्यों और कौशलों को हस्तांतरित करने के लिए किसी न किसी तरीके को तैयार किया है। इस लक्ष्य को विभिन्न तरीकों से अर्जित किया जा सकता है जैसे प्रशिक्षुता, गुरुकुल (भारत की पारंपरिक आवासीय शिक्षा प्रणाली), परामर्श और प्रशिक्षण।

9.2 संस्थान

1) संस्थान समाज के वे घटक हैं जो मानव अन्तःक्रिया (Social Interaction) और क्रियाकलाप को बनाकर उसे आदेशित और स्थिर बनाए रखने में सहायता करते हैं। संस्थान स्वयं को उन अतिव्यापी अथवा निहित नियमों के संदर्भ में प्रकट करते हैं जो मानव अन्तःक्रिया (Social Interaction) को सृजित करते हैं। संस्थाएं समाज के उन सदस्यों के माध्यम से कार्य करती हैं जो उन्हें समाजीकृत करते हैं। यह समाजशास्त्र के क्षेत्र में संस्थानों के अध्ययन को महत्वपूर्ण बनाते हैं। ऐमाइल दुर्खाइम ने समाजशास्त्र को सैद्धांतिक संस्थानों के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में वर्णित किया है। धर्म, परिवार, शिक्षा आदि जैसे संस्थान समाजशास्त्र के लिए आज भी महत्वपूर्ण हैं।

संस्थाओं के अर्थ से परिचित होने के लिए संस्थानों के बारे में कुछ विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं पर आईये विचार करते हैं:

मॉरिस गिन्सबर्ग (1921) के अनुसार, "संस्थान सामाजिक प्राणियों के बीच एक दूसरे अथवा किसी बाह्य वस्तु के साथ निश्चित और स्वीकृत संबंध के स्वरूप या माध्यम हैं।"

रॉबर्ट मॉरिसन मैकाइवर 2 ने "संस्थानों को समूह गतिविधि की विशिष्ट प्रक्रियाओं के स्वरूप या शर्तों के रूप में परिभाषित किया है।"

(2 जेरी डी रोज़. इंट्रोडक्शन टू सोशियोलॉजी. शिकागो, आई.एल.: रेंड मैक्नेली, 1974 पृष्ठ 223 पर उद्धरित।)

विलियम ग्राहम सुमनर (1906:53) यह सुझाते हैं कि "किसी भी संस्थान में अवधारणा, विचार, दशा, सिद्धांत या रुचि और संरचना शामिल होते हैं"।

ब्रोनिस्लाव मैलिनोवस्की 3 तर्क देते हैं कि, "प्रत्येक संस्थान किसी मूलभूत आवश्यकता के आसपास केंद्रित होते हैं, जो सह-परिचालन कार्य में लोगों के समूह को एकजुट करते हैं और उसके विशेष सिद्धांत और तकनीक या शिल्प होते हैं। संस्थान नए कार्यों के लिए प्रत्यक्ष रूप से सहसंबंधित नहीं होते हैं। किसी को किसी संस्थान में किसी की संतुष्टि प्राप्त करने की जरूरत नहीं होती है।"

जोनाथन टर्नर ने संस्थान को इस प्रकार परिभाषित किया है कि किसी दिए गए पर्यावरण के भीतर व्यवहार्य सामाजिक संरचनाएं "विशिष्ट प्रकार के सामाजिक संरचना के पदों, भूमिकाओं, मानदंडों और मूल्यों का एक जटिल और जीवन को बनाए रखने संसाधनों के सृजन में मूलभूत समस्याओं के संबंध में व्यक्तियों को पुनःसृजत करने और सतत बनाए रखने के लिए मानव क्रियाकलाप के अपेक्षाकृत स्थिर स्वरूप आयोजित करना है।" (टर्नर 1997: 6)

उपर्युक्त परिभाषाओं से हमने यह सिखा है कि 1) संस्थान भौतिक संस्थाएं नहीं हो सकते हैं अपितु समाज के सदस्यों के व्यवहार के समन्वित स्वरूप में देखे जा सकते हैं। 2) संस्थान समाज के सदस्यों के व्यवहार की व्याख्या करने में मदद कर सकते हैं। 3) संस्थानों में प्रतिबंधित और सक्षमता दोनों होता है जिसमें यह दोनों व्यक्तियों के लिए उपलब्ध विकल्पों को बाधित करता है और उन तरीकों को परिभाषित भी करता है जिनमें विकल्पों का इस्तेमाल किया जाना है। ऐसी परिस्थिति पर विचार करें जिसमें दो व्यक्ति विवाह जैसी संस्था के द्वारा एक साथ रहने का फैसला करते हैं और इस प्रकार विवाह उन लोगों के एक दूसरे के साथ रहने की इच्छा को परिभाषित एवं नियमित करता है। 4) संस्थान समाज के सदस्यों के बीच एकजुटता लाने का कार्य करते हैं। 5) ये सदस्यों के बीच अन्तःक्रिया (Social Interaction) की संरचना तैयार करते हैं।

संस्थानों की पहचान मानदंडों और प्रतिबंधों द्वारा संरचित व्यवहारों के नियमित और सुसंगत रूप के संदर्भ में की जा सकती है। जबकि दिखाई पड़ने वाले व्यवहार की गणना संस्थान के अवलोकन योग्य रूप के तौर पर की जा सकती है। संस्थानों को संबंधित व्यवहार तक ही सीमित नहीं किया जा सकता है; क्योंकि यदि संबंधित व्यवहार बाधित होता है तो इसका तात्पर्य यह नहीं हो सकता कि संस्थान अस्तित्व में है। इन मानको और संस्थानों के बीच कोई स्पष्ट सीमा रेखा नहीं खींची जा सकती परन्तु संस्थान कुछ भिन्न होते हैं क्योंकि वे सुसंगत होते हैं और उनकी सामान्यकृत मानक अपेक्षाएं होती हैं। इन मानक सामाजिक

अपेक्षाओं को अनिवार्य माना जाता है और उन्हें विचलन के विपरीत मजबूत प्रतिबंधों द्वारा पूरा किया जाता है। उदाहरण के लिए, प्रजनन के जैविक तथ्य को विवाह के रूप में संस्थागत किया गया है और परिवार को संस्थान के रूप में। विवाह और परिवार के स्वीकृत संस्थानों के बाहर मानव प्रजनन को सामान्य तौर पर निराशा प्राप्त होगी और कुछ मामलों में इसका घोर विरोध होगा। इसलिए, संस्थान सामाजिक भूमिका लागू करते हैं और सामाजिक नियम बनाते हैं तथा उन्हें परिभाषित करना चाहते हैं कि किसी विशेष समाज के सदस्यों को उन नियमों का पालन करना चाहिए। अतः संस्थानों को ऐसी भूमिकाओं के एक समूह के रूप में जाना जा सकता है। उदाहरण के तौर पर परिवार नामक संस्था में किसी विषमलैंगिक व्यक्ति से कुछ भूमिकाओं और जिम्मेदारियों तथा किसी विषमलैंगिक महिला से अन्य भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को अपनाने की अपेक्षा की जाती है। परिवार के बच्चों के लिए भी सामाजिक रूप से परिभाषित भूमिकाएं और जिम्मेदारियां होती हैं। हालांकि इस प्रकार की भूमिकाएं और जिम्मेदारियां अनंतिम और पूर्ण नहीं होती हैं। परिवार नामी संस्था पर यौन संबंध और श्रम विभाजन के 'पुरुष' और 'महिला' की भूमिकाओं के बारे में उसकी धारणाओं के लिए प्रहार किया गया है।

संस्थान अभी तक अच्छी प्रकार से कार्य करते हैं क्योंकि वे अपेक्षा, विचार और कार्रवाई के स्थिर स्वरूप को कायम रखते हैं। इन तत्वों के बीच सामंजस्य और संकालन संस्थान की स्थिरता को निर्धारित करते हैं। आम तौर पर यह तर्क दिया जाता है कि संस्थानों में गुणों की भांति संतुलन होता है, जिसके बाधित होने पर संस्थान उद्देश्य या वरीयता को कायम करके अपनी स्थिरता को बहाल करते हैं। पुनरावृत और सुसंगत व्यवहार जिसमें नियम-समान गुण होते हैं, वे मानक महत्त्व ग्रहण करते हैं और इस प्रकार से कार्य करते हैं जो संस्था की संतुलित स्थिति को दृढ करते हैं।

समाजशास्त्री संस्थानों को केवल स्थिर अचल घटना के रूप में नहीं अपितु एक प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। संस्थानों को संस्थानीकरण, असंस्थानीकरण, और पुनःसंस्थानीकरण की प्रक्रियाओं के संदर्भ में देखा- समझा जा सकता है। सामान्य तौर पर उन्हें "सामाजिक जीवन की अधिक स्थायी विशेषताओं" के रूप में माना जाता है (गिडेंस, 1984:24)।

परिभाषित शब्द की उत्पत्ति

यह शब्द अर्थशास्त्र में इसके प्रयोग से लोकप्रिय हुआ जहां उसने अन्य सदस्यों द्वारा उपयोगिता अधिकता के प्रति समानांतर प्रयासों के कारण उपयोगिता अधिकता के मानव प्रयास पर बाधाओं को प्रतिबिंबित किया। दो अर्थशास्त्री जो इसके उपयोग के साथ जुड़े रहे हैं वे हैं ओलिवर विलियमसन और डीसी नार्थ (संदर्भ दे) हैं। जैसा कि आप अर्थशास्त्र में इसके उपयोग को देख सकते हैं कि समाजशास्त्र में इसके उपयोग से काफी अलग है। जबकि, अर्थशास्त्र में इस शब्द का उपयोग समाजशास्त्र के लिए थोड़ा महत्व का है, संस्थानों की सामाजिक अवधारणा, संस्थागत परिवर्तन और संस्थागतकरण अर्थशास्त्र के अनुशासन के लिए महत्वपूर्ण रहा है। अर्थशास्त्र के लिए समाजशास्त्रीय अर्थों में संस्था की भविष्यवाणी और व्यक्तिगत व्यवहार की व्याख्या मदद कर सकते हैं। अर्थशास्त्र में इसके मूल उपयोग के विरुद्ध कोई संस्था को समझना शुरू कर सकता है और व्यक्तिगत व्यवहार को समझ सकता है, जो संस्था की सामाजिक अवधारणा का सुझाव देता है।

अर्थशास्त्र में इसके प्रारंभिक उपयोग के बाद यह शब्द समाजशास्त्र में आया। इस शब्द के सबसे पहले उपयोग का श्रेय समाजशास्त्री हर्बर्ट स्पेंसर को जाता है। स्पेंसर ने यह सुझाव दिया कि समाज एक जीव है और संस्थाएं समाज का अंग हैं।

9.2.1 संस्थाओं का प्रयोजन

जर्मन समाजशास्त्री अर्नोल्ड गेहलेन (1980) का यह सुझाव है कि मनुष्य एक सांस्कृतिक दुनिया के साथ अपनी सहज दुनिया को पूरक बनाना चाहते हैं। उनका यह सुझाव है कि असंपूर्णता की इस भावना और पूरा करने के प्रयास संस्थानों के प्रादुर्भाव को बताते हैं। थॉमस लखमैन अपनी किताब 'द सोशल कंस्ट्रक्शन ऑफ रियलिटी' (1967) में इस विचार को व्यक्त करती हैं और सुझाव देती हैं कि मनुष्य अपने जैविक अविकसित होने की स्थिति को सामाजिक मंड़प अथवा धर्म के साथ अपने आस-पास द्वारा क्षतिपूर्ति करते हैं। इसलिए संस्थाएं मानव जीवन को उनके प्राकृतिक परिवेश से जोड़कर मध्यवर्ती सामाजिक संबंधों और प्रतीकात्मक संरचनाओं की मदद से मानव को सार्थक बनाती हैं।

9.2.2 संस्थानों के प्रकार

समाजशास्त्री सामान्यतः संस्थानों को प्रमुख संस्थानों के पांच समूहों में वर्गीकृत करते हैं जो इस प्रकार हैं:

- आर्थिक संस्थाएं: ये वे संस्थाएं हैं जो वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, उपभोग और वितरण के अनुरूप हैं ।
- सामाजिक स्तरीकरण की संस्थाएं: ये वे संस्थाएं हैं जो सामाजिक हैसियत और प्रतिष्ठा के लिए भिन्न भिन्न पहुंच को विनियमित और नियंत्रित करती हैं ।
- रिश्तेदारी, विवाह और परिवारः ये संस्थाएं प्रजनन को नियंत्रित और विनियमित करती हैं ।
- राजनीतिक संस्थाएं: ये सत्ता के नियमन और वितरण पर ध्यान देती हैं ।
- सांस्कृतिक संस्थानः ये धार्मिक, प्रतीकात्मक और सांस्कृतिक प्रथाओं को विनियमित करती हैं ।

9.3 सामाजिक संस्थाओं का परिप्रेक्ष्य

सामाजिक संस्थान व्यवस्थित मान्यताएँ और मानदंड होते हैं जो मूलभूत सामाजिक जरूरतों को पूरा करने पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं। यह सामाजिक जरूरत समाज के सदस्यों के प्रतिस्थापन (प्रजनन और परिवार) और आदेश के संरक्षण से संबंधित है। समाज की संरचना में सामाजिक संस्थाएं अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए परिवार की रिश्तेदारी और अनाचार समाज की संरचना को समझने में मदद करते हैं। समाज की संरचना इन शर्तों के माध्यम से स्पष्ट हो जाती है कि ये मानदंड जनादेश के साथ-साथ समाज के सदस्यों के हितों की सेवा करने के लिए उनकी अनुकूल विशेषता है।

सामाजिक संस्थाओं का समाजशास्त्रियों द्वारा विभिन्न तरीकों से अध्ययन किया गया है। जबकि कुछ सामाजिक संस्थानों को अहम हिस्सों के रूप में समझते हैं जिन्हें समग्र समाज के लिए ठीक प्रकार से कार्य करना चाहिए, अन्य आदर्श परिस्थितियों के तहत यथास्थिति की स्थापना रूप में सामाजिक संस्थाओं को देख सकते है जो वैमनस्य का कारण बनती हैं। इन परिप्रेक्ष्यों में से कुछ को हम निम्नानुसार देखते हैं। इन सभी परिप्रेक्ष्यों से सामाजिक संस्थानों के कुछ पहलूओं पर प्रकाश डाला गया है जिससे सामाजिक संस्थानों से संबंधित हमारी जानकारी बढ़ सकती है।

9.3.1 कार्यात्मकता परिप्रेक्ष्य

कार्यात्मकता परिप्रेक्ष्य उन भूमिकाओं और सेवाओं पर प्रकाश डालते हैं जिनका संबंध बड़े समाज से होता है। कार्यात्मकता परिप्रेक्ष्य संस्था को समाज के रूप देखते हैं। किसी संस्था का महत्त्व उसके द्वारा समाज की समग्र भलाई के लिए किए गए कार्यों से पता चलता है। कार्यात्मकता परिप्रेक्ष्य के नजरिए से पता चलता है कि सामाजिक संस्थाएं पांच तरीकों से समाज की जरूरतों को पूरा कर रही हैं। एक समाज की कार्यात्मक आवश्यकताओं कि संस्थाओं को पूरा कर रहे हैः 1) वृद्धावस्था, रोग, युद्ध या प्रवास की वजह से समाज के लोगों की कमी का प्रतिस्थापन। यह कार्य अप्रवासन, विलय या यौन प्रजनन के माध्यम से नए सदस्यों को जोड़ कर किया जाता है। 2) नए सदस्यों की सामाजिकता और शिक्षा। 3) समाज के सदस्यों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन, परिसंचरण और वितरण। 4) दिन-प्रतिदिन की अंतःक्रियाओं और शासन को व्यवस्थित करते हुए, साथ ही बाहरी हमलों, जो समाज को नष्ट करने की धमकी देते हैं, उससे बचाकर समाज को संरक्षित करते हुए उसे सुचारू रूप प्रदान करना। 5) लोगों को धर्म, संस्कृति, भाषा, आदि जैसे संगठनों के प्रति निष्ठा बनाने और पुनः पेश करने की अनुमति देकर अपनेपन और उद्देश्य की भावना को बढ़ावा देना।

9.3.2 द्वंद्व परिप्रेक्ष्य

द्वंद्व परिप्रेक्ष्य प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य से सहमत हैं और वे यह स्वीकार करते हैं कि संस्थान समाज की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। हालांकि संघर्ष परिप्रेक्ष्य वालों का यह तर्क है कि संस्थान पदानुक्रम स्थापित करते हैं और असमानताओं को बरक़रार रखने का कार्य करते हैं। उदाहरण स्वरूप यह देखा जा सकता है कि संघर्ष परिप्रेक्ष्य इस बात पर बल देते हैं कि शिक्षा के रूप में प्रमुख संस्थान ने समाज के शक्तिशाली समूहों को विशेषाधिकार देने के लिए किस प्रकार कार्य किया है। द्वंद्व परिप्रेक्ष्य इस बात पर भी बल देता है कि संस्थान विशेषाधिकार के रखरखाव की दिशा में कार्य करते हैं। इसके साथ-साथ द्वंद्व परिप्रेक्ष्य इस बात पर प्रकाश डालता है कि संस्थान उनके लिए प्रतिरोधी और दमनकारी होते हैं जो संस्थानों को नुकसान पहुंचाते हैं। उदाहरणस्वरूप संघर्ष परिप्रेक्ष्य इस बात पर बल देता है कि परिवारनामी संस्थान में महिलाओं को श्रम संबंधी शोषण का सामना करना पड़ता है। सामाजिक संस्थानों के नस्लवादी, लैंगिक और घोर रूढ़िवादी स्वरूप पर भी इसने प्रकाश डाला है। संस्थानों द्वारा निर्धारित मानदंडों और अपेक्षाओं के निहित धारणाओं पर संघर्ष परिप्रेक्ष्य प्रहार करता है। संस्थानों के प्रबल मानदंडों के अंतर्गत असंगत तरीके से प्राधिकारों को दिया जाता है।

9.3.3 अंतःक्रियावादी परिप्रेक्ष्य

पहले के दोनों (जैसे, कार्यशीलवादी परिप्रेक्ष्य और संघर्ष परिप्रेक्ष्य) के विपरीत पारस्परिक अन्तःक्रिया (Social Interaction) संबधित परिप्रेक्ष्य वास्तविक अन्तःक्रिया (Social Interaction) में संस्थान किस प्रकार भूमिका अदा करता है, इस बारे में सूक्ष्म दृष्टिकोण में रूचि रखता है। यह पारस्परिक अन्तःक्रिया (Social Interaction) और रोजमर्रा के व्यवहार में संस्थानों के ढ़ांचा और सुविधा के स्वरूप पर कब्जा करना चाहता है। पारस्परिक अन्तःक्रिया (Social Interaction) संबधित परिप्रेक्ष्य का यह तर्क है कि संस्थान हमारे दैनिक पारस्परिक अन्तःक्रिया (Social Interaction) और व्यवहार को गठित करते हैं। हमारे दिन-प्रतिदिन के अन्तःक्रिया (Social Interaction) और व्यवहार उन भूमिकाओं और स्थितियों से परिशोधित होते हैं जो दिए गए हैं (जिन्हें हम स्वीकार करते हैं), जिन्हें हमें समूहों में सौंपा गया है (और

वचनबद्धता का वादा लिया गया है) और वह भी उन संस्थानों के अन्दर जिनमें हम कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए शिक्षा की संस्था के भीतर एक शिक्षक की भूमिका विशिष्ट तरीकों से अन्तःक्रिया (Social Interaction) को गठित करती है। इसे केवल छात्रों, अभिभावकों और शिक्षा की संस्था द्वारा परिभाषित अन्य हितधारकों की भूमिकाओं के संबंध में समझा जा सकता है। विभिन्न भूमिकाओं और स्थितियों से शिक्षा संस्थान इसका महत्व ग्रहण करता है जिसे लोग अपने दिन-प्रतिदिन के अन्तःक्रिया (Social Interaction) में सुसंगत तरीके से अदा करने और आगे ले जाने के लिए सहमत होते हैं।

9.4 संगठन

संस्थानों को जरूरी नहीं कहा गया है परन्तु वे प्रामाणिक अपेक्षाएं होती हैं जो समाज के सदस्यों के बीच अन्तःक्रिया (Social Interaction) की संरचना करते हैं। दूसरी ओर संगठन ठोस संरचनाओं के साथ औपचारिक निकाय हैं जिसमें गैर-सदस्यों से सदस्यों को अलग करने की परिभाषित सीमाएं शामिल होती हैं। इस कारण जहाँ संस्था औपचारिक रूप से अस्थिर हैं, संगठनों को औपचारिक रूप से निकाय कहा जाता है। संस्थान सामाजिक रूप से नियमों के सुसंगत और व्यवस्थित अंतःस्थापित दल होते हैं। संगठन विशिष्ट सुविधाओं वाले संस्थानों के विशेष मामले होते हैं। इसलिए संस्थाएं फुटबॉल के नियम जैसी होती हैं। वे उस नियम को बनाते हैं जिसमें खेल को खेला जाना है। फुटबॉल के संदर्भ में संगठन का एक अच्छा उदाहरण फेडेरेशन इंटरनेशनल डे फुटबॉल एसोसिएशन (फीफा) जो कि संगठन इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ एसोसिएशन फुटबॉल भी कहलाता है।

हम भारतीय डाक सेवा, भारतीय कॉफी हाउस, केंद्रीय विद्यालय, दिल्ली पुलिस, खादी ग्रामोंद्योग जैसे संगठनों के दूसरे उदाहरणों पर भी विचार कर सकते हैं। इन सभी संगठनों की कुछ सामान्य विशेषताओं के रूप में किन किन बातों की पहचान की जा सकती है?

अपने आकार-प्रकार, विस्तार, दक्षता और लक्ष्यों की विशिष्टता में अंतर के बावजूद, उपरोक्त उल्लिखित संगठन बड़े पैमाने पर संचालन को सुविधाजनक बनाने की दिशा में कार्य करते हैं। उनके बारे में स्पष्ट रूप से कहा गया है और लक्ष्यों को परिभाषित किया है कि वे प्राधिकरण और आदेश की श्रृंखला के एक स्थापित पदानुक्रम का अनुसरण करते हैं। सामाजिक कार्रवाई के संदर्भ में भी संगठनों को देखा जा सकता है क्योंकि संगठन में कम से कम निर्णय लेने और कार्य करने की कुछ क्षमता होती है (कोलमैन, 1982; हिंद, 1989)।

आधुनिक औद्योगिक समाज व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए परिष्कृत बड़े पैमाने पर संगठनों पर अपनी निर्भरता के लिए अनोखे हैं। आधुनिक औद्योगिक और औद्योगिक उपरांत समाजों के संगठन आकार और दायरे के हिसाब से बहुत बड़े हैं। तर्क यह दिया जाता है कि श्रम के विशेष विभाजन के बढ़ाने से संगठन भी अधिक परिष्कृत हो जाते हैं।

9.5 संगठनों का दृष्टिकोण

किसी संगठन की प्रकृति और संगठन संरचना के विभिन्न दृष्टिकोण हो सकते हैं। ये दृष्टिकोण हमें यह समझने में मदद करेंगे कि संगठन क्या हैं और कैसे काम करते हैं।

9.5.1 अमिताई एट्ज़ियोनी

अमिताई एट्जियोनी (1969; पृष्ठ 155) संगठनों को "सामाजिक इकाइयों" के रूप में परिभाषित करते हैं जो विशेष लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु मुख्य रूप से उन्मुख होते हैं। एट्जियोनी संगठनों की विशेषताओं के रूप में निम्नलिखित सुझाव देते हैं :

1) श्रम/शक्ति/जिम्मेदारियों के विभाजन, ऐसे विभाजन जानबूझकर कुछ लक्ष्यों को प्राप्त करने लिए किये जाते हैं।

2) बिजली केंद्रों की मौजूदगी जो कि उत्पादकता को नियंत्रित करे, दक्षता की निगरानी करें और समीक्षा के उपरांत इसकी फिर से संरचना करे, और

3) कर्मियों के प्रतिस्थापन, स्वस्थ कर्मचारी/भागीदार पूल को कायम रखना और दूसरों को जो स्थानांतरित किये गए हैं और/या पदोन्नति पाए हैं (एट्जियोनी, 1964)।

एट्जियोनी (1961) संगठन और निचले स्तर के प्रतिभागियों को व्यवस्थापित करने वाले लोगों के बीच सत्ता संबंध के आधार पर संगठनों को विभाजित करते हैं। संबंध निम्न बातों के आधार पर हो सकता हैः 1) यह अनुपालन पर- यह निचले स्तर के प्रतिभागियों को प्रतिबंधों के भय से उनके वरिष्ठ अधिकारियों की मांगों को पूरा करने के लिए जो इसके लिए सहमत हैं या मजबूर हैं। 2) उपयोगितावादी विचारधारा के कारण, अथार्त वे ऐसी चीजे प्राप्त कर रहे हैं जो उनके लिए कीमती हैं। 3) साझा विचार और मूल्य, अर्थात् प्रशासनिक समूह के साथ-साथ निम्न स्तरीय प्रतिभागी समान धारणाएं, मानदंड, मूल्य और विचार को साझा करते हैं।

एट्जियोनी का वर्गीकरण 'अनुरूपता' के तत्व पर आधारित है, जिसमें एट्जियोनी द्वारा यह बताया गया है कि अनुरूपता दो तत्वों पर आकस्मिक है। उन लोगों द्वारा ताकत का इस्तेमाल होता है जो संगठन में निर्णय लेते हैं और निचले स्तर के प्रतिभागियों को भी शामिल करते हैं। एट्जियोनी सुझाव देता है कि शक्ति तीन प्रकार की होती है : थोपी गई (भय और बल नियोजित), लाभकारी (फायदे वाली) और मानक (मानदंडों और मूल्यों पर पारस्परिक समझौते)। इसके साथ उन्होंने यह भी कहा है कि निचले स्तर के प्रतिभागियों की प्रतिभागिता तीन प्रकार की होती हैः 1) अलगाव 2) गणनात्मक तथा 3) नैतिक। एट्जियोनी का मत है कि किसी प्रकार की शक्ति प्रतिभागी के कुछ रूपों से मिलती जुलती है। थोपी गई शक्ति को केवल विमुख प्रतिभागिता के साथ से लागू किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर जेल कैदियों और जेल कर्मचारियों के बीच के संबंध में जबरन-अलगाव होने की ही उम्मीद की जा सकती है, कि जेल कर्मचारी आदेश थोपने वाले होते हैं और जेल कैदियों को जेल के काम काज में प्रतिभागिता से अलगाव होता है। इस संयोजन के आधार पर एट्जियोनी संगठनों के रूप में इन संगठनों को अलग करता है कि जिनके पास 'आदेश' लक्ष्य होते हैं।

ऐसे भी संगठन हैं जिनका 'आर्थिक' लक्ष्य हैं और जिनके पास लाभकारी शक्ति एवं गणनात्मक प्रतिभागिता है। उदाहरणस्वरूप इन्डियन कॉफी हाउस में सभी श्रमिक बिक्री को बढ़ाने के लक्ष्य से जुड़े हैं जिसे वे अपनी व्यक्तिगत वित्तीय लक्ष्यों से जुड़ी आय में सुधार के रूप में देखते हैं।

तीसरे प्रकार का संगठन नैतिक प्रतिभागिता के साथ मानक शक्ति को जोड़ता है। ये संगठन ऐसे हैं जिनका लक्ष्य 'संस्कृति' हैं। उदाहरण के लिए चर्च अपने प्रतिभागियों को कोई मेहनताना नहीं देते हैं और न ही वे उन्हें भाग लेने के लिए मजबूर करते हैं। प्रतिभागी चर्च में भाग लेते क्योंकि वे उन मूल्यों, मानदंडों और विचारों पर विश्वास करते हैं जिसे चर्च प्रचारित करते हैं।

9.5.2 मैक्स वेबर

एट्जियोनी का संगठन की परिभाषा और वर्गीकरण मैक्स वेबर के कार्यों पर आधारित है। नौकरशाही का वेबर मॉडल समाज में प्राधिकरण की प्रकृति पर उनके विस्तृत सिद्धांत के

व्यापक संदर्भ में सामने आया है। उन्होंने औद्योगिक समाजों के संगठनों प्रकाश डाला है और बताया है कि जब उन्हें 'नौकरशाही' के तरीके से प्रशासित किया गया तो वे उच्च दक्षता प्राप्त करने में सक्षम थे । वेबर (1964, पृष्ठ 337) ने स्पष्ट किया कि नौकरशाही प्रशासन जिसमें विश्वसनीयता, अनुशासन की कठोरता के साथ साथ स्थायित्व के कारण किसी भी अन्य से बेहतर था।" यह इस प्रकार के परिणाम की गणना की विशेष रूप से उच्च डिग्री संभव बनाता है... और औपचारिक रूप से सभी प्रकार के प्रशासनिक कार्यों के लिए आवेदन करने में सक्षम है। जिस प्रकार से प्रशासन जैसे के बारे में वेबर नौकरशाही प्रशासन के संबंध में अपने विचारों को व्यक्त करता है यह आधुनिक औद्योगिक समाज के सभी प्रमुख बड़े संगठनों व्यापार, धर्मार्थ संगठनों, धार्मिक संगठनों और यहां तक कि राजनीतिक दलों तक फैला हुआ है।

वेबर का तर्क है कि वांछित की प्राप्ति हेतु नौकरशाही प्रशासन मानव संसाधन के आयोजन का सबसे कारगर तरीका है। वेबर नौकरशाही को बहुत अधिक नियंत्रण अथवा अक्षमता के अंतर्निहित जोखिमों के रूप में नहीं समझता है। नौकरशाही प्रशासन समर्थन करने वाली कई स्थितियों का वह सुझाव देता है जो नौकरशाही को प्रशासन का सबसे प्रभावी रूप बनाते हैं। ये इस प्रकार है : 1) अधिकारियों को व्यवस्थित करने वाली और उनकी शक्ति एवं प्रभाव को लिखित बयान द्वारा निर्देशित करने वाली श्रृंखला। 2) कार्यालयों को पदानुक्रम के हिसाब से व्यवस्थित किया जाता है, जहाँ प्रत्येक क्रमिक स्तर पर सभी को अपनाया जाता है जो कार्यालय आधार पर प्राधिकारी के साथ होते हैं। 3) कार्यालयों की क्षमता के अनुसार ही आदेश जारी किए जाते हैं और उन आदेशों का अनुपालन किया जाता है क्योंकि नियम बताते हैं कि वे उन्हें जारी करने वाले कार्यालय की योग्यता के अंतर्गत होते हैं। 4) नियमों और प्रक्रियाओं का एक स्पष्ट बयान जिसके अंतर्गत प्रत्येक संभावित आकस्मिकता सैद्धांतिक रूप से प्रदान की जाती है। 5) सभी जानकारियाँ अनिवार्य रूप से 'ब्यूरो' के साथ रिकॉर्ड की जाती है/लिखी जाती है ताकि प्रत्येक लिखित रिकॉर्ड्स और फाइलों को सुरक्षित रखा जा सके। 6) कार्यालय हेतु तकनीकी योग्यता के संदर्भ में नियुक्ति की एक संविदात्मक विधि। 7) रोजगार/अनुबंध के मामले में लिखित व्यक्तिगत और व्यापार/आधिकारिक मामलों के बीच एक स्पष्ट अंतर किया जाता है (पुग एट अल।, 1964) ।

नौकरशाही संगठन के संबंध में वेबर की अवधारणा के बारे में लोग विशेष समूह के सदस्य के रूप में भूमिकाएं अदा करते हैं जिन पर उनका कोई नियंत्रण नहीं होता है। इसके स्थान पर वह सुझाव देते हैं कि व्यक्तियों को नौकरशाही प्रशासन में उनकी भूमिकाओं द्वारा नियंत्रित किया जाता है जो व्यक्ति को तर्कसंगत निर्णय हेतु बहुत अधिक अवसर देने की अनुमति प्रदान नहीं करता है। वेबर का यह तर्क है कि नौकरशाही संगठन को ये स्थितियाँ सबसे अधिक दक्ष बनाती हैं। नौकरशाही के अंतर्गत वेबर यह सुझाव देते हैं ।

9.5.3 इरविंग गॉफमैन

संगठनों की उस वर्ग को गोफमैन ने रेखांकित किया जो कुछ मामलों में एक-दूसरे से भिन्न हैं, फिर भी उनमें एक समान विशेषता होती है। अस्पतालों, मठों, जेलों और बोर्डिंग स्कूलों पर विचार करें, ये सभी कई मामलों में एक-दूसरे से भिन्न हैं, फिर भी उनमें एक समान विशेषता होती है और वह यह है कि सभी संगठन में प्रतिभागी हैं। ये संस्थान स्कूलों से कई बातों में भिन्न हो सकते हैं, जहां प्रवेश जेलों के विपरीत स्वैच्छिक है परन्तु जेल जाना बल पूर्वक और अनैच्छिक होता है। इसी प्रकार उन सभी संस्थानों में अंतर हो सकते हैं जैसे सेना का शिविर और जहाँ पर अक्सर लोगों की स्पष्ट सहमति के बिना 'इलाज' किया जाता

है। गोफमैन (1961) द्वारा इन संस्थानों को संपूर्ण संस्थानों का नाम दिया गया हैं। गोफमैन (1961) ने तर्क दिया कि इन सभी संस्थानों के पास अपने प्रतिभागियों की व्यक्तिगत विशेषताओं में अंतर के बाद भी एक समान संरचना होती है, जो 'सामान्य समाज' की मूल व्यवस्था से बहुत भिन्न होती है। उनका सुझाव है कि किसी 'सामान्य समाज' के कार्य, फुर्सत के पल और घर का निर्धारण विशिष्ट परिभाषित क्षेत्रों द्वारा किया जाता है। लोग जीवन के इन विभिन्न क्षेत्रों में और अलग नियंत्रण के तहत अपने जीवन को व्यवस्थित करते हैं। 'संपूर्ण संस्थाएं' संगठन हैं जिससे सभी तीन कार्य निहित क्षेत्र में और एक नियंत्रण के तहत स्थानीयकृत होते है। निवासी, मरीज, कैदी या भिक्षु संबंधित एवं औपचारिक रूप से बनाए गए ढांचे में अपने जीवन को बिताते हैं और थोड़ा दृबहुत एक जैसे अनुभवों से गुजरते हैं।

इन 'संपूर्ण संस्थानों' में निवासियों ने 'रोजगार' (कार्य) और विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति के साथ एक ढाँचा निर्धारित किया है जो रोजगार/अपेक्षित व्यवहार/कार्य के प्रति उनकी अनुरूपता को मजबूत बनाता है और इन संगठनों को चलाने वाले लोगों हेतु न्यूनतम असुविधा पैदा करता है कैदियों और प्रशासनिक कर्मचारियों के बीच बातचीत व्यक्तिपरक होती है और जो बात कैदियों को उनसे जोड़ती है वह है अनुभवों की समानता और कर्मचारियों के लिए एक सामूहिक विरोध जो एक नियंत्रण और शक्तिशाली समूह का गठन करते हैं । उनका तर्क है कि ऐसे संस्थानों में कैदियों को मुक्त होने की चाहत होती है, परन्तु इन स्थानों को छोड़ने पर उन्हें इसकी याद आती है।

गोफमैन यह सुझाव देते हैं कि जब लोग दलों में रहते हैं तब संस्थागत व्यवस्था उनके जीवन की संरचना हेतु बनाई जाती है जिससे उन्हें थोड़ा बहुत प्रशासित किया जाता है।

9.6 संगठनों का वर्गीकरण

जैसा कि हमने उपरोक्त संगठनों को देखा है कि सत्ता संबंधों के आधार पर प्रतिभागियों और प्रशासकों को गोफमैन और एड्ज़ियोनी द्वारा कार्य संगठनों और उपचार संगठनों के रूप में बांटा किया गया है। 'मुख्य लाभार्थी' के आधार पर ब्लौ और स्कॉट (1963) ने चार श्रेणियों में संगठनों को वर्गीकृत करने का एक और रास्ता बताया है। वे सुझाव देते हैं कि ये श्रेणियां निम्न चार हो सकती हैंः 1) पारस्परिक लाभ, वे सभी जो संगठन को बनाते हैं। 2) व्यवसाय, जहां प्रमुख लाभार्थी स्वामी या प्रबंधक हैं। 3) सेवा क्षेत्र, जहां प्रमुख लाभार्थी ग्राहक हैं या संपर्क में रहने वाले आम जनता है और 4) कॉमनवेल, अर्थात जहां प्रमुख लाभार्थी बड़ा जन समुदाय है।

9.7 संगठनात्मक व्यवहार

आम तौर पर लोग उस संगठन का चयन करते हैं जिसका वे व्यक्ति के संगठन की कथित 'उपयुक्तता' के आधार पर हिस्सा बनना चाहते हैं। किसी संगठन से जब लोग जुड़े होते हैं तो केवल यही आशा की जाती है कि संगठन के साथ उनकी संबद्धता (संगठन की भांति वे जो भी भूमिकाएं अदा करते हैं और उनके कार्य की प्रकृति जो भी होती है) उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव डालती है। इसके साथ साथ यह भी आशा की जाती है कि संगठन से जुड़े लोग भी संगठन के चरित्र पर प्रभाव डालते हैं। इसलिए व्यक्तियों और संगठनों के बीच होने वाले अंतःक्रिया को देखना जरुरी है ।

9.7.1 संगठन के प्रति सदस्यों का दृष्टिकोण

संगठन के प्रति प्रतिभागियों और प्रशासकों के नजरिए इस अन्तःक्रिया का एक महत्वपूर्ण तत्व हैं। उदाहरण के तौर पर किसी आरोग्य- आश्रम के प्रशासक प्रतिभागियों को नियंत्रित एवं प्रतिबंधित करने के लिए अपनी भूमिका से बाध्य होते हैं और वह भी अक्सर उनकी इच्छा के विपरीत। उन्हें इस बात को सुनिश्चित करना होता है कि आरोग्य-आश्रम का कार्य कैदियों से विरोध से प्रभावित न हो। प्रशासक यह सुनिश्चित करने के लिए ज़िम्मेदार होते हैं कि कैदी सुविधा से दूर न हो जाएँ। इसके विपरीत एक समान ढांचे के बावजूद कई मठ, प्रतिभागियों और कैदियों के दृष्टिकोण के चलते आरोग्य- आश्रमों से भिन्न होता है। आरोग्य- आश्रमों में कैदियों की इच्छा (ऊँची दीवार, निगरानी आदि) को रोकने की व्यवस्था की गई होती है, जबकि मठों में ऐसी कोई निगरानी नहीं होती है। यह हमें एक और महत्वपूर्ण तत्व के बारे में बताता है जो कि इन संगठनों में प्रवेश करने वाले व्यक्तियों की भूमिका से संबंधित है।

9.7.2 सदस्यों को सौंपी गई भूमिकाएं

किसी संगठन में आने पर व्यक्तियों को भूमिकाएं दी जाती हैं। ये भूमिकाएँ अपनी-अपनी भूमिका-अपेक्षाओं के साथ आती हैं और ये उम्मीदें इस लिहाज से समाकलित हैं कि यह संगठन के सुचारु कामकाज को सुनिश्चित करती है। प्रत्येक भूमिका उन्हें सौंपे गए विशिष्ट कार्य और नियमों का एक ढ़ांचा है जिसका अनुसरण करना आवश्यक है। संगठन के अन्दर के व्यक्तियों के बीच पारस्परिक संबंध उन भूमिकाओं द्वारा प्रभावित होता है जो कि संगठन से जुड़ने पर वे प्राप्त करते हैं। उदाहरण के लिए जेल में एक कैदी और गार्ड की दोस्ती की संभावना दुर्लभ होती है और उनकी भूमिकाओं में प्रतिद्वंद्विता होती है। इन तत्वों का असर संगठनों के कामकाज पर पड़ता है।

किसी संगठन में प्राप्त भूमिकाओं से व्यक्तियों के सामाजिक अनुभव उनके जीवन को प्रभावित करते हैं। उनका बाह्य सामाजिक व्यवहार संगठनों के अंदर उनके अनुभवों से प्रभावित हो जाता है। 'मॉडर्न टाइम्स' नामक 1936 की अपनी फिल्म में चार्ली चैपलिन ने सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करने वाले संगठन के अनुभवों को रेखांकित किया है। उसने इसमें एक कारखाना कार्यकर्ता की भूमिका निभाया है जो बोल्ट कसकर अपने दिन बिताता है। कलाई बार बार इतनी घुमाई जाती है कि वह इसी गति से अनायास ही घूमना शुरू कर देती है।

9.8 सारांश

संस्थान व्यवहार, आचरण और आचरण संहिता की उम्मीद होते हैं जिन्हें व्यक्तियों को पूरा करने के लिए बाध्यता महसूस करते हैं। संस्थाओं की कार्य प्रणाली सम्मेलनों और एक संस्था से जुड़े नियमों को समझने और इनके द्वारा अपने जीवन को जीने के लिए बाध्यता महसूस करने वाले लोगों पर आकस्मिक है। इसके विपरीत संगठनों ने स्पष्ट रूप से नियम बताए हैं कि कोई व्यक्ति संगठन के साथ अपनी संबद्धता के कारण इन्हें पूरा करने के लिए बाध्य है। संस्थान एक समान आदतों, मूल्यों और मानदंडों वाले होते हैं जिनमे किसी व्यक्ति को समाजीकृत किया जाता है जबकि संगठनों में स्पष्ट संबंधन होते हैं जो सदस्यों को गैर-सदस्यों से अलग करते हैं। समाज के भीतर एकजुटता और सामंजस्य को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक इकाइयों के रूप में कार्य करने वाली विभिन्न प्रकार की संस्थाएं हैं। संगठन संसाधनों पर बेहतर और अधिक कुशल नियंत्रण की सुविधा के लिए काम करते हैं। ये

समाज की स्पष्ट इकाइयां होती हैं जो सामाजिक प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाने की दिशा में कार्य करती हैं।

बोध प्रश्न

1) संस्थाएं क्या हैं ? विभिन्न प्रकार की संस्थाएं क्या हैं ? उदाहरण देते हुए समझाएं।

.....

.....

.....

.....

.....

2) संस्थाओं पर कार्यात्मकता और द्वंद्व के परिप्रेक्ष्य में क्या अन्तर है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) एक संगठन के रूप में चर्च पर चर्चा करें ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) नौकरशाही से वेबर का क्या तात्पर्य है? नौकरशाही का कौन सा गुण उसे प्रशासन की कुशल प्रणाली बनाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

5) एट्जियोनी ने अपनी रचना में कौन से विभिन्न प्रकार के संगठनों का उल्लेख किया हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

6) जेल के उदाहरण का इस्तेमाल करते हुए एट्जियोनी और गॉफमेन के दृष्टिकोण की तुलना करें।

.....

.....

.....

.....

.....

9.9 संदर्भ

बर्गर, पी.एल. एवं ल्यूकमेन, टी. (1967) सोशल कंस्ट्रक्शन ऑफ रियलिटीः न्यू यॉर्कः अंकर बुक्स

ब्लाउ, पी.एम. एवं स्कॉट, डब्ल्यू.आर. (1963) फॉर्मल ऑर्गेनाइजेशनः ए कंपेरेटिव एप्रोच, रूटलेज एंड केगेन पॉल

कोलमेन, जे. (1982), द एसीमेट्रिक सोसायटी, साएराक्यूज, एनवाईः साएराक्यूज यूनिवर्सिटी प्रेस

एट्ज़ियोनी, ए. (1961), ए कंपेरेटिव एनालाएसिस ऑफ कॉम्प्लेक्स आर्गेनाइजेशसः ऑन पावर, इन्वॉल्वमेंट, एंड देयर कोरेलेट्स, न्यूयॉर्कः फ्री प्रेस ऑफ ग्लेंकोइ

एट्ज़ियोनी, ए. (1964), मॉडर्न आर्गेनाइजेंशस, एंगलवुड क्लिफ्स, एन.जे.ः प्रेंटिस-हॉल

एट्ज़ियोनी ए. (1969), ए सोशियोलॉजिकल रीडर ऑन कॉम्पलेक्स आर्गेनाइजेशन, न्यूयॉर्कः हॉल्ट, राइनहार्ट एवं विंस्टन

गेहलेन, ए. (1980) द कंस्टीटयूशन ऑफ सोसायटीः आउटलाइन ऑफ द थ्योरी ऑफ स्ट्रक्चरेशन, कैम्ब्रिजः पॉलिटी प्रेस।

गिंसबर्ग एम (1921) द साइकोलॉजी ऑफ सोसायटीः लंदनः मेथ्यून

हिंडीस, बी. (1989) पॉलिटिकल चॉइस एंड सोशल स्ट्रक्चरः एन एनालाएसिस ऑफ एक्टर्स, इंटेरेस्ट्स एंड रेशनलिटी, लंदनः एडवर्ड एल्गर।

नाइट, जे (1992), इंस्टीटयूशंस एंड सोशल कॉनफ्लिक्ट, कैम्ब्रिज, एनवाईः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

पग, डी.एस. हिकसन, डी.जे. एवं हिनिंग्स, सी.आर. (1964), राइटर्स ऑन ऑर्गेनाइजेशंस, हचींसनः सेज प्रकाशन

समर, डब्ल्यू.जी. (1906), फॉकवेजः ए स्टडी ऑफ द सोशियोलॉजिकल इंपोर्टेस ऑफ यूसेज, मैनर्स, कस्टम्स, मोर्स एंड मोरल्स, बोस्टन, एमएः गिन एंड कंपनी

टर्नर, जोनाथन, 1997, द इंस्टीटयूशनल ऑडर्रः न्यूयॉर्कः लोंगमेन

वेबेर, एम (1964) द थ्योरी ऑफ सोशल एंड इकोनॉमिक आर्गेनाइजेशन, न्यूयॉर्कः द फ्री प्रेस

इकाई 10 प्रस्थिति और भूमिका*

संरचना

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 प्रस्थिति की अवधारणा

10.2.1 निर्दिष्ट और उपार्जित प्रस्थिति

10.2.2 प्रमुख प्रस्थिति

10.3 भूमिका की अवधारणा

10.3.1 भूमिका सिद्धांत

10.4 भूमिकाओं का वर्गीकरण

10.4.1 निर्धारित भूमिकाएं और उपलब्ध भूमिकाएं

10.4.2 संबन्धित और गैर–संबन्धित भूमिकाएं

10.4.3 मूल, सामान्य और स्वतंत्र भूमिकाएं

10.5 भूमिका व्यवस्थाः सरल और जटिल समाज

10.5.1 सरल समाजों में भूमिकाएं

10.5.2 जटिल समाजों में भूमिकाएं

10.6 भूमिकाओं के आयाम

10.6.1 एकाधिक भूमिकाएँ और भूमिका समूह

10.6.2 भूमिका संकेत

10.6.3 भूमिका परिवर्तन

10.6.4 भूमिका संघर्ष और तनाव

10.7 सारांश

10.8 बोध प्रश्न

10.9 संदर्भ ग्रंथ

10.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आपको समझने में सक्षम होना चाहिएः

- प्रस्थिति की अवधारणा और भूमिकाओं के साथ इसके संबंध की व्याख्या कर सकेंगे;
- प्रस्थिति के प्रकार के बीच अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- भूमिका की अवधारणा पर चर्चा कर सकेंगे;
- भूमिकाओं को समझने में दोनों दृष्टिकोणों के बीच अंतर कर सकेंगे;

*श्रीति गांगुली, शोधार्थी, जे. एन. यू

- भूमिकाओं का वर्गीकरण कर सकेंगे;
- सरल और जटिल समाजों में भूमिकाओं के बीच अंतर कर सकेंगे;
- भूमिकाओं के विभिन्न आयामों पर चर्चा कर सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

यह इकाई आपको प्रस्थिति और भूमिका की अवधारणा के साथ पेश करने की कोशिश करती है जो कि किसी भी समाज की सामाजिक संरचना के महत्वपूर्ण पहलू हैं। यह सरल और जटिल समाजों और भूमिका समूह, एकाधिक भूमिकाओं, भूमिका–संकेतों और भूमिका–विरोध ी जैसे भूमिकाओं के विभिन्न आयामों पर चर्चा करता है। यद्यपि इकाई में अलग–अलग स्थिति और भूमिका पर चर्चा की गई है, लेकिन दोनों के बीच संबंध की पुनरावृत्ति की जाएगी ।

10.2 प्रस्थिति की अवधारणा

सरल शब्दों में, प्रस्थिति समाज में किसी व्यक्ति द्वारा ग्रहण कर लिया जाता है। जीवनभर में एक व्यक्ति उम्र, लिंग, वर्ग, व्यवसाय और शिक्षा की तर्ज पर अलग–अलग प्रस्थितियां ग्रहण करता है। एक व्यक्ति की एक समय में कई प्रस्थितियां हो सकती हैं जैसे कि बेटी, सामाजिक कार्यकर्ता, बुक–रीडिंग क्लब सदस्य, गिटारवादक और एक कंपनी में एक प्रबंध ाक आदि। किसी व्यक्ति की ग्रहण की गई सभी प्रस्थितियों का संयोजन प्रस्थिति समूह कहा जाता है।

लिंटन (1936) ने ''अधिकारों और कर्तव्यों के संग्रह'' के रूप में प्रस्थिति को परिभाषित किया (पष .113)। प्रत्येक प्रस्थिति में उससे जुड़ी कुछ व्यवहारिक उम्मीदें होती हैं जिन्हें हम सामाजिक भूमिकाएं कहते हैं (बाद में विस्तार से चर्चा की जाएगी)। प्रस्थिति और भूमिका के बीच संबंध को रेखांकित करते हुए, लिंकन लिखते हैंः ''एक भूमिका प्रस्थिति के गतिशील पहलू का प्रतिनिधित्व करती है – जब वह (एक व्यक्ति) अधिकार और कर्तव्यों को लागू करता है जो एक प्रस्थिति का प्रभाव डालता है, तो वह एक भूमिका निभा रहा होता है – '' (लिंकन 1 9 36ः 114)। इसलिए, प्रस्थिति ग्रहण की जाती है और भूमिका निभाई जाती है। सामाजिक प्रस्थिति और सामाजिक भूमिका को समझने की महत्वपूर्ण अवधारणाएं हैं कि कैसे सामाजिक जीवन व्यवस्थित किया जाता है और गतिविधियों को वितरित किया जाता है।

आदर्श रूप से प्रस्थिति शब्द मात्र समाज में किसी व्यक्ति द्वारा ग्रहण किए गए पदों को संदर्भित करता है, चाहे पुरुष या महिला, वकील या दुकानदार, ब्राह्मण या दलित हम अक्सर हमारे सामान्य रोजगार के उपयोग में उच्च और निम्न स्तर की भावनाओं को देखते हैं। स्थिति वर्गीकरण इस बात पर आधारित होते हैं कि हम कहाँ रहते हैं, हम क्या करते हैं, हम क्या खाते हैं, हम किस प्रकार के स्कूलों या संस्थानों में शामिल होते हैं, हम किस सामाजिक श्रेणी में हैं और इसी तरह। इसलिए, प्रस्थिति सामाजिक वर्गीकरण का आधार भी है और व्यक्तियों के केवल एक पद का ग्रहण नहीं है बल्कि इन पदों को पदानुक्रम में भी रखा जाता है। उदाहरण के लिए कहें, एक व्यवसाय श्रम विभाजन में दूसरे से अलग नहीं है बल्कि प्रतिष्ठा और अलग–अलग पुरस्कृत के मामले में भी स्तरीकृत किया जाता है।

समाजशास्त्री, मैक्स वेबर ने प्रस्थिति को ''सम्मान के सकारात्मक या नकारात्मक सामाजिक अनुमान'' (गेर्थ एंड मिल्स 1 9 46: 187) के रूप में परिभाषित किया और इसे ''जीवन शैली'' से जोड़ा । जीवनशैली के प्रतीक आवास, कपड़े, भाषा बोली जाने वाली, भाषण और व्यवसाय के शिष्टाचार (कुछ नामों के साथ) द्वारा किया जाता है। यही कारण है कि रोजमर्रा की जिंदगी में एक लक्जरी कार या समृद्ध पड़ोस में रहना किसी व्यक्ति की प्रस्थिति का प्रतीक माना जाता है। हालांकि स्थिति सामान्य रूप से किसी व्यक्ति की आय या संपत्ति द्वारा निर्धारित की जाती है, मार्क्स के विपरीत, वेबर ने तर्क दिया कि वर्ग और प्रस्थिति हमेशा ओवरलैप (आच्छादित) नहीं हो सकती है। प्रस्थिति सामाजिक स्तरीकरण का एक स्वतंत्र आधार हो सकता है। इस प्रकार संपन्न और गैर सम्पन्न संपत्ति दोनों ही एक ही प्रस्थिति समूह से संबंधित हो सकते हैं।

जैसे ही प्रस्थिति श्रेणीबद्ध रूप से व्यवस्थित होती है, सकारात्मक या नकारात्मक मूल्य मे होती है, प्रत्येक प्रस्थिति में विशेषाधिकार/गैर विशेषाधिकार जुड़े होते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में एक दलित या पूर्व अस्पृश्य प्रस्थिति की स्थिति से, व्यक्तियों को सार्वजनिक कुओं तक पहुंचने, अन्य जातियों के साथ भोजन साझा करने, या ऊपरी जाति के परिवार से शादी करने से रोका जाता है। इसी तरह, संयुक्त राज्य अमेरिका में, काला होने के नाते स्कूलों, आवास और सार्वजनिक स्थानों में रोजगार और अलगाव के अधिकार से इनकार करने का आधार बन जाता है।

हालांकि, किसी प्रस्थिति को सौंपा सम्मान या प्रतिष्ठा अपरिवर्तनीय नहीं है। उदाहरण के लिए, समाज जहां एक महिला, अक्षम, काला या 'अस्पृश्य' होने के नाते इन प्रस्थितियों को कमतर या बदनाम (इरविंग गॉफमैन की अवधारणा) माना जाता था और उनकी भूमिका अब सकारात्मक और सम्मान के लिए संघर्ष के कारण वर्षों से सकारात्मक रूप से देखी जाती है। इसलिए, दोनों प्रस्थितियां और भूमिकाएं गतिशील हैं और बदलती रहती हैं।

लिंकन (1936) दो प्रकार की प्रस्थितियों के बीच अंतर करते हैं :

10.2.1 निर्दिष्ट और उपार्जित प्रस्थिति

निर्दिष्ट स्थितियां : ''वे हैं जो व्यक्तियों को उनके सहज अंतर या क्षमताओं के संदर्भ में निर्दिष्ट किए जाते हैं'' (पी .115)। प्रस्थिति के लिए सार्वभौमिक रूप से प्रयुक्त मानदंड आयु, लिंग, नातेदारी, और नस्ल हैं। किसी विशेष सामाजिक श्रेणी में एक व्यक्ति का जन्म जैसे कि वर्ग और जाति भी कई समाजों में प्रस्थितियों के लिए कसौटी बनाई जाती है लेकिन सभी समाजों मे नहीं।

उपार्जित प्रस्थितिः उपार्जित प्रस्थिति वे हैं जो ''प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत प्रयास से पूर्ण किए जाने के लिए खुली हैं'' (वही)। ये किसी व्यक्ति के जीवनकाल में गृहीत किए जाते हैं। इस प्रकार व्यवसाय और शिक्षा को हासिल की गई प्रस्थिति कहा जाता है। पत्नी या पति की वैवाहिक स्थिति भी उपार्जित प्रस्थिति कही जाती है।

हालांकि, दोनों के बीच अंतर रेखा उतनी स्पष्ट नहीं है जितनी वे प्रतीत होती हैं। उदाहरण के लिए, यद्यपि निर्दिष्ट प्रस्थिति जन्म के समय तय होती है, लेकिन वे अपरिवर्तनीय नहीं हैं। कुछ लोग जीवन में बाद में सेक्स (लिंग) में परिवर्तन करते हैं। लंबे समय तक लिंग को श्रेणियों में विभाजित किया गया था जो स्त्री और पुरुष है, हालांकि अब ट्रांसजेंडर की तीसरी विस्तृत श्रेणी है जिसमें समलैंगिकों, ट्रांस–लैंगिक (कुछ नामों के लिए) मान्यता के लिए संघर्ष के परिणाम के रूप में कई हिस्सों में भी मान्यता प्राप्त है। इसके अलावा, सख्ती से वर्ग या उस मामले के लिए जाति को निर्धारित और हासिल की गई दो श्रेणियों में से

किसी एक में भी विभाजित करना मुश्किल है। यह जानना भी जरूरी है कि सभी उपार्जित प्रस्थिति पूरी तरह से मेरिट पर आधारित हैं या श्वेत या पुरुष या ऊपरी जाति होने की निर्धारित स्थिति भी प्रस्थिति के अर्जन को प्रभावित कर सकती है।

10.2.2 प्रमुख प्रस्थिति (मास्टर स्टेटस)

हर समाज में हमेशा एक ऐसी प्रस्थिति होती है जो अन्य सभी प्रस्थितियों को ढंकती है या दूसरों द्वारा अधिक महत्व दिया जाता है। इसे मास्टर स्टेटस कहा जाता है। उदाहरण के लिए लिंग, और जाति अक्सर अत्यधिक स्तरीकृत समाजों में मास्टर प्रस्थितियां बन जाती है। संघर्ष समाजशास्त्री अक्सर लिंग और जाति की निर्धारित स्थितियों के साथ संलग्न होते हैं क्योंकि वे तर्क देते हैं कि ये आम तौर पर आय, व्यवसाय, शिक्षा, सामाजिक नेटवर्क आदि सहित व्यक्ति के जीवन के अवसरों को आकार देते हैं।

इसी प्रकार, मानसिक या शारीरिक विकलांगता भी मास्टर स्थिति बन सकती है और समाज के रोजमर्रा के व्यवहार को अक्षम लोगों के प्रति नियंत्रित कर सकती है। बॉक्स 1 दिखाता है कि अक्षमता मास्टर प्रस्थिति कैसे बन सकती है।

बॉक्स 1.

क्या अक्षम लोगों के लिए नया अधिनियम दिव्यांग महिलाओं की जरूरतों का प्रतिनिधित्व करता है?

दीपा और साक्षी मलिक दोनों ने भारत के लिए पदक जीते हैं। लेकिन दोनों के बीच समानताएं शायद वहां खत्म होती हैं। एक सेना अधिकारी और दो की मां की पत्नी व्हीलचेयर बाध्य दीपा ने 2016 को पैराओलम्पिक्स में शॉट–पुट में अपने रजत पदक से गर्व किया, भारतीय महिला द्वारा पहली बार पैरालम्पिक पदक, जबकि साक्षी, रियो में कांस्य पदक के साथ ओलंपिक ओलंपिक में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला पहलवान बन गई। लेकिन जबकि साक्षी की ओलंपिक की जीत ने उन्हें गृहिणी बना दिया, दीपा का कहना है कि हालांकि भारत सरकार और उनके स्वयं के राज्यों ने पैरा–एथलीटों को लाया, लेकिन सक्षम षरीर के एथलीटों को देश भर मे अधिक महत्व दिया गया और निगमों ने उन्हे समर्थन (एंडोर्समेंट) सौदों पर हस्ताक्षर करने की तलाश की।

– हिंदुस्तान टाइम्स, 08 जनवरी, 2017

10.3 भूमिका की अवधारणा

इस बारे में सोचें कि हमारा प्रत्येक दिन हमारी अलग–अलग प्रस्थितियों से जुड़ी अलग–अलग भूमिकाओं के साथ कैसे शुरू होता है। जैसे कई प्रस्थितियां हैं, उनमें से प्रत्येक के साथ भूमिकाएं जुड़ी हैं। उदाहरण के लिए, एक महिला बेटी, बहन, छात्र, एक निजी शिक्षक, एक दोस्त और अन्य की भूमिका निभाती है। गिडेंस और सटन (2014) भूमिकाओं को परिभाषित करते हैं ''सामाजिक रूप से परिभाषित उम्मीदें कि जिसमें दी गई प्रस्थिति में एक व्यक्ति (सामाजिक स्थिति) आगे बढ़ता है '' (पृ .91)। उदाहरण के लिए, जब यातायात की भीड़ होती है, तो हम यातायात पुलिस को यातायात का प्रबंधन करने और वाहनों के प्रवाह को कम करने की उम्मीद करते हैं। इसी प्रकार, एक रेस्तरां में ग्राहक वेट्रेस को मेनू प्रदान करने, आदेशों को नोट करने और भोजन की सेवा करने की अपेक्षा करते हैं।

भूमिकाएं अंतःक्रिया में किसी प्रकार के सामाजिक आदेश और भविष्यवाणी को बनाए रखने में मदद करती हैं। टर्नर (2006) भूमिकाओं को ''व्यवहार और दृष्टिकोण के समूह'' के रूप में परिभाषित करता है और तर्क देता है कि भूमिका व्यक्तिगत व्यवहार और सामूहिक स्तर पर सामाजिक व्यवहार को व्यवस्थित करने में मदद करती है। बैंटन (1965) की परिभाषा में, भूमिकाएं ''अधिकारों और दायित्वों का समूह'' हैं और एक व्यक्ति का दायित्व उसके साथी का अधिकार क्या है (पी 2)। तो एक रेस्तरां में एक वेट्रेस सेवा करने के लिए बाध्य है और ग्राहक को सेवा लेने का अधिकार है। इस तरह, ''भूमिका की अवधारणा'',मे बैंटन लिखते हैं, ''सहयोग के तत्वों का अध्ययन करने के लिए उपलब्ध साधनों में से एक प्रदान करता है'' (वही)।

न्यूकॉम्ब ने अपेक्षित व्यवहार और व्यक्तियों के वास्तविक व्यवहार के बीच अंतर किया है। अपेक्षित व्यवहार वह है जिसे एक व्यक्ति को उस स्थिति और भूमिका के अनुसार निभाने की उम्मीद होती है। व्यक्ति का वास्तविक व्यवहार अपेक्षित व्यवहार से अलग हो सकता है। बैंटन (1965: 28–29) ने इस भेद को और परिष्कृत किया और कहा कि वास्तविक व्यवहार से संबंधित हो सकता है–

1) **भूमिका संज्ञानः** व्यक्ति के अपने विचार जो उचित हैं, या,

2) **अपेक्षाएंः** अन्य लोगों के विचारों से संबंधित कि वह क्या करेगा, या,

3) **मानदंडः** अन्य लोगों के विचारों से संबंधित कि उन्हें क्या करना चाहिए।

उदाहरण के लिए, एक रसोईये की भूमिका ले लो। नीरज एक होटल में एक मुख्य षेफ(रसोईये) की प्रस्थिति को ग्रहण कर लिया। एक रसोईये के रूप में, उससे भोजन पकाने के लिए समग्र पर्यवेक्षण और समन्वय की भूमिका निभाने की उम्मीद है, जिन्हें भोजन तैयार करना है। इसके अलावा, उनमें से कुछ सामान्य अपेक्षाओं में रसोई के नियमित कार्य वातावरण में स्वच्छता मानकों के अनुरूप अनुशासन और रखरखाव को सुनिश्चित करना शामिल है।

भूमिका सीखना एक छोटी उम्र में शुरू होता है जब बच्चे यह देखने लगते हैं कि कैसे उनके आसपास के लोग उनके साथ और एक दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं। असल में बच्चे अक्सर भूमिका निभाते हुए गेम में संलग्न होते हैं जहां वे एक मां, पिता या शिक्षक की भूमिका निभाते हैं। व्यक्तियों के पास उनके जीवन में भूमिका मॉडल भी होते हैं जिनके कुछ पैटर्न/व्यवहार किसी के अपने व्यवहार में शामिल होते हैं। एक आदर्श मॉडल परिवार, पड़ोस, स्कूल या यहां तक कि कुछ दूरस्थ, असंबंधित व्यक्ति भी व्यक्ति हो सकता है जिसे हमने सोशल मीडिया में देखा है।

हमारे दैनिक जीवन में, हम आसानी से बिना किसी प्रयास के एक भूमिका से दूसरे में स्विच करते हैं और एक ही समय में अलग–अलग भूमिका निभाते हैं। एक बेटी के रूप में कैसे व्यवहार करना है, यह एक दोस्त के रूप में कैसे व्यवहार करना है यह उससे अलग है। इसी तरह, सामाजिक परिस्थितियां भी भूमिका निभाती हैं जिसे हम निभाते हैं। वर्कस्पेस के औपचारिक सेट अप में हम कैसे व्यवहार करते हैं, यह अलग है कि हम घर पर कैसे व्यवहार करते हैं। इस प्रकार हम अपने जीवन और भूमिकाओं को विभाजित करते हैं। तो एक आपराधिक वकील घर पर अलग व्यवहार करता है जैसा कि वह अदालत में व्यवहार करता है। हालांकि, यह कहने के लिए कि हर कोई सामाजिक रूप से निर्धारित उम्मीदों के अनुरूप है, वह सच नहीं होता। अपने रोजमर्रा के जीवन में व्यक्ति लगातार भूमिका निभाते हैं। किसी विशेष स्थिति मे सौंपी गई भूमिका को भी चुनौती दी जाती है। उदाहरण के लिए, भारत में ऐतिहासिक रूप से महिलाओं से घरेलू काम करने की उम्मीद की जाती

थी और वह घर के निजी क्षेत्र में काफी हद तक सीमित था। हालांकि, महिलाएं अब ऐसी भूमिका निभाती हैं जो पारंपरिक रूप से शहरी भारत में पुरुषों से अपेक्षा की जाती थी। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सामाजिक परिवर्तन धीमा है और इसमें कई साल लग सकते हैं और कभी–कभी समेकित संघर्ष भी हो सकते हैं।

10.3.1 भूमिका सिद्धांत

समाजशास्त्र में भूमिका सिद्धांतः संरचनात्मक और अंतःक्रियावादी दृष्टिकोण

भूमिकाओं को समझने के लिए दो अलग–अलग तरीकों से या विचार के दो स्कूलों ने प्रस्तावित किया है। संरचनावादी (लिटन, बैंटन, पार्सन्स और मेर्टन) सामाजिक संरचना में स्थितियों से जुड़े मानदंडों और अपेक्षाओं के रूप में भूमिकाएं देखते हैं जहां व्यक्तियों को ''भूमिका निभाने'' में सामाजीकृत किया जाता है। लिटन (1936) लिखते हैंः ''–किसी भी समाज के सदस्यों को उनकी प्रस्थिति में समायोजित किया जाता है और समाज जितना आसानी से काम करेगा, उतना ही मजबूत होगा'' (लिंकन 1936ः 115)। इस तरह प्रकार्यवादी भी व्यक्तियों की भूमिका पर सहमति ग्रहण करता है।

दूसरी ओर सामाजिक अंतःक्रियावादी (मीड, टर्नर) का तर्क है कि यद्यपि संरचना से बंधे होने से व्यक्ति और उसकी उम्मीदें उनकी भूमिकाओं की व्याख्या और मूल्यांकन करती हैं और वार्ता में लगी होती हैं। प्रकार्यवादियों के लिए यह दी गई अपेक्षाओं के आंतरीकीकरण के बजाय ''भूमिका बनाने'' की एक रचनात्मक प्रक्रिया है।

10.4 भूमिकाओं का वर्गीकरण

हम आगे भूमिकाओं को वर्गीकृत कर सकते हैं 1) निर्दिष्ट भूमिकाएं और उपार्जित भूमिकाएं 2) संबंधपरक और गैर–संबंधपरक भूमिकाएं 3) बुनियादी, सामान्य और स्वतंत्र भूमिकाएं।

10.4.1 निर्दिष्ट और उपार्जित भूमिकाएं

निर्दिष्ट प्रस्थितियां – निर्दिष्ट भूमिकाएं जन्म के समय दी जाती हैं। उस समय से जब कोई व्यक्ति पैदा होता है, तब भूमिका सीखना शुरू होता है जिसे हम समाजीकरण के रूप में जानते हैं। ये भूमिकाएं किसी के लिंग (लिंग), आयु, संबंध, जाति, वर्ग आदि से संबंधित हैं।

उपार्जित भूमिकाएँ – उपार्जित भूमिकाएं वे हैं जो कि एक किसान, विक्रेता, बैंकर, दुकानदार, चालक, वकील, प्रोफेसर आदि की व्यावसायिक भूमिकाएँ योग्यता के आधार पर जीवनपर्यंत में काफी हद तक अधिगृहीत की जाती हैं।

10.4.2 संबंधपरक और गैर–सबंधपरक भूमिकाएं

कुछ भूमिकाएं हैं जो प्रकृति में पूरक हैं और किसी अन्य के संबंध में कल्पना की जाती हैं और परिभाषित की जाती हैं। संबंधपरक भूमिका का एक अच्छा उदाहरण एक ऐसी पत्नी है जिसे पति के बिना नहीं माना जा सकता है। इसी तरह, देनदार की भूमिका किसी लेनदार की भूमिका के बिना मौजूद नहीं हो सकती है।

दूसरी ओर गैर–संबंधपरक भूमिकाएं संगीतकार, शोधकर्ता और चित्रकार की भूमिका जो किसी पर निर्भर या पूरक नहीं हैं। आयु और लिंग भूमिकाएं गैर– संबद्धपरक भूमिकाओं की श्रेणी में काफी हद तक आती हैं जबकि संबंध भूमिकाओं को संबंधपरक के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

10.4.3 मूल,सामान्य और स्वतंत्र भूमिकाएं

बैंटन (1965: 33) ने एक पैमाना विकसित किया जिसकी सीमा अन्य भूमिकाओं से स्वतंत्र भूमिकाओं से मुक्त है।

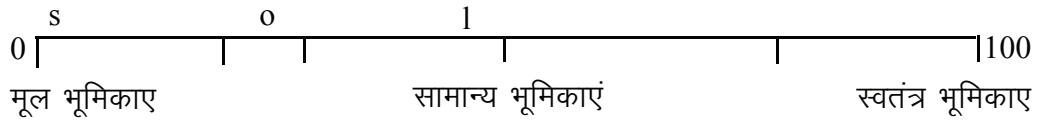

एस = सेक्स भूमिकाएं

ए = आयु भूमिकाएं

व = व्यावसायिक भूमिकाएं

एल = अवकाश भूमिकाएं

- **मूल भूमिकाएं–** मूल भूमिकाएं लिंग और उम्र द्वारा निर्धारित की जाती हैं, जो जन्म के समय व्यक्तियों के लिए निर्धारित होती हैं और ऐसी भूमिकाएँ में सामाजिक संदर्भों मे काफी संख्या मे व्यवहार को आकृति देती है।

- **सामान्य भूमिकाएं –** समान्य भूमिकाएं ज्यादातर व्यक्ति की योग्यता के आधार पर प्रदान की जाती हैं।

- **स्वतंत्र भूमिकाएं –** स्वतंत्र भूमिकाएं योग्यता द्वारा निर्धारित की जाती हैं और अन्य भूमिकाओं के लिए बहुत कम प्रभाव डालती हैं और जिस तरह से लोग प्रतिक्रिया देते है उस व्यक्ति को जो स्वतंत्र भूमिका निभाते हैं। स्वतंत्र भूमिकाओं के उदाहरण अवकाश भूमिकाएं और कई व्यावसायिक भूमिकाएं हैं।

आम तौर पर एक व्यक्ति की यौन भूमिका किसी व्यक्ति की आचरण को आकार देती है और दूसरों की उसकी ओर प्रतिक्रिया किसी अन्य भूमिका से अधिक होती है। व्यावसायिक भूमिकाएं लोगों को विशेष रूप से कार्यस्थल या सामाजिक सभाओं में किसी व्यक्ति को प्रतिक्रिया देने के तरीके को भी आकार देती हैं। अवकाश भूमिकाएं अधिक स्वतंत्र हैं और उदाहरण के लिए एक विशेष सेटिंग के बाहर उसके सीमित प्रभाव है,उदाहरण के लिए गोल्फ क्लब में गोल्फर।

बॉक्स 3 : सेना में युद्ध की भूमिका के लिए महिलाएं

द हिंदू, नई दिल्ली, 04 जून, 2017

एक परिवर्तनकारी कदम में, भारतीय सेना महिलाओं के लिए युद्ध की स्थिति मे भूमिका के लिए तैयार है, केवल कुछ देशों ने विभाजित लिंग की बाधा तोड़ी है – सेना प्रमुख ने कहा कि वह महिलाओं को जवानों के रूप में भर्ती करने के लिए तैयार हैं और यह मामला उठाया जा रहा है सरकार के साथ।

इस पैमाने में विभिन्न भूमिकाओं का स्थान एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न होगा। प्राचीन समाजों में, उदाहरण के लिए, लिंग और उम्र (बैंटन 1 9 65: 34) से जुड़ी अत्यधिक अविभाज्य मूल भूमिकाएं थीं लेकिन उन्नत औद्योगिक समाजों में उम्र और लिंग भूमिकाओं का महत्व सीमित और कम है। हम उन्नत समाजों में और अधिक स्वतंत्र भूमिकाएं देखते हैं। उदाहरण के लिए, बुशमेन की प्राचीन समाज में एक महिला की भूमिका उसके

लिंग से जुड़ी हुई थी और वह पुरुषों के लिए परिभाषित भूमिकाओं को निभाने से प्रतिबंधित थी। हालांकि, आधुनिक समाजों में महिलाएं महिला प्रबंधक या डॉक्टर की तरह अधिक स्वतंत्र भूमिका निभाती हैं जहां पुरुषों के समान तरीके से उनका आकलन होता है।

10.5 भूमिका व्यवस्थाः सरल और जटिल

बैंटन (1965) के मुताबिक सामाजिक संगठन में बदलाव को समझने के तरीकों में से एक व्यक्ति को कसौटी के आधार पर मानदंडों का अध्ययन करना है। सरल समाजों में भूमिका आवंटन जटिल औद्योगिक समाजों से भिन्न है।

10.5.1 सरल समाजों में भूमिकाएं

दक्षिणी अफ्रीका में कालाहारी रेगिस्तान में बुशमेन और आर्कटिक वेस्ट में एस्किमो जैसे सबसे सरल समाजों में, उम्र, लिंग और रिश्ते के प्राकृतिक मतभेदों के आधार पर भूमिका आवंटित की जाती है। आइए देखते हैं कि इन मानदंडों के अनुसार भूमिकाएं कैसे वितरित की गईं:

1) सेक्स के आधार पर भूमिकाओं का विभाजन निम्नलिखित तरीके से हुआ था। एक आदमी शिकार के लिए जिम्मेदार है, कपड़ों के लिए खाल तैयार कर रहा है, हथियार बना रहा है, आग का निर्माण कर रहा है और कभी–कभी महिलाओं को लकड़ी और पानी लाने में मदद करता है। दूसरी ओर पत्नी अपने परिवार के लिए आश्रय बनाती है, बच्चों का ख्याल रखती है, इकट्ठा करती है और भोजन तैयार करती है और निवास को साफ रखती है।

2) भूमिका आवंटन का दूसरा आधार उम्र है। मनुष्य के जन्म में एक लड़के का मार्ग चिह्नित होता है जब वह अपना पहला हिरण मारता है और यह मार्ग अनुष्ठानों के साथ मनाया जाता है। उसके बाद, उसे शादी करने की अनुमति है। एक लड़की के मामले में जब वह छोटी बच्ची हो तो शादी कर सकती है लेकिन वह शारीरिक रूप से परिपक्व होने पर ही पत्नी और विवाहित महिला की भूमिका निभाती है। वृद्ध लोगों का सम्मान और परंपराओं, मिथकों और पारिवारिक वंश पर विशेषज्ञों की तरह व्यवहार किया जाता है।

3) तीसरा आधार नातेदारी का है। मां और पिता अपने बच्चों को दुनिया मे लाने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब बच्चे वयस्कों के रूप में बड़े होते हैं तो उनके माता–पिता के साथ कुछ पारस्परिक दायित्व होते हैं। पुरुषों और महिलाओं के बीच विवाह तोड़ा जा सकता है लेकिन क्योंकि वे शायद ही कभी तलाक करते हों,यह झगड़ा दुर्लभ है। नातेदारी संबंधों को स्वच्छ रखने के लिए घनिष्ठ संबंधों के बीच विवाह से बचा जाता है।

10.5.2 जटिल समाजों में भूमिकाएं

हमने चर्चा की कि साधारण समाजों में उम्र, लिंग और नातेदारी के भेद पर भूमिकाएं कैसे आवंटित की जाती हैं जिन्हें सबसे कठिन पर्यावरणीय परिस्थितियों में जीवित रहना पड़ता है। लेकिन जैसे ही समाज जटिल हो तो भूमिका विभाजन के लिए नई कसौटी पेश किया जाता है। सामाजिक स्तर एक ऐसा मानदंड है।

1) **सामाजिक स्तरः** कुछ समाजों को महलों, आम लोगों, दासों आदि जैसे स्तरों के आधार पर व्यवस्थित किया जाता है। समान स्तर से संबंधित लोग समान अस्तित्व

साझा करते हैं और राजा के प्रति समान विशेषाधिकार और कर्तव्यों का पालन करते हैं। हालांकि इस तरह का सामाजिक स्तर सरल समाजों की कठोर भूमिका प्रणाली से अधिक लचीला है, सामाजिक स्तर एक हद तक कठोर और भेदभावपूर्ण हो सकता है जहां किसी विशेष श्रेणी में जन्म व्यक्तियों के जीवन की संभावनाओं को प्रभावित करता है। स्तरीकरण की ऐसी कठोर व्यवस्था जिसमे व्यक्ति पैदा हुआ उसे छोड़ना कठिन हो जाता है।

उदाहरण के लिए, भारत की जाति व्यवस्था में जहां एक विशेष जाति में पैदा हुए व्यक्ति को जाति के विशिष्ट मानदंडों, रीति–रिवाजों, व्यवसाय और अन्य जातियों के साथ अंतःक्रिया के नियमों का पालन करने की उम्मीद की जाती है। भूमिकाओं से विचलन अक्सर अस्वीकृत कर दिया जाता है और विशेष रूप से दंडित किया जाता है जब निचली जाति का व्यक्ति ऐसा करता है। हालांकि, ये मानदंड उतने कठोर नहीं हैं जितना कि वे पहले थे, निरंतर संघर्ष और कानूनी कार्रवाई के कारण, जाति आधारित नियम और भूमिकाओं के आधार पर आज भी प्रचलन में हैं।

2) **विविधीकरण और कार्यों का विशेषज्ञता:** जटिल समाज कार्यों में विशेषज्ञता और कौषल के आधार पर वितरित किया जाता है। सबसे बड़े संगठनों से लेकर सबसे छोटे संगठनों तक मे भूमिका विभाजन भी होते हैं।

उदाहरण के लिए, मीरा और उसके दोस्त ने एक छोटी बेकरी खोल दी। दो बेकर्स के साथ–साथ वे दो कर्मचारियों को रखते हैं जिसमे एक ग्राहकों को संभालता है और एक व्यक्ति खाते का प्रबंधन करता है। जब वे घरेलू वितरण सेवा प्रदान करने का निर्णय लेते हैं तो वे घर या कार्यालय में आदेश लेने के लिए एक और व्यक्ति को किराए पर लेते हैं। इसके अलावा जब वे एक बड़ी दुकान खरीदते हैं, तो वे ग्राहकों के लिए बैठने की व्यवस्था करते हैं और उनकी सेवा के लिए दो और लोगों को किराए पर लेते हैं। हम जो देखते हैं वह यह है कि हर कार्य अराजकता और घर्षण से बचने के लिए विभाजित होता है ताकि बेकरी आसानी से चल सके।

10.6 भूमिकाओं के आयाम

10.6.1 एकाधिक भूमिकाएं और भूमिका समूह

समाजशास्त्री, रॉबर्ट के. मर्टन (1957) ने कई भूमिकाओं और भूमिका–समूह की अवधारणा के बीच अंतर करने की आवष्यकता पर बल दिया। लिंकन के सिद्धांत के विपरीत कि प्रत्येक स्थिति में एक एकल, सहयोगी भूमिका होती है, मर्टन का तर्क है कि ''प्रत्येक स्थिति में भूमिकाओं की एक श्रष्ंखला है'' जो इसके साथ जुड़ा हुआ है। इसी को मर्टन भूमिका सेट कहते हैं। यह ''भूमिका संबंधों का पूरक है जिसमें व्यक्ति एक विशेष प्रस्थिति को ग्रहण करने के आधार पर शामिल होते हैं'' (पृ.110)। प्रत्येक प्रस्थिति की अपनी भूमिका–समूह होती है।

मर्टन ने एक मेडिकल छात्र का उदाहरण दिया जिसकी प्रस्थिति एक छात्र के रूप में न सिर्फ शिक्षक से संबंधित है, बल्कि नर्स, चिकित्सक, सामाजिक कार्यकर्ताओं जैसे अन्य प्रस्थिति के गृहीत भूमिकाओं के लिए भी है। मेर्टन ने कहा कि इस तरह की जटिल व्यवस्था भूमिका समूह में भूमिका भागीदारों की विरोधाभासी उम्मीदों को भी उत्पन्न कर सकती है।

दूसरी ओर, कई भूमिकाएं, किसी व्यक्ति की विभिन्न सामाजिक प्रस्थितियों से जुड़ी भूमिकाओं को भी संदर्भित करती हैं। नीचे दिए गए आंकड़े भूमिका समूह और एकाधिक भूमिकाओं के बीच अंतर को समझाते हैं।

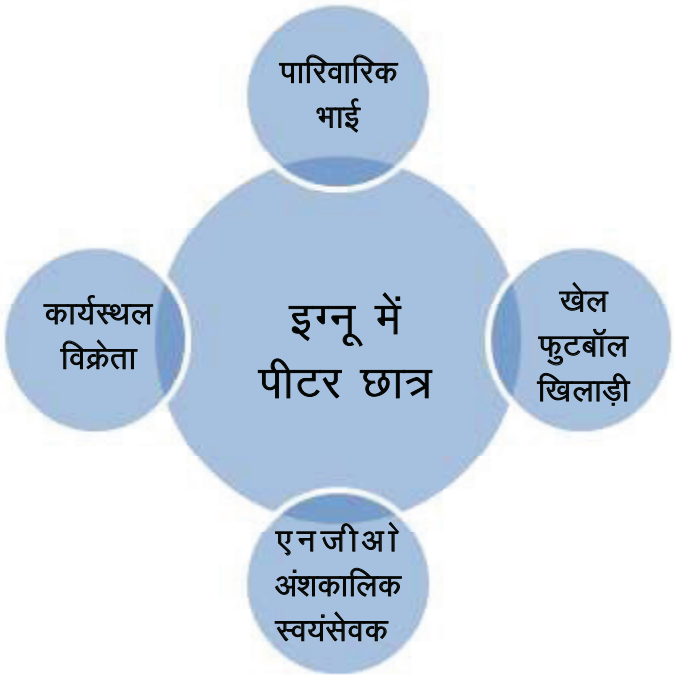

भूमिका सेट

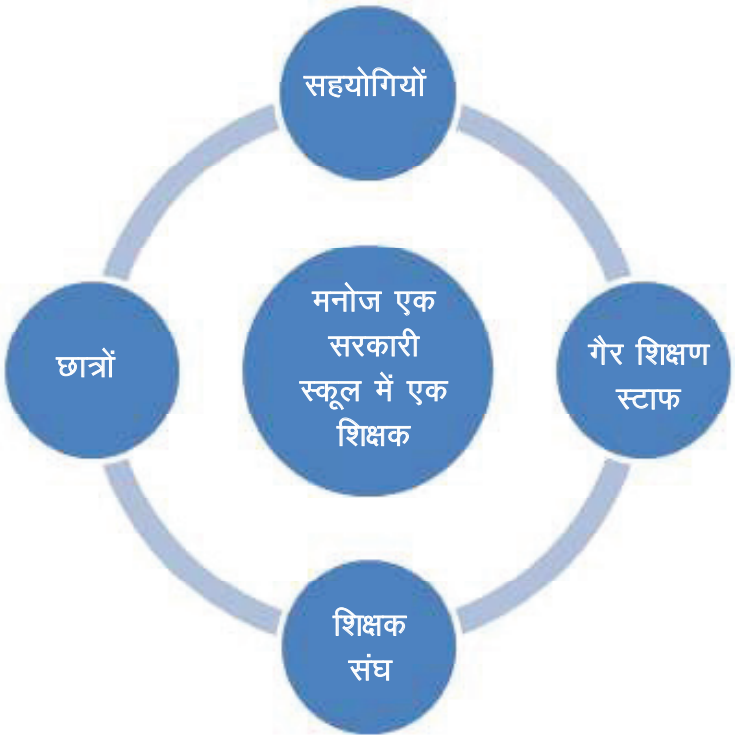

10.6.2 भूमिका संकेत

कपड़े लगभग सभी समाजों में पुरुषों और महिलाओं के बीच अंतर करने के सबसे महत्वपूर्ण तरीकों में से एक रूप की तरह कार्य करते हैं । लेकिन यह पूछना महत्वपूर्ण है कि हमें यह भेद क्यों करना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह स्त्री और पुरुष भूमिकाओं को अलग करने के लिए एक संकेत के रूप में काम करता है और दूसरों को उनकी भूमिकाओं की उम्मीद करने और तदनुसार उनकी प्रतिक्रिया को आकार देने में मदद करता है। बैंटन के अनुसार भूमिकाएँ संचार और नियंत्रण में मदद करती हैं। भूमिका संकेत हमारे रिश्ते, अपेक्षाओं और अंतःक्रिया को आकार देकर संचार के तरीकों के रूप में कार्य करते हैं। वे

व्यक्ति को भूमिका निभाने और दूसरों को संकेत देने के लिए दोनों भूमिकाओं से व्यवहार को नियंत्रित करने और विचलन की जांच करने में भी मदद करते हैं। यदि इस तरह के विशिष्ट संकेत पूरी तरह से त्याग दिए जाते हैं, तो रोजमर्रा की जिंदगी और गतिविधियां बहुत अराजक हो सकती हैं।

हमारे दिन–प्रतिदिन जीवन परिधान व्यक्तियों की भूमिका को परिभाषित करने में मदद करते हैं, भले ही यह एक सुपरमार्केट में एक विक्रेता है, एक ट्रेन में टिकट कलेक्टर या लाल रोशनी में यातायात पुलिस कर्मी । यातायात जाम के दौरान हम अक्सर एक विशेष वर्दी द्वारा पहचाने जाने वाले यातायात पुलिस को उत्सुकता से देखते हैं और उम्मीद करते हैं कि उनसे वह भूमिका निभाई जाए जो उन्हें सौंपा गया है। इसी प्रकार, अस्पतालों में नर्स और डॉक्टरों की प्रत्येक की अनूठी वर्दी होती है जो हमें पहचानने और हमारी अपेक्षाओं को स्थापित करने में हमारी सहायता करती है।

बैंटन ने मूलभूत, सामान्य और स्वतंत्र भूमिकाओं के संदर्भ में विभिन्न भूमिकाओं के संकेतों की पहचान की।

क) **मूल भूमिकाओं के लिए संकेत–** मूल भूमिकाओं के लिए संकेत जो लिंग, आयु और नातेदारी द्वारा बड़े पैमाने पर निर्धारित किए जाते हैं, उनमें नाम, कपड़े और हेयर स्टाइल शामिल हैं। दो लिंगों के पहले नाम ज्यादातर अलग होते हैं। मिस, श्रीमती, श्रीमान,मास्टर जैसे षीर्शक, लिंग, आयु और वैवाहिक स्थिति की पहचान में भी मदद करते हैं।

ख) **सामान्य भूमिकाओं के लिए संकेत–** सामान्य भूमिकाओं के लिए संकेत अक्सर उस स्तर तक निर्भर करते हैं जिस पर किसी विशेष प्रस्थिति के साथ–साथ अन्य भूमिका संबंधों के लिए भूमिका की विशिष्टता और प्रासंगिकता को अलग करना और संवाद करना आवष्यक है। उपरोक्त मे चर्चा की गई पुलिसकर्मी और उसकी वर्दी का मामला सामान्य भूमिका के लिए संकेत का एक उदाहरण है।

ग) **स्वतंत्र भूमिकाओं के लिए संकेत–** चूंकि स्वतंत्र भूमिकाओं के लिए अन्य भूमिकाओं का कम प्रभाव पड़ता है, उनके लिए संकेत सीमित हैं। स्वतंत्र भूमिकाओं के लिए संकेत केवल विशेष संदर्भों में प्रासंगिकता रखते हैं और अधिकांषतः अन्य सामाजिक परिस्थितियों में प्रासंगिकता खो सकते हैं। बाहरी लोगों के लिए ऐसे संकेत अक्सर प्रतिष्ठा संकेत के रूप में कार्य करते हैं।

10.6.3 भूमिका परिवर्तन

भूमिकाएं वही नहीं रहतीं और अक्सर विकसित होती रहती हैं। व्यक्ति एक भूमिका से दूसरे में जाते हैं और भूमिकाओं के पुराने समूह में नई भूमिकाएं जोड़ दी जाती हैं। जब कोई व्यक्ति एक भूमिका से दूसरी भूमिका में जाता है तो इस नई भूमिका के अधिकारों और दायित्वों से परिचित होना महत्वपूर्ण हो जाता है। यह न केवल उस व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है जो भूमिका परिवर्तन से गुजरता है बल्कि अन्य सभी लोगों के लिए भी है जो व्यक्ति के साथ नई भूमिका के अनुसार अपने व्यवहार और अपेक्षाओं को संशोधित करने के लिए जुड़े हुए हैं।

यही कारण है कि भूमिका परिवर्तन अक्सर समारोहों द्वारा चिह्नित किया जाता है। पहला महत्वपूर्ण परिवर्तन जो प्रत्येक समाज में व्यक्ति बचपन से वयस्कता तक मे अनुभव करता है। यदि आपको याद होगा, बुशमेन के जनजातीय समाज में एक लड़का एक आदमी तब

बन जाता है जब वह पहली बार अपनी हिरन का शिकार करता है और यह अनुष्ठानों के साथ मनाया जाता है। इस बिंदु से उसे शादी करने की भी अनुमति है। इसी तरह, कई समाजों में लड़कियों की परिपक्वता यौवनारम्भ संस्कारों द्वारा चिह्नित की जाती है।

जब कोई व्यक्ति पत्नी या पति की भूमिका निभाने वाला होता है तो उसके बाद एक समारोह होता है जहां परिवार, दोस्त, पड़ोसी और समुदाय भाग लेते हैं। समारोह इस बदलाव को व्यक्ति के साथ–साथ दूसरों के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण बनाने में मदद करते हैं। इसी तरह, जब कोई व्यक्ति किसी संगठन के अध्यक्ष, या प्रधान मंत्री या किसी देश के राष्ट्रपति की तरह एक महत्वपूर्ण प्रस्थिति प्राप्त करता है तो इसे षपथ ग्रहण समारोह द्वारा चिह्नित किया जाता है।

वयस्कों से वृद्धावस्था के प्राप्ति के दौरान भूमिकाओं में परिवर्तन भी होता है। कई समाजों में बुजुर्गों को उनके श्रम गहन कार्यों से मुक्त किया जाता है और वे नाती पोते की देखभाल करने जैसी नई भूमिकाएं मानते हैं। जबकि कुछ समाजों में पुराने लोगों को उनके अनुभव और ज्ञान के सम्मान के साथ व्यवहार किया जाता है, और उनसे महत्वपूर्ण मामलों पर सलाह मांगी जाती है, जहां कुछ बुजुर्गों को अयोग्य की तरह माना जाता है।

10.6.4 भूमिका संघर्ष और तनाव

चूंकि एक व्यक्ति कई प्रस्थितियों को ग्रहण करता है और उसके द्वारा कई भूमिकाएं निभाई जाती हैं, कभी–कभी किसी व्यक्ति की दो अलग–अलग प्रस्थितियां दुविधा की स्थिति में व्यक्ति को विवादित उम्मीदों की मांग कर सकती हैं। इसका एक साधारण उदाहरण क्लास मॉनीटर का हो सकता है। एक वर्ग की निगरानी के रूप में अहमद को अपने वर्ग शिक्षक द्वारा जिम्मेदारियों का एक सेट दिया जाता है। उससे शिक्षक की अनुपस्थिति में अनुशासन बनाए रखने की उम्मीद है और छात्रों द्वारा किए गए किसी भी व्यवधान की रिपोर्ट करना है। साथ ही अहमद भी अपने कुछ सहपाठियों के करीबी दोस्त होने की प्र स्थिति ग्रहण करता है। अब अगर दोस्तों के अपने करीबी सर्कल से एक छात्र वर्ग के अन्य छात्रों को परेषान करता है या शिक्षक की अनुपस्थिति में धमकी बन जाता है तो यह अहमद के लिए भूमिका संघर्ष को जन्म दे सकता है। एक दोस्त के रूप में उससे इस व्यवहार को अनदेखा करने की उम्मीद की जा सकती है, जबकि जिम्मेदार वर्ग मॉनीटर के रूप में उससे शिक्षक के ध्यानद्रावी मे इस यूपीए व्यवहार को लाने की उम्मीद की जाती है।

हालांकि यह कक्षा से एक उदाहरण है, रोजमर्रा की जिंदगी में व्यक्तियों को अक्सर उनकी भूमिकाओं से संबंधित समान या अधिक जटिल दुविधाओं का सामना करना पड़ता है। हमने पहले से ही चर्चा की है कि एक व्यक्ति अपने जीवनकाल में कई भूमिका निभाता है और इसलिए ऐसी असंगतता उत्पन्न होती है। भूमिका संघर्ष का अक्सर उद्धृत उदाहरण वह है जो काम करने वाली महिलाओं द्वारा अनुभव किया जाता है। पारंपरिक समाजों में महिलाओं की सांस्कृतिक रूप से स्वीकृत भूमिका बड़े पैमाने पर बाल पालन और घरेलू काम से संबंधित थी। हालांकि, आधुनिक समाजों में इन भूमिकाओं को चुनौती दी जा रही है और महिलाएं तेजी से वेतनभोगी रोजगार में प्रवेश कर रही हैं और पुरुषों के साथ पेशेवर कार्यक्षेत्र साझा कर रही हैं। जब ऐसे सामाजिक परिवर्तन होते हैं तो एक महिला दोनों पक्षों से एक खींचाव का अनुभव कर सकती है – एक पेशेवर के रूप में अपने काम के प्रति प्रतिबद्धता और परिवार और बच्चों के प्रति उनकी पत्नी या मां के प्रति प्रतिबद्धता। इस तरह के संघर्ष तब उठते हैं तब विशेष रूप से जब भूमिका भागीदारों के इस तथ्य को स्वीकार नहीं किया जा सकता है कि वे अपनी भूमिकाएं पुनःअनुकूलित कर रहे हैं कि महिलाएं अब नई भूमिका बना रही हैं इस तथ्य सया नए को अपना रही हैं।

जबकि एक व्यक्ति की दो अलग–अलग प्रस्थितियों से जुड़ी भूमिकाओं के बीच भूमिका संघर्ष होता है, भूमिका मे तनाव तब होती है जब एक ही प्रस्थिति में जुडी विभिन्न जिम्मेदारियां असंगत होती हैं। उदाहरण के लिए, रोहित को अगले दिन एक परीक्षा के लिए तैयार करना होगा, लेकिन उसी दिन एक स्कूल में षतरंज प्रतियोगिता में अपने स्कूल का प्रतिनिधित्व करना होगा। एक छात्र के रूप में वह तनाव और चिंता का अनुभव कर सकता है क्योंकि उसे दोनों स्थितियों में अच्छा प्रदर्षन करना है।

लोग भूमिका विभाजित करने या अलगाव द्वारा भूमिका संघर्ष का प्रबंधन करने की कोशिश करते हैं, जहां वे एक भूमिका में जो कुछ भी करते हैं, उससे अलग होते हैं और दूसरे पर एक भूमिका को प्राथमिकता देते हैं। भूमिका तनाव और संघर्ष की अवधारणा भूमिका से बाहर निकलने के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे एक विशेष भूमिका के बारे में संदेह को जन्म दे सकते हैं जिससे अंततः बाहर निकलने का कारण बनता है।

10.7 सारांश

इस इकाई ने आपको प्रस्थिति और भूमिका की अवधारणा के साथ अवगत कराया जो सामाजिक संरचना के महत्वपूर्ण पहलुओं का निर्माण करता है। आप इस चर्चा में पढ़ते हैं कि विभिन्न अवधारणाएं और प्रस्थिति और भूमिकाओं को समझने और वर्गीकृत करने के तरीके हैं, कुछ निर्दिष्ट हैं जबकि अन्य उपार्जित किए जाते हैं। दोनों प्रकृति में भी गतिशील होते हैं और लगातार व्यक्तियों और समाज द्वारा परिभाषित और पुनः परिभाषित किए जाते हैं। इस इकाई में भूमिका संघर्ष, भूमिका से बाहर निकलने और भूमिका परिवर्तन जैसे भूमिकाओं के आयामों के बारे मे भी हमारे जीवन में अनुभव किया गया है।

10.8 बोध प्रश्न

1) भूमिकाओं पर संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य इंटरैक्शनिस्ट (अंतःक्रियावादी) परिप्रेक्ष्य से अलग कैसे है?

2) विभिन्न कौन से तरीके हैं जिनमे भूमिकाएं वर्गीकृत की जाती हैं?

3) क्या प्रस्थिति समाज में सिर्फ किसी व्यक्ति द्वारा ग्रहण की जाती है? इसके बारे में बताएं।

4) वर्ग भेद और प्रस्थिति भेद हमेशा ओवरलैप(आच्छादित) करते हैं? मैक्स वेबर के सिद्धांत के संदर्भ में चर्चा करें।

5) उदाहरणों की मदद से निर्दिष्ट और उपार्जित प्रस्थिति के बीच अंतर पर चर्चा करें।

10.9 संदर्भ ग्रंथ

बैंटन, एम. (1965). रोल्सः एन इंटरोडकषण टू द स्टडी ऑफ सोसल रिलेशन्स .लंदनः टैविस्टॉक

एबाघ, एच आर एफ (1988). बिकमिंग एन एक्स :द प्रोसेस ऑफ रोल एक्जिट. शिकागोः शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस

गिडेंस, ए और सटन, पी डब्ल्यू (2014). एस्सेन्शियल कोन्सेप्ट्स इन सोसिओलोजी . कैम्ब्रिजः राजनीति।

गिडेंस, ए एट अल (सं) (2014). इंटरोडाकषण टू सोसिओलोजी . डब्ल्यू डब्ल्यू नॉर्टन एंड कं

गोफमैन, ई (1990). द प्रजेंटेशन ऑफ सेलफिन एवरीडे लाइफ.लंदनः पेंगुइन।

लिटन, आर (1963). द स्टडि ऑफ मैन. यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका : एप्पलटन–सेंचुरी–क्रॉफ्ट्स।

मार्टन . आर (1957). द रोल सेटः प्रॉब्लेम्स इन सोसिओलोजिकल थीयरी. द ब्रिटिश जर्नल ऑफ सोसिओलोजी ,8(2),106–120.

टर्नर, जे (एड) (2006). हंडबुक ऑफ सोसिओलोजीकल थियरी : संयुक्त राज्य अमेरिकाः स्प्रिंगर

वेबर, एम, रोथ, जी और विटिच, सी (1978).एकोनोमी अंड सोसायटीः एन आउटलाइन ऑफ इंटरप्रेटिव सोसिओलोजीः बर्कले, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।

वॉर्स्ले, पीटर (1970). इंटरोडाकषण टू सोसिओलोजी : पेंगुइन बुक्स।

इकाई 11 सामाजीकरण*

संरचना

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 सामाजीकरणः अर्थ व परिभाषाएं

- 11.2.1 सामाजीकरण क्या है?
- 11.2.2 सामाजीकरणः कुछ परिभाषाएं

11.3 सामाजीकरण के प्रकार

- 11.3.1 प्रथम सामाजीकरण
- 11.3.2 द्वितीय सामाजीकरण
- 11.3.3 लैंगिक सामाजीकरण
- 11.3.4 अग्रिम सामाजीकरण
- 11.3.5 पुनर्सामाजीकरण
- 11.3.6 वयस्क सामाजीकरण

11.4 सामाजीकरण के सिद्धांत

- 11.4.1 जॉर्ज हर्बर्ट मीड एवं स्वविकास का सिद्धांत
- 11.4.2 चार्ल्स हॉर्टन कूले एवं आत्म दर्पण दर्शन सिद्धांत
- 11.4.3 सिग्मंड फ्रायड एवं मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

11.5 सामाजीकरण के माध्यम

- 11.5.1 परिवार
- 11.5.2 सखा समूह
- 11.5.3 विद्यालय
- 11.5.4 संचार मीडिया

11.6 सारांश

11.7 सन्दर्भ

11.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप जानेंगेः

- सामाजीकरण की परिभाषा;
- किसी एक/कुछ प्रमुख विचारकों के नाम जो सामाजीकरण के अध्ययन में सहयोगी रहे;
- विभिन्न प्रकार के सामाजीकरण के प्रकार, तथा
- सामाजीकरण के माध्यम एवं वे किस तरह हमारे व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।

11.1 प्रस्तावना

हम इस विषय की शुरुआत सामाजीकरण के अर्थ और परिभाषा के साथ करेंगे। तदुपरांत हम सामाजीकरण के प्रकार एवं सिद्धांतों पर चर्चा को आगे लेकर जायेंगे। अंत में हम

*बियंका डाव, शोधार्थी ,जे.एन.यू

सामाजीकरण के विभिन्न माध्यमों का परीक्षण करके चर्चा समाप्त करेंगे। इस प्रकार इस इकाई में हम सामाजीकरण का गहन अध्ययन करेंगे।

12.2 सामाजीकरण – अर्थ एवं परिभाषा

11.2.1 सामाजीकरण क्या है?

सामाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज के विभिन्न सरोकारों को समझने तथा सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विभिन्न समाजों में बच्चों को सामाजिक मूल्यों से अवगत कराने की अलग-अलग तरीके व परंपराये हैं। बच्चों के व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिए उनका सामाजीकरण अनिवार्य है। सामाजीकरण के अंतर्गत बच्चों को परिवारों परिजनों तथा संबंधित वर्गों के नियमों आदतों, तथा मूल्यों की जानकारी दी जाती है। बच्चा सामाजीकरण के माध्यम से उस समाज की मान्यताओं रीति-रिवाजों तथा संस्कृति की जानकारी प्राप्त करता है। सामाजीकरण समाज की संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने का काम करता है। यह प्रक्रिया बच्चों को अनेक प्रकार के दायित्यों से अवगत कराती है तथा उनका निर्वाह करने में उनकी मदद करती है। इस प्रकार सामाजीकरण एक पीढ़ी को दूसरी पीढ़ी से जोड़ने का काम करता है।

11.2.2 सामाजीकरणः परिभाषाएं

- एंथोनी गिडॉन्स : "सामाजीकरण उस पद्धति से मनुष्य का परिचय कराता है जो उसमें सामाजिक संस्कृति को ढालती है।" (2014:263-64).

  सामाजीकरण का ''उस प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जिससे असाहय मानव शिशु धीरे–धीरे एक आन्म जागरूक जानकार व्यक्ति बन जाता है, जो कि अपनी समाजिक संस्कृति के तौर तरीके में निपुण है।

- पीटल वर्सले के अनुसार "सामाजीकरण वह पद्धति है जिसके द्वारा मनुष्य को सामाजिक समूहों के रीति-रिवाजों व नियमों का प्रशिक्षण दिया जाता है। सामाजीकरण मानव समाज की गतिविधियों तथा संस्कृतियों का वाहक है।"(1972:153).

- "फ्री टोनी मिल्टन के अनुसार " वह प्रक्रिया जिससे हम उस समाज की संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करते हैं जिसमें हम पैदा हुए हैं, वह प्रविधि जिसके द्वारा हम अपने समाज की विशेषताओं को सीखते हैं तथा सोचने व व्यवहार करने के तरीकों की जानकारी प्राप्त करते हैं, सामाजीकरण कहलाती है।"(1981:10).

11.3 सामाजीकरण के प्रकार

विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्तियों में सामाजीकरण की प्रक्रिया अलग-अलग होती है जिसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है।

11.3.1 प्राथमिक सामाजीकरण

यह मनुष्य के सामाजीकरण का पहला चरण है जिसका जीवन में विशेष महत्व है। जन्म से लेकर बचपन तक की सामाजीकरण प्रक्रिया प्राथमिक सामाजीकरण कहलाती है। इस अवधि में बच्चों को भाषा- ज्ञान तथा व्यवहार सिखाया जाता है। सामाजीकरण का यह चरण परिवार में ही संपन्न होता है। इस अवधि में अबोध बालक अपने परिवार तथा परिवेश से भाषा की जानकारी प्राप्त करता है तथा आरंभिक व्यवहार सीखता है। इस अवधि में ही आगे

के जीवन में सीखने की प्रक्रिया की नींव पड़ती है। प्राथमिक सामाजीकरण समाज की मूल संस्कृति तथा उसके विचारों से बच्चों को अवगत कराता है। इस अवधि में बच्चों के अंतर्मन में मूल्यों तथा विचारों का ढांचा तैयार होता है जब उन्हें दुनिया की तथा उसके विभिन्न सरोकारों की कोई जानकारी नहीं होती। इस स्तर पर परिवार बच्चों के सामाजीकरण का दायित्व निभाता है।

11.3.2 द्वितीय चरण का सामाजीकरण

जब बच्चा बचपन की दहलीज लाँघकर किशोरावस्था में प्रवेश करता है तब उसके सामाजीकरण का दूसरा चरण आरंभ होता है। इस चरण के दौरान सामाजीकरण की प्रक्रिया में परिवार के साथ-साथ विद्यालय तथा मित्र समूहों का योगदान भी आरंभ हो जाता है। विभिन्न माध्यमों द्वारा विभिन्न प्रकार के सामाजिक संपर्क होते हैं जो बच्चों को नैतिक मानदंडों, रीति-रिवाजों तथा विभिन्न प्रकार के सामाजिक एवं सांस्कृतिक सिद्धांतों की जानकारी देने में सहयोग करते हैं। जब बच्चा संस्थागत व्यवस्थाओं जैसे विद्यालय आदि में शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त करता है तो उसके सामाजीकरण का दूसरा चरण संपन्न होता है। दूसरे चरण का सामाजीकरण प्रथम चरण के सामाजीकरण के साथ-साथ चलता रहता है। परंतु पारिवारिक व्यवस्थाओं से हटकर बच्चे जब विद्यालयों में शिक्षण पाते हैं तब उनमें दायित्व-बोध आने लगता है। दूसरे चरण के सामाजीकरण में संस्थाओं तथा विशिष्ट दायित्वों से जुड़े व्यक्तियों का योगदान अधिक रहता है। इस दौरान बच्चा ज्ञान अर्जित करता है तथा सतर्कता पूर्वक सीखता है और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की स्थिति में प्रवेश करने लगता है जबकि प्राथमिक चरण में वह सांस्कृतिक गतिविधियों का ज्ञान आत्मसात करता है।

11.3.3 लैंगिक सामाजीकरण

इस चरण तक आते-आते बच्चों में विचार प्रक्रिया आकार ग्रहण कर चुकी होती है। इसी प्रक्रिया के आधार पर वह लैंगिक भूमिकाओं की जानकारी प्राप्त करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार लैंगिक चेतना आने पर मनुष्य में स्त्री या पुरुष की विशेषताएं निर्मित होने लगती हैं। स्त्री और पुरुष के बीच किस तरह के संबंध होते हैं तथा वे एक दूसरे के साथ किस प्रकार व्यवहार करते हैं यह चेतना इसी अवधि में आती है। लैंगिक चेतना स्त्री व पुरुष के रूप में सामाजिक दायित्व का बोध कराती हैं।

बच्चों को समझाने तथा उनका मार्गदर्शन करने के बड़ों के तरीके भिन्न-भिन्न होते हैं। कपड़े पहनने का ढंग, हेयर स्टाइल, साज-सज्जा के भिन्न-भिन्न साधन जो स्त्री पुरुष इस्तेमाल करते हैं। उन्हें देख देख कर बच्चे स्त्री व पुरुषों के अलग-अलग तरीकों को समझ लेते हैं। दो वर्ष का होते होते बच्चे को यह समझ आ जाता है कि उसका लिंग क्या है? जहाँ लड़कियां गुड़ियों से खेलना पसन्द करती हैं वहीं लड़कों के खिलौने कार तथा बंदूक आदि पसंद होते हैं। यद्यपि अब समाज में स्त्रीलिंग व पुर्लिंग के अलावा तीसरे लिंग या नपुंसक लिंग का भी उल्लेख होने लगा है। जिनकी पहचान स्त्रीलिंग या पुल्लिग के रूप में नहीं की जा सकती वे तृतीय लिंग की श्रेणी में आते है। भारत पाकिस्तान तथा बांग्लादेश में इन्हे हिजड़ा कहा जाता है। इन्हे विशिष्ट लिंगी भी कहा जाता है।(टोबले व मॉर्गन 2002)

11.3.4 अग्रिम सामाजीकरण

अग्रिम सामाजीकरण की अवधारणा प्रसिद्ध समाजशास्त्री रॉबर्ट के मेर्टन (1957) ने की थी। इस सामाजिक प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति को भावी भूमिका अथवा कार्य के लिए पहले से ही तैयार

किया जाता है। इस सामाजिक प्रक्रिया के दौरान लोगों को उन कार्यों से जुड़े लोगों के संपर्क में लाया जाता है जो कार्य वे भविष्य में करना चाहते हैं। इससे उनका कार्य के लिए आसानी से चयन हो जाता है और वे सरलता से उसे संभाल लेते हैं। कुछ लोग यह मानते हैं कि माता-पिता या अभिभावक प्राथमिक सामाजीकरण की अवस्था में ही बच्चों को उनके भावी कार्यों के बारे में अग्रिम जानकारी दे देते हैं और सामाजिक भूमिका से भी अवगत करा देते हैं। कुछ माता-पिता बच्चों को भविष्य निर्माण के उद्देश्य से बोर्डिंग स्कूल में दाखिल करवा देते हैं जहां उन्हें भविष्य के लिए तैयार किया जाता है।

11.3.5 पुनर्सामाजीकरण

पुनर्सामाजीकरण मनुष्यों को पुराने व्यहवारों तथा भूमिकाओं को त्यागने तथा उनके स्थान पर नयी भूमिकाओं का निर्वाह करने में मदद करता है । जब किसी व्यक्ति को अपने जीवन में बड़े बदलाव की ज़रुरत महसूस होती है तब पुनर्सामाजीकरण की आवश्यकता पड़ती है । पुनर्सामाजीकरण उन व्यक्तियों के जीवन में लगातार चलता रहता है जिन्हे अतीत की भूमिकाओं तथा अनुभवों को छोड़ना पड़ता है तथा नए व्यवहार एवं मूल्य अपनाने पड़ते है। सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री गोफमैन पुनर्सामाजीकरण पागल खाने की संज्ञा देते हैं। जिस प्रकार पागलखाने में रहने वाले लोगो को वहां के नियमों का कठोरता से पालन करना पड़ता है उसी प्रकार संस्थाओं का यह आग्रह रहता है कि उन में काम करने वाले लोग उनके नियमों का अक्षरशः पालन करें भले ही वे उनके अनुकूल हो या ना हो। लड़की को विवाह के बाद ससुराल के नियमों व रीति-रिवाजों आदि का पालन करने के लिए तैयार किया जाना पुनः सामाजीकरणका सटीक उदाहरण है। इसका उद्देश्य होता है लड़की का नए परिवेश में रच बस जाना और उसी के अनुसार अपने आप को पूरी तरह बदल डालना।

11.3.6 वयस्क सामाजीकरण

जब कोई व्यक्ति वयस्क होने पर नई भूमिकाओं में अपने आप को ढालने के लिए प्रयास करता है तो उसे वयस्क सामाजीकरण की संज्ञा दी जाती है। पति, पत्नी या कर्मचारी का नए कार्यों व भूमिकाओं के अनुसार अपने आप को ढालना वयस्क सामाजीकरण के अंतर्गत आता है। आवश्यकता अनुसार व्यक्ति नए-नए व्यहवारो तथा विचारो को अपने जीवन में शामिल करते रहते हैं। यह प्रक्रिया जीवन के अंतिम क्षणों तक जारी रहती है। पारंपरिक समाजों में परिवार के महत्वपूर्ण मामलों में वृद्ध लोगों का पूरा दखल रहता है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ स्त्री और पुरुष दोनों प्रकार के वयस्क इस प्रवृत्ति पर जोर देते रहते हैं।

परंतु आधुनिक युग में अनेक परिवारों में वृद्धों का प्रभाव घटा है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि आधुनिकता के दौर में वृद्ध परिवारों पर से अपनी पकड़ खो चुके हैं। आज भी कुछ महत्वपूर्ण मामलों में उनकी सलाह ली जाती है। जिस प्रकार वयस्क अपने बच्चों को कुछ न कुछ सिखाने में लगे रहते हैं वैसे ही वृद्ध जन भी अपने से कम आयु के लोगों से बहुत कुछ सीखते हैं। परिवार के बाहर भी वयस्क सामाजीकरण की प्रक्रिया जारी रहती है। कार्यस्थल, सामाजिक समूह, वरिष्ठ नागरिक संगठन, मनोरंजन क्लब तथा धार्मिक संगठन भी वयस्क सामाजीकरण में अपना योगदान देते हैं।

बोध प्रश्न

1) सामाजीकरण की महत्वपूर्ण विशेषताएं क्या क्या है?

.....

.....

2) सामाजीकरण की सार्थक परिभाषा बताओ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) जीवन के विभिन्न चरणों में चलती रहने वाली सामाजीकरण की प्रक्रियाओं का विवरण देते हुए सामाजीकरण के प्रकार पर टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

11.4 सामाजीकरण के सिद्धांत

लगभग सभी समाजविज्ञानी एवं मनोविज्ञान विशेषज्ञ इस बात से सहमत हैं कि बच्चे के विकास के केंद्र में मूल रूप से "स्वत्व" (self) विद्यमान रहता है और सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा यह विकास संभव हो पाता है। इस अवधारणा को भली-भांति समझने के लिए सामाजीकरण के प्रमुख सिद्धांतों का विवरण देना आवश्यक है।

11.4.1 जॉर्ज हर्बर्ट मीड एवं स्वविकास का सिद्धांत

अमेरिकन समाजशास्त्री जॉर्ज हर्बर्ट मीड के अनुसार बच्चे पूरी तरह सामाजिक प्राणी होते हैं और वे अपने चारों ओर हो रही गतिविधियों की नकल करते हुए बड़े होते हैं। बच्चे जिन लोगों के संपर्क में आते हैं उनसे कुछ न कुछ सीखते हैं। खेल एक ऐसा माध्यम है जिसके दौरान बच्चे बड़ो की नक़ल करना सीखते है। खेल में जिस तरह बड़े करते हैं वे भी उसी तरह करने लगते हैं। खेलने की उम्र तीसरे वर्ष के आस-पास आरम्भ हो जाती है। इस अवस्था में ही बच्चे बड़ों की विभिन्न भूमिकाओं की नकल करना और उन्हें अपने जीवन में उतारना शुरू कर देते हैं। इस प्रकार बच्चे दूसरों से सीखते हैं।मीड इन दूसरों को विशिष्ट अन्य मानता है। बच्चों के खेल पहले सरल होते हैं और धीरे-धीरे कठिन होने लगते हैं। चार पांच साल का बच्चा बड़ों की भूमिकाएं अदा करने लगता है। उदाहरण के लिए बच्चे कक्षा में होने वाली गतिविधियों की नकल उतारना शुरू कर देते हैं। एक बच्चा अध्यापक बन जाता है तथा अन्य छात्र बन जाते हैं और वे कक्षा में हुई गतिविधियां दोहराते हैं। इस खेल को अधिकतर बच्चे टीचर-टीचर की सज्ञा देते हैं। इसी तरह के खेल का दूसरा प्रचलित उदाहरण डॉक्टर तथा रोगी की भूमिका वाला है जिसमें एक बच्चा डॉक्टर की भूमिका निभाता है दूसरा नर्स की और तीसरा बच्चा रोगी बन जाता है। फिर वे बिल्कुल वैसा ही दृश्य उपस्थित कर देते हैं जैसा कि रोगी जब डॉक्टर के पास इलाज के लिए जाता है तब बनता है। मीड इस तरह नकल उतारने की प्रक्रिया को बच्चों का दूसरों की भूमिकाओं में

उतर जाना मानता है। इस अवस्था में बच्चे परिपक्वता ग्रहण करने लगते हैं तथा अपने आप के बारे में व दूसरों के बारे में उनकी समझ विकसित होने लगती है। बच्चे अपने बारे में दूसरों के दृष्टिकोण और विचारों को ग्रहण करते हैं और अपने आप को 'मुझे' मानने लगते हैं।'मुझे'शब्द एक सामाजिक स्वत्व है जबकि 'मैं ' शब्द 'मुझे ' की प्रतिक्रिया है। सरल शब्दों में कहें तो 'मैं' दूसरों के कार्यों के प्रति बच्चे की प्रतिक्रिया है जबकि 'मुझे' दूसरों की उन सब प्रतिक्रियाओं का समुच्चय है जिसे बच्चा ग्रहण करता है।

स्वत्व के विकास का दूसरा चरण 8 या 9 वर्ष की अवस्था में आरंभ होता है। इस चरण में बच्चे समूह के सदस्यों के रूप में काम करना सीख जाते हैं और उनकी भूमिकाओं को सफलतापूर्वक निभाने लगते हैं।मीड सामान्य अन्य तथा विशिष्ट अन्य की अवधारणा प्रस्तुत करता है। किसी समूह विशेष की उस संस्कृति के नियमों व मूल्यों को सामान्य अन्य माना जा सकता है जिसमें बच्चा अपना जीवन जी रहा है। सामान्य अन्य के बारे मेंअपने समाज का विकास करते हुए बच्चा यह जान जाता है कि उस समाज अथवा समूह की स्वीकृति पाने के लिए उसे कौन से नियमों का पालन करना होगा तथा कैसा व्यवहार करना होगा। विशिष्ट अन्य में वह लोग आते हैं जो बच्चों के जीवन में विशेष महत्व रखते हैं और बच्चों की अपने बारे में समझ तथा भावनाओं व व्यवहारों को प्रभावित करते हैं। मीड उन प्रमुख विचारकों में से है जो बच्चे के स्वत्व के विकास में विशिष्ट अन्य की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हैं।

11.4.2 कूले तथा उसका दारपणिक प्रतिबिम्ब का सिद्धांत

प्रसिद्ध अमेरिकी समाजवादी हॉर्टॉनकूली को उनके दारपणिक सिद्धांत के लिए जाना जाता है। बच्चे दूसरों के मतानुसार अपने आपके बारे में धारणा उत्पन्न कर लेते हैं। दूसरों के मतानुसार स्वयं को मानने लग जाना, दूसरों की दृष्टि में हम कैसे लगते हैं, इस कल्पना के अनुसार अपने आप को मानने लग जाना दारपणिक निजता प्रतिबिम्बात्मक निजता कहलाता है। अपने बारे में जो जानकारी दूसरों के विचारों को व उनके प्रतिक्रियाओं से प्राप्त होती हैं उसके आधार पर मनुष्य जो अपना एक बिंब निर्मित कर लेता है उसे दारपणिक निजता कहा जाता है। सबसे पहले अपने बारे में जानकारी बच्चा अपने माता पिता से प्राप्त करता है फिर दूसरों से प्राप्त जानकारी से उसकी पुष्टि करता है।जिस प्रकार अपने आप को जानने में दर्पण हमारी सहायता करता है, हमारे कपड़े कैसे लग रहे हैं, हमारा चेहरा कैसा लग रहा है, हम कैसे लग रहे हैं यह सब दर्पण में देखकर हम जान जाते हैं, उसी प्रकार हम अनुमान लगाने लगते हैं कि हमारा व्यवहार, हमारेतोर तरीके दूसरो को कैसे लग रहे होंगे। परिणामतः दूसरों की हमारे बारे में जो अवधारणा बनती है उसी के अनुसार हम अपने आप को मान लेते हैं और उसे से सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव भी ग्रहण करने लगते हैं। जैसे बच्चे को जब शरारत सूझती है तो वह सोचता है कि पकड़ा गया तो माता-पिता से झूठ बोल देगा, उसीसमय वह यह भी सोचता है कि यदि उसका झूठ पकड़ा गया तो वह माता पिता की नज़रो में गिर जायेगाद्यकूली के अनुसार अपनेबारे में धरना बनाने में प्रयोग प्रमुख रूप से तीन घटक काम करते हैं। पहला, दूसरों को हम कैसे लग रहे हैं, दूसरा, अन्य लोगों के विचार के बारे में हमारा अपना विचार और तीसरा, आत्म सम्मान की भावना, शर्म या दूसरों की हमारे बारे में अवधारणा से उपजा संदेह।

11.4.3 सिगमंड फ्रायड एवं मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

आत्म विश्लेषण की अवधारणा के जनक सुप्रसिद्ध ऑस्ट्रियाई स्नायु विज्ञानी सिगमंड फ्रायड के अनुसार सामाजीकरण चाहता है कि मनुष्य समाज के हितों की रक्षा के लिए निजी स्वार्थों का त्याग करें। उनके मत में सामाजीकरण वह प्रविधि है जो मनुष्य की चाहतों और

प्रवृत्तियों को इस प्रकार दिशा देती है कि उन्हें सांस्कृतिक रूप से सामाजिक मान्यता मिल जाए। फ्रूड के अनुसार व्यक्तित्व के तीन घटकों के माध्यमों से अथवा यह कहिए कि तीन स्तरों पर मनुष्य की सामाजीकरण की क्रिया संपन्न होती है - इद (Id), अहम् पराअहम तथा अहंकार (super ego)

स्वयंभू संवेग के अंतर्गत सभी प्रकार के मौलिक संवेग आते हैं। यह उस व्यक्तित्व का अचेतन, स्वार्थ परक, आवेगशील, प्रेरक तथा असंगत भाग है जो सदैव सुख की तलाश में लगा रहता है और दुखात्मक स्थितियों से बचता रहता है। यह संवेग मनुष्य को दूसरों की तथा समाज की परवाह किये बिना अपने स्वार्थो की पूर्ती के लिए उकसाता रहता है। जैसे कोई बच्चा किसी चीज की अतिरिक्त मांग करता है तो तब तक रोता रहता है जब तक वह उसे दे नहीं दी जाती।

अहंकार, स्वयंभू संवेग तथा पराअहम के बीच में मध्यस्थता का काम करता है। अहंकार हमारे संवेगो को नियंत्रित करने तथा उन्हें सामाजिक मान्यता के दायरों में रखने का काम भी करता है। उदाहरण के लिए जब हम बाजार में मिलने वाले छूट के लालच में आकर अधिक से अधिक खरीदारी करने के लिए लालायित हो जाते हैं तब वह हम पर दबाव बनाता है कि हम उतनी ही खरीदारी करें जितनी हमारी खरीदने की क्षमता है। स्वयंभू संवेग, अहंकार तथा पराअहम के बीच संतुलन बनाए रखने की प्रक्रिया जीवन भर चलती रहती है। यह संतुलन सामाजीकरण का मुख्य माध्यम है।

पराअहम मनुष्य को सिद्धांतों, नियमों तथा नैतिक मान्यताओं से अवगत करवाता है जिन्हें मनुष्य सामाजीकरण के प्रत्याशी प्रक्रिया से सीखता है। परम अहंकार व्यक्ति का अंतर विवेक है। वह उसके अंदर की आवाज है जो आशाओं, विश्वासों और सामाजिक निर्देशों या सामाजिक मान्यताओं को व्यवस्थित करती है। उदाहरण के लिए, जैसे, यदि कोई बच्ची किसी की दुकान से चोरी छिपे कोई सामान उठाने की कोशिश करती है, जब उसे कोई देख नहीं रहा होता है, तब उसके मन में तुरंत एक आवाज उठती है कि चोरी करना गलत है। तब, यह जानते हुए भी कि वह पकड़ी नहीं जाएगी चीज नहीं चुरा पाती। मौलिक संवेग तथा पराअहम एक दूसरे के विरोधी होते हैं। क्योंकि ना तो यह संभव है कि हम अपनी सारी इच्छाओं को पूरा कर ले और ना ही यह संभव है कि हम कुछ पाने की इच्छा ही न करें।

बोध प्रश्न

1) मीड के अनुसार किसी बच्चे का सामाजिक व्यक्तित्व कैसे विकसित होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) कूले के अनुसार दारप्रणिक निजत्व अथवा प्रतिबिम्बात्मक निजत्व का क्या अर्थ है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) व्यक्तित्व के विभिन्न घटक क्या क्या है? फ्रायड के अनुसार उनका सामाजीकरण से क्या संबंध?

.....

.....

.....

.....

.....

11.5 सामाजीकरण के माध्यम

सामाजीकरण की प्रक्रिया परिवार तक ही सीमित नहीं है। बड़ी संख्या में ऐसे समूह तथा संस्थान मौजूद है जिनसे लोग अपने समाज और समुदाय की संस्कृति सीखते हैं। परिवार सामाजीकरण की प्रथम पाठशाला है। सामाजीकरण के अन्य माध्यमों में प्रमुख रूप से सखा -मंडली, विद्यालय तथा मीडिया आते हैं। परिवार की भूमिका मनुष्य के जीवन में सबसे पहले आती है। सामाजीकरण के इस प्राथमिक चरण में माता-पिता, विशेष रूप से माता को सर्वाधिक श्रेय जाता है। इसके बाद शिक्षण संस्थान तथा मीडिया की भूमिकाएँ हैं।

11.5.1 परिवार

माता पिता एवं परिवार सामाजीकरण के सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। परिवार में सबसे पहले सामाजीकरण की प्रक्रिया माता आरंभ करती है। आधारभूत मूल्य जैसे प्यार, ममता, संवेदना, सहानुभूति, शिष्टाचार तथा लोकाचार आदि जीवन के आरंभिक चरण में परिवार में ही सिखाए जाते हैं। संयुक्त परिवारों में माता-पिता के साथ साथ चाचा चाची दादा-दादी आदि पारिवारिक सदस्य भी बच्चों के सामाजीकरण में अपना योगदान देते हैं। यदि परिवार में अनेक आँचलों व वर्गों से आए सदस्य भी मौजूद रहते हैं तब उनका बच्चों के सामाजीकरण पर विशेष प्रभाव पड़ता है। वे विभिन्न सांस्कृतिक मूल्यों के बीच बड़े होते हैं और उन्हें विभिन्न मूल्यो, शिष्टाचारों एवं आस्थाओं को अपने आप में समाहित करने का अवसर मिल जाता है। पारिवारिक समरसता और विषमता का भी बच्चे के विकास पर पूरा प्रभाव पड़ता है।

पीटरसन का मानना है कि बाल्यकाल में माता-पिता याअभिभावकों से बार-बार दूर किया जाना तथा घर बदलना भी बच्चों के मन पर दुष्प्रभाव डालते हैं। ऐसे में उन्हें नई परिस्थितियों व परिवेशों के साथ तालमेल बिठाने में कठिनाई आती है। ऐसे में बच्चे तथा किशोर तनावग्रस्त हो जाते हैं। यदि यह परिवर्तन परिवार में विखराव लाने वाले होते हैं

जैसे माता-पिता के बीच तलाक हो जाना अथवा उनका अलग-अलग रहना, बच्चों में विशेष रूप से तनाव पैदा करता है। निष्कर्ष यह है कि वे बच्चे या किशोर जिन्हें अपने परिवार से स्थाई तथा सहयोगात्मक तथा अनुकूलता से भरा वातावरण मिलता है वे उन बच्चों की तुलना में अच्छा विकास करते हैं जिन्हें पारिवारिक उथल-पुथल व अनिश्चय के वातावरण में जीना पड़ता है। भौतिक संसाधन, माता पिता का संरक्षण, पारिवारिक अनुकूलता तथा सहयोगात्मक वातावरण बच्चों के सामाजीकरण में विशेष भूमिका निभाते हैं।

11.5.2 साथी समूह

बचपन में साथियों का विशेष महत्व होता है। हम-उम्र संगी साथियों व मित्रों का सामाजीकरण में विशेष योगदान होता है। वे एक दूसरे को समझना, परस्पर सहयोग करना और समानता का व्यवहार करना साथ साथ सीखते हैं। आरंभ में साथियों के समूह पारिवारिक स्तर पर तथा घर के आसपास रहने वाले बच्चों को मिलाकर बनते हैं। जब बच्चे युवा होने लगते हैं तब वे अपने लिंग के बच्चों के साथ मित्रता करने लगते हैं और मित्र- मंडलिया बन जाती हैं। जो बच्चे मित्र मंडलियों में शामिल हो जाते हैं वे परिवार के सदस्यों की तुलना में मित्रों के साथ अधिक समय बिताते हैं। जब वे स्कूल जाने लगते हैं तो मित्रमंडल प्राय बिखर जाते है। चाहे पड़ोस में रहने वाले हो या विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाले हो या फिर साथ साथ काम करने वाले, इनका प्रभाव आजीवन रहता है।

बुकोव्स्की का कहना है ,"जब वे आपस में मिल नहीं पाते तो सोशल मीडिया आदि के माध्यम से परस्पर संपर्क बनाए रखते हैं। बाल विद्यालय में पढ़ने के दौरान जब बच्चों को क्रेच या केयर सेंटर में रखा जाता है, उन दिनों साथियों से मिलने वाले अनुभव बच्चों के दैनिक जीवन पर विशेष प्रभाव डालते हैं। इन दिनों बच्चे एक दूसरे से मिलकर रहने, चिढ़ाने, सूचनाओं के आदान-प्रदान, सहयोग, सुरक्षा, पुरस्कार, खुशियां तथा परेशान करने व नुकसान पहुंचाने जैसे मनोभावों से परिचित हो जाते हैं। बच्चे जब एक दूसरे के संपर्क में आते हैं तब एक दूसरे पर दबाव बनाने तथा धूम्रपान करने जैसी अनेक बुराइयां भी सीख जाते हैं।

11.5.3 विद्यालय

विद्यालय सामाजीकरण का प्रथम औपचारिक माध्यम है जो बच्चे के जीवन में विचारों तथा शिष्टाचारों का संचार करता है। बच्चे कक्षा में एक विशेष अनुशासन में रहना सीखते हैं। वे विद्यालय के नियमों व परंपराओं का पालन करते हैं तथा कक्षा में पढ़ाये जाने वाले पाठों को आत्मसात करने के लिए परिश्रम करते हैं। वे अपने शिक्षकों का आदर करते हैं तथा उनका कहना मानते हैं। शिक्षकों की सकारात्मक व नकारात्मक भूमिकाओं का बच्चों के जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। अध्यापकों का काम बच्चों को केवल पढ़ना -लिखना सिखाना ही नहीं है, वे बच्चों में विचार करने की क्षमता भी उत्पन्न करते हैं। कुल मिलाकर विद्यालय बच्चे के सर्वांगीण विकास में सहयोग करते हैं और उन्हें समाज के सांस्कृतिक मूल्यों से अवगत कराते हैं। इस स्तर पर बच्चों के सामाजीकरण में शिक्षकों की भूमिका उल्लेखनीय है ।

फ्रोन्स का तर्क है कि अधिकतर बच्चों के लिए शिक्षक ही दूसरे सामाजीकरण के माध्यम होते हैं। सामाजीकरण के प्रथम चरण तथा द्वितीय चरण के बीच ऐसी स्थिति में कोई अंतिम रेखा नहीं खींची जा सकती। फ्रोन्स आगे कहता है कि यद्यपि विद्यालय और उनमें पढ़ाये जाने वाले पाठ्यक्रम तथा वहां होने वाली गतिविधियां सामाजीकरण के दूसरे चरण में ही आते हैं, जबकि आरंभिक अवस्था का संख्या ज्ञान तथा अक्षर ज्ञान प्राथमिक सामाजीकरण

में आता है। बड़े शिक्षण संस्थान बच्चों को अपने औपचारिक शिक्षण कार्यक्रमों के अलावा कुछ और भी सिखाते हैं जो बच्चों के विकास में विशेष रूप से सहयोगी होता है ।

कुल मिलाकर विद्यालयों की भूमिका भी बच्चों के सामाजीकरण व उनके समुचित विकास में उतनी ही महत्वपूर्ण होती है जितनी कि परिवार की। हिंदी फिल्म "हिंदी मीडियम" में यह दिखाया गया है कि तथाकथित समाजों में बच्चों के उत्तम सामाजीकरण के लिए माता-पिता अच्छे विद्यालयों पर ज्यादाभरोसा करते हैं।

11.5.4 संचार मीडिया

संचार मीडिया में रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्र, पत्रिका, मीडिया पोर्टल तथा वेबसाइट आदि माध्यम आते हैं। फ्रूड का तर्क है कि इस इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के युग में बच्चों को सीखने के विभिन्न प्रकार के नए-नए अवसर प्राप्त हैं। इससे बच्चों के सीखने का दायरा बहुत बढ़ गया है। अब प्रथम व दूसरे चरणों के सामाजीकरणके लिए बच्चे परिवारों तथा सखा मंडली आदि पर निर्भर नहीं रह गए हैं। फ्रॅन्स का यह भी कहना है कि समकालीन सामाजिक सत्य व मिथक अब मीडिया के माध्यम से हम तक पहुंचाए जाने लगे हैं। आधुनिक दौर में सोशल मीडिया यह साबित कर चुका है कि सूचनाओं के माध्यम किस प्रकार हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। उदहारण के लिए फेसबुक के माध्यम से पेश की जाने वाली सामग्री हमारी रुचियों, पहचानो, संपर्क बढ़ाने की चाहतों को ठोस आधार प्रदान कर रही है। सूचना व संपर्क के अन्य माध्यमों की तुलना में कुछ वर्षों से टेलीविजन बच्चों को विशेष रूप से अपने प्रभाव में लेने में सफल हुआ है। टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रम जैसे सीरियल, फिल्में, कार्टून, समाचार, संगीत, फैशन, खाद्य सामग्री, विविध प्रकार की ऐतिहासिक और भौगोलिक जानकारियाँ सभी आयु वर्ग के लोगों को प्रभावित करती हैं। प्रोटेट के अनुसार, टेलीविजन द्वारा हिंसा से जुड़ी घटनाओं को बड़ा चढ़ाकर दिखाया जाना समाज में उग्रता का वातावरण पैदा कर रहा है। बच्चों को दिखाए जाने वाले कार्टून कार्यक्रम तथा सीरियल हिंसा की घटनाओं से भरे होते हैं। बच्चे टेलीविजन पर दिखाई जाने वाली हिंसा को गंभीरता से नहीं लेते परंतु फिर भी इस बात की पूरी संभावना रहती है कि वे बच्चों में असुरक्षा की भावना बिठा सकते हैं। इसके अलावा कुछ गीत, फिल्में तथा हिंसा युक्त वीडियो गेम्स भी बच्चों के मन पर बुरा प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए नीड फॉर स्पीड, बर्न आउट, रोड रैश जैसे वीडियो गेम्स भले ही खेल में जीतने वालों को पुरस्कार देते हो लेकिन वे ताबड़तोड़ स्पीड से गाड़ी चलाने वालों की प्रवृत्ति को उकसाने का काम करते हैं। यद्यपि संवेदना उत्पन्न करने वाले सुपर मारियो सनशाइन जैसे गेम्स भी टेलीविजन पर दिखाई जाते हैं जो बच्चों में सहानुभूति तथा दूसरों की सहायता से करने जैसे संस्कार डाल सकते हैं। इस प्रकार समाज में मीडिया हमारे चारों ओर पसरे विश्व की समझ पैदा कराते हुए सामाजीकरण में विशेष भूमिका निभाता है।

बोध प्रश्न

1) प्राथमिक व द्वितीय चरणों के सामाजीकरण में परिवार एवं विद्यालय की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

2) साथी समूह के सामाजीकरण के दो उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) संचार मीडिया किस प्रकार सामाजिक सामाजीकरण की प्रक्रिया पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

11.6 सारांश

इस इकाई में हमने सामाजीकरण के विभिन्न आयामों का अध्ययन किया। सामाजीकरण का अर्थ तथा उसकी प्रकृति के साथ साथ कुछ परिभाषाओं का भी अध्ययन किया। सामाजीकरण के विभिन्न प्रकारों के अध्ययन के साथ साथ सामाजीकरण के कुछ सिद्धांतों का भी अध्ययन किया। इस इकाई में हमने यह भी जाना कि सामाजीकरण के विभिन्न माध्यम क्या क्या हैं और वे सामाजीकरण की प्रक्रिया में किस प्रकार अपना योगदान देते हैं।

11.7 सन्दर्भ

अब्राहम. एम. अफ,(2014) , कंटेम्पररी सोशियोलॉजी ,ऐन इंट्रोडक्शन टू कॉन्सेप्ट्स एंड थेओरिएस , दूसरा एडिशन : ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

बिल्टोन टी (1981), इंट्रोडक्टरी सोशियोलॉजी, लंदन : थी मैकमिलन प्रेस लिमिटेड.

बुकोव्स्की, डब्ल्यू .एम्. एट अल . (2015). 'सोशलाईजेशन एंड एक्सपेरिएंसेस विथ पीअर्स' इन ग्रसेक, जे .ई. एंड हेस्टिंग्स, पी .डी. हैंडबुक ऑफ़ सोशलाईजेशनः थ्योरी एंड रिसर्च . -228.

कूले, सी.एच. (1922). 'दी सोशल सेल्फ --1'दी मीनिंग ऑफ़ आईइन ह्यूमन नेचर एंड दी सोशल आर्डर. न्यू यॉर्कः चार्ल्स स्क्रिब्नर संस. 168-210.

फ्रायड, एस. (1962). थ्री एसेज ऑन दी थ्योरी ऑफ़ सेक्सुअलिटी, ट्रांस. जेम्स स्ट्रैची. न्यू यॉर्कः बेसिक बुक्स.

फ्रोंस.आई.(2016). दी ऑटोनॉमस चाइल्ड, स्प्रिंगर ब्रीफइन वेल बीइंग एंड क्वालिटी ऑफ़ लाइफ रिसर्च डीओआई

फर्ग्यूसनएस. जे. (2002) मैपिंग द सोशल लैंडस्केपः रीडिंग्स इनसोशियोलॉजी बोस्टन मैकग्राहिल

गिड्डेन्स. ए. (2006). सोशियोलॉजी. कैंब्रिजः पॉलिटी प्रेस..

गिड्डेन्स, ए. एट अल. (2014). इंट्रोडक्शन टू सोशियोलॉजी, नाइन्थ एडिशन. न्यू यॉर्कः डब्लू .डब्लू. नॉर्टन एंड कंपनी ..

गिड्डेन्स, ए. एंड सुत्तों, पी.डब्ल्यू. (2014). एसेंशियल कॉन्सेप्ट्स इन सोशियोलॉजी. कैंब्रिजः पॉलिटी प्रेस

हरलामबोस, एम्. एंड हील्ड, आर.एम्. (2009). सोशियोलॉजीः थीम्स एंड पर्सपेक्टिव्स.

जॉनसन, एच.एम्. (1960). सोशियोलॉजीः ए सिस्टेमेटिक इंट्रोडक्शन. न्यू यॉर्कः हरकोर्ट, ब्रेस एंड वर्ल्ड.

कैनेडी, डी.बी. एंड केर्बर, ए. (1973).रीसोशलाइजेशनः एन अमेरिकन एक्सपेरिमेंट. न्यू यॉर्कः बेहविओरल पब्लिकेशंस.

लैम्ब, एम्. ई. (2012). मदर्स, फादर्स, फैमिलीज़, एंड सरकमस्टान्सेसः फैक्टर्स अफ्फेक्टिंग चिलड्रन एडजस्टमेंट. एप्लाइड डेवलपमेंटल साइंस.16:98 पृ.111.

मीड, जी.एच. (1972). माइंड, सेल्फ एंड सोसाइटीः फ्रॉम दी स्टैंड पॉइंट ऑफ़ ए सोशल बिहेवियरिस्ट. शिकागोः दी यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस.

मैक लुहान, एम्. (1964). अंडरस्टैंडिंग मीडियाः दी एक्सटेंशन्स ऑफ़ मैन. न्यू यॉर्कः मैक ग्राव हिल.

मेर्टोन,आर.के. (1957). सोशल थ्योरी एंड सोशल स्ट्रक्चर.न्यू यॉर्कः फ्री प्रेस.

मोर्टिमर, जे.टी एंड सिम्मोंस, आर.जी. (1978). 'एडल्ट सोशलाइजेशन' इन एनुअल रिव्यु ऑफ़ सोशियोलॉजी, 4:421-454.

पैटरसन, सी.जे. एट अल . (2015). 'सोशलाइजेशन इन दी कॉन्टेक्स्ट ऑफ़ फैमिली डाइवर्सिटी' इन ग्रसेक, जे.ई. एंड हेस्टिंग्स, पी.डी. हैंडबुक ऑफ़ सोशलाइजेशनः थ्योरी एंड रिसर्च. Pp. 206.

प्रोट, एस. एट अल. 2015. 'मीडिया ऐज एजेंट्स ऑफ़ सोशलाईजेशन' इन ग्रसेक, जे.ई. एंड हेस्टिंग्स, पी.डी. हैंडबुक ऑफ़ सोशलाईजेशनः थ्योरी एंड रिसर्च. Pp. 276, 280, 286.

स्ट्रैची, जे. (1961). दी स्टै.डर्ड एडिशन ऑफ़ दी कम्पलीट साइकोलॉजिकल वर्क्स ऑफ़ सिग्मंड फ्रूड, वॉल्यूम XIX (1923-1925): 'दी ईगो एंड दी आई डी एंड अदर वर्क्स'. लंदनः दी होगार्थ प्रेस एंड दी इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइकोअनाल्यिसस. 1-308.

टोले, ई.बी. एंड मॉर्गन, एल.एम्. (2002). रोमांसिंग दी ट्रांसजेंडर नेटिवः रथिंकिंग दी यूज़ ऑफ़ दी "थर्ड जेंडर" कांसेप्ट. जीएलक्यूः ए जर्नल ऑफ़ लेस्बियन एंड गे स्टडीज 8(4), 469-497. ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस.

वॉर्स्ली, पी. एट अल. (1972). इंट्रोडूसिंग सोशियोलॉजी इंग्लैंडः पेंगुइन बुक्स.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 12 संरचना और प्रकार्य*

संरचना

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 प्रत्यक्षवाद से प्रकार्यवाद

12.3 प्रकार्यवाद के आधार

12.4 सामाजिक मानव विज्ञान में प्रकार्यवाद रैडक्लिफ ब्राउन और मैलिनॉस्की

12.5 टॉलकॉट पार्सन्स और रॉबर्ट के मर्टन का प्रकार्यवाद

12.6 सारांश

12.7 संदर्भ

12.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप सक्षम होंगे :

- प्रकार्यवाद के आधार की व्याख्या कर सकेंगें;
- समाज को समझने के लिए प्रकार्य की संकल्पना के महत्व की चर्चा कर सकेंगें;
- रेडक्लिफ ब्राउन, मैलिनॉस्की और पार्सन्स के सदैघांतिक उपागम की तुलना; और व्यतिरेक कर सकेंगे।

12.1 प्रस्तावना

प्रकार्यवाद सामजिक मानव-विज्ञान और समाजशास्त्र में एक उपागम का नाम है, जिसके अनुसार समाज अंतर संबंधित हिस्सों का पूरा हिस्सा है, जहाँ प्रत्येक हिस्सा पूरे हिस्से की रख रखाव में योगदान देता है। समाजशास्त्र का लक्ष्य समाज के प्रत्येक हिस्से के योगदान का पता लगाना है और किस प्रकार पूरे हिस्से की क्रमिक व्यवस्था को साथ लेकर कार्य करता है। वहीं पर 'प्रकार्य' के कई अर्थ और कई प्रयोग हैं, लेवी, जूनियर, (1968: 22) लिखते हैः संभवतः प्रकार्य के सामान्य संकल्पना के साथ मुख्य समस्या है यह है कि एक ही शब्द का कई भिन्न संदर्भो में प्रयोग होता है।'

एक भिन्न उपागम के रूप में, समाज को देखने और विश्लेषित करने के तरीके के रूप में, प्रकार्यवाद बीसबीं शताब्दी के प्रारंभ में सर्वप्रथम सामाजिक मानव-विज्ञान में उभरा, और बाद में 1930 के शुरूआत में, समाजशास्त्र में उभरा। फिर भी, इसका मूल अनुरूपता की तरह उतना ही पुराना है, जितना कि प्राचीनकाल में प्लेटो (ई.पू. 428/7-345/7) और अरस्तू (384-322 ई.पू.) मूलभूत सादृश्य की जड़े हैं। कुछ लेखक क्लाउड हेनरी द सेंत-सिमन की अठारहवीं शताब्दी के प्रारंम्भिक और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ को 'समाज शास्त्र का जनक' मानते हैं जो कि फ्रेंच क्रांति के बाद लेखन कार्य करते हैं। क्योंकि उनके लेखन में दो विचारों का सह-अस्तिव मिलता है-पहला जिससे कि समाज का वैज्ञानिक अध्ययन उभरता है और दूसरे से पर्याप्त मात्रा में मार्क्सवादी सिद्धांत का योगदान प्राप्त होता है (गिडेन्स, 1973)। पहला विचार यह है कि समाज के अध्ययन के लिए 'वैज्ञानिक पद्धति' का प्रयोग किया जाना चाहिए। और दूसरा विचार यह है कि प्रत्येक समाज में अपने अंत

*प्रो. (से.नि) विनय कुमार श्रीवास्तव, दि.वि

विरोध का अंकुर होता है, जिसके कारण यह समय के साथ बदलता रहता है। सेंट साइमन आंदोलन को परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया मानते है।

समाज को वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने का यह पहला विचार है जिसे ऑगस्ट कॉम्ट (1789-1857), सेंतु साइमन के सहयोगी ने दिया और वे वह व्यक्ति हैं जिन्होने 'सोशियोलॉजी' शब्द को निर्मित किया। यह शब्द पूर्ण रूप से 'प्रत्यक्षवाद' या सकारात्मक दर्शन में विकसित हुआ। इस मत के अनुसार, समाज के अध्ययन की पद्धति प्राकृतिक और जीव विज्ञान से आयी। इस अध्ययन का उद्देश्य विकास के नियम' और समाज के कार्य पद्धर्म' की खोज करना या अर्थात् किस प्रकार समय के साथ समाज विकसित हुआ और उसके भिन्न स्तर क्या थे जिससे यह गुजरा और एक विशिष्ट काल में समाज किस प्रकार कार्य करता है।'

इस इकाई में हम समाजशास्त्रीय लेखन में प्रकार्य की संकल्पना का विवरण प्रस्तुत करेंगे।

12.2 प्रत्यक्षवाद से प्रकार्यवाद

समाज शास्त्र में प्रकार्यवाद के तात्कालिक अग्रदूत ऐमाईल दुर्खाइम (1858-1917) हैं, जो कि कॉम्ट के कटु आलोचक हैं और उनसे प्रभावित भी हैं, दुर्खाइम समाजशास्त्र के विषय परिभाषित करने के लिए प्रखरता के साथ रूचि रखते हैं जो कि दर्शन और जीव विज्ञान से बिल्कुल अलग है। उनके लिए, समाज शास्त्र सामाजिक तथा तुलनात्मक और वस्तुपरक अध्ययन है, जो कि सोचने और कार्य करने और अनुभव करने का तरीका है' जिसमे कि बाहर मौजूद-व्यक्ति चेतना' के 'विचारणीय गुण' है। सामाजिक तथ्य व्यक्ति में नही अपितु, समूह 'सामूहिक मन' उत्पन्न होते हैं। वे उसी तरह से अध्ययन किए जाते है जिस प्रकार से भौतिक वस्तुओं का अध्ययन किया जाता है क्योंकि वे व्यक्ति के दायरे के बाहर अस्तिव में होते है, सामाजिक तथ्य 'वस्तु' हैं, वस्तुनिष्ठ ढंग से व्यक्ति के दायरे के बाहर महसूस किए जाते है। फिर भी इसका यह मतलब नहीं कि वे उसी तरह वास्तविक है जिस प्रकार की 'भौतिक वस्तुएं'। इसके बजाय, उनके अध्ययन के लिए किसी को उसी मनोदशा का प्रयोग करना पड़ता है जो कि प्राकृतिक और जैविक वस्तुओं के अध्ययन में किया जाता है जिसमें कि प्राकृतिक और जीव-वैज्ञानिक विषय-वस्तु शमिल होते हैं। दुर्खाइम की पुस्तक 'रूल्स ऑफ बायोलॉजिक मेथड (1893)' मुख्य रूप से इन्हीं समास्याओ से संबाधित है।

समाजशास्त्रीय विवरण

सामाजिक तथ्य के अध्ययन से, समाजशास्त्री प्रस्तुत करते हैं जिसे कि दुर्खीम 'सामजिक विवरण' कहते है। प्रत्येक समाजशास्त्रीय विवरण में दो हिस्से होते हैः यहाँ दुर्खाइम (1893:123) को उद्घृत करते हुए : '.....सामाजिक घटना की व्याख्या हेतु प्रभावी मामला जो इसे उत्पन्न करता है और कार्य जो यह पूर्ण करता है उसका अलग से अन्वेषण किया जाना चाहिए,' समाजशास्त्रीय विवरण का पहला घटक 'ऐतिहासिक निमित्र विवरण' है : उन कारणों को अंकित करना जो ऐतिहासिक स्त्रोतो का परीक्षण करके दृश्य उत्पन्न करते हैं न कि लिप्त हो कर जिसे रेडक्लिफ ब्राउन' अनुमानिक इतिहास' कहते हैं'। दूसरा घटक 'प्रकार्यात्मक है, अर्थात-एक घटक समाज को जो योगदान करता है 'सामान्य सद्भावना स्थापित करने में ।' दुर्खाइम (1895:125)

दुर्खीम के द्वारा प्रतिपादित प्रकार्य की परिभाषा ने आश्चर्य जनक रूप से उनके बाद के समाजशास्त्र और सामाजिक मानवविज्ञान दोनों में प्रकार्यवादियों के लेखन को प्रभावित किया, उनके अनुसार, प्रकार्य एक 'योगदान' है जो एक घटक पूरे समाज के 'रखरखाव और भलाई' हेतु करता है इसलिए, प्रकार्य एक 'सकारात्मक योगदान हैः यह समाज की अच्छाई

में अतंनिहित है (पूर्ण रूप से), जिसके लिए यह निरंतरता सातत्य और स्वस्थ रखरखाव सुनिश्चित करता है।

उदाहरण के तौर पर अपने शोध कार्य में, जो कि श्रम-विभाजन पर था, दुर्खीम (1893) डार्विन के उत्तरजीर्वता के विचार को नकारते हैं। इसके बजाय प्रतियोगिता संघर्ष और बहिष्कार के सिद्धांत को समर्थन प्रदान करते है।, दुर्खीम यह दर्शाते है कि जैसे-जैसे मानव जनसंख्या में वृद्धि होती है समाज अधिक से अधिक श्रम-विभाजन में नौकरियों के विशेषीकरण की ओर अग्रसर होकर बँट जाती है। दूसरों के साथ उत्तरजीविका के लिए संघर्ष करने के बजाय मनुष्य एक दूसरे पर निर्भर होने लगता है। विशेषीकरण हर एक को समाज में महत्वपूर्ण बना देता है।

दुर्खीम उपयोगितावादियों (अर्थात-आर्थिक) और व्यक्तिवादियों (अर्थात मनोवैज्ञानिक) की व्याख्या के भी आलोचक हैं, क्योंकि उनके अनुसार उनमें से कोई श्रम-विभाजन के वास्तविक प्रकार्य की सही व्याख्या नहीं करता। उनके अनुसार, श्रम विभाजन का प्रकार्य समाज अमलीय है। यह सामाजिक एकता में योगदान करता है। आधुनिक औद्योगिक समाज एकजुट है क्योंकि नौकरियों के विशेषीकरण के द्वारा एक दूसरे पर निर्भरता बढ़ती है। आस्ट्रोलियाई-टोटमवाद के अपने अध्ययन में, वे दर्शाते हैं कि धर्म का प्रकार्य समाज में एकता उत्पन्न करना है, लोगों को नैतिक समुदाय में बाँधना चर्च कहलाता है' (दुर्खीम, 1915)।

दुर्खीम विशेष रूप से यह दर्शाने में रूचि रखते हैं कि सामाजिक तथ्यों का कार्य नैतिक है। सामाजिक संस्थाएँ एकता के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए काम करती हैं।

इस दृष्टि से, वे ऐसी घटनाओं को गिनाने में सफल रहे है, जिनमें से कई, समाज के लिए 'अस्वास्थ्यकर' साबित हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, वे अपराध को 'सामान्य' और 'स्वस्थ' लक्षण सभी समाजों के लिए मानते हैं, क्योकि यह सामूहिक भावना को सुदृढ़ करती है और नैतिकता और कानून के विकास की दिशा में कार्य करती है। अपराध का समान्य दर यह संकेत करता है कि समाज व्यक्ति के उन्हें 'व्यक्तियों' के रूप में अभिव्यक्त करने सभी 'विचलन' को 'दबाने' के पूरे अधिकार के अभाव में रहता है जब अपराध सामान्य दर से अधिक हो जाता है तब यह अस्वस्थ (या रोगात्मक) बन जाता है, समाज के सामान्य कार्य को जोखिम में डालता है। जैसा कि स्पष्ट है, कि दुर्खीम सामाजिक तथ्यों के 'सामान्य है 'रोगात्मक' को अलग मानते हैं। समाज में जो सामान्य है वह ठीक है और जो नहीं है वह रोगात्मक है। पहला समाज को जोड़ने का कार्य करता है, जबकि दूसरा एकीकरण की प्रक्रिया को विफल करता है।

12.3 प्रकार्यवाद के आधार

दुर्खीम 'प्रकार्यवादी' नहीं है जिस अर्थ में यह शब्द प्रयोग हुआ है जिस उपागम के लिए ब्रितानी समाज मनाव विज्ञानी, ए.आर. रेडालिक ब्राउन (1881-1955) ने इसका प्रयोग किया है और बॉनीस्लाव मैलिनॉस्की (1884-1942) ने जिस प्रकार इसका समर्थन किया है। दुर्खीम 'प्रकार्यवाद' शब्द का प्रयोग नहीं करते, हॉलाकि वे सामाजिक प्रकार्य की संकल्पना को परिभाषित करते हैं। कोई दुर्खीम के कार्य के सही सह-अस्तिव ऐतिहासिक (आनुवंशिक, विकासवादी और ऐतिहासिक) और सयकालिक (समाज यहॉ और अब) उपागम से अवगत हो सकता है। उदाहरण के लिए, अपने धर्म के प्रमुख अध्ययन मे, वह आस्ट्रोलियाई टोटमवाद के विचार से शुरू करते है, जो धार्मिक जीवन की सबसे प्रांरभिक रूप है, इसके उद्‌गम के अनुमान की बजाय वह टोटमवाद के प्रकार्य से ज्यादा संबध रखते है और किस

प्रकार इसका अध्ययन जाटिल समाजों में धर्म के स्थान को समझने में मदद कर सकता है। समकालिक (या वर्तमान) समाजों के अध्ययन पर जोर ने परवर्ती विद्वानों पर जबरदस्त प्रभाव डाला।

बीसवीं शताब्दी की शुरूआत ने प्रकार्यवाद के उदय और विकासवादी सिद्धांत के लोप को देखा। एडन कुपर (1973) मानते हैं कि प्रकार्यवाद के लिए वर्ष 1922 आश्चर्य का साल (एनस मिराविलिस) था। इसी वर्ष दो प्रबन्ध प्रकाशित हुए जिसने कार्यात्मक उपयोग को प्रभावित किया। पहला रेडक्लिफ-ब्राउन द्वारा अडमान आइलैंडर्स और दूसरा, मेलिनॉस्की द्वारा पश्चिमी प्रशांत के अर्गोनॉट्स था। मानव विज्ञानी प्रकार्यवाद का प्रभाव अन्य विषयों विशेषतया समाजशास्त्र पर भी अनुभव किया गया, टेल्कोट पार्सन्स जैसे समाजशास्त्री कार्यवादी मानव विज्ञानिय के लेखन से प्रभावित थे। इसके परिणामस्वरूप प्रकार्यवाद एक महत्वपूर्ण उपागम के रूप में उभरा, इसका प्रभाव 1960 दशक के अंत और 1970 दशक के प्रारंभ तक रहा। इसके 150 वर्षो के इतिहास में, पहला कॉम्ट के प्रत्यक्षवाद में, उसके बाद दुर्खीम के 'समाजक्षेत्रीय प्रत्यक्षवाद' में, और फिर बीसवीं शताब्दी के प्रकार्यवादियों के कार्य में, प्रकार्यवाद कई तथ्य और रूपांतर समाहित करके आया है। कई प्रकार्यवादियों के मध्य तर्क संगत अंतर पाया जाता है- वास्तव में, उनमें से कुछ मुख्य प्रतिद्वंदी हैं, जैसे कि रेडक्लिफ ब्राउन और मैलिनॉस्की। उनके मध्य मतभेद होने के वावजूद, ऐसा लगता है कि सभी प्रकार्यवादियां के कार्य में निम्न पॉच प्रतिज्ञप्तियॉ एक समान हैं।

1) समाज (या संस्कृति) अन्य पद्धतियों की तरह एक पद्धति है, जैसे कि सौर-मंडल, या जैव मंडल।

2) एक पद्धति के रूप में, समाज (या संस्कृति) के कई भाग है, (जैसे, संस्था, समूह, भूमिका, संध, संगठन), जो कि परस्पर संबद्ध, परस्पर निर्भर और अंत संबंधित है।

3) प्रत्येक भाग अपना कार्य करता है- यह पूरे समाज (या संस्कृति) को अथवा योगदान देता है - और यह अन्य भागों के साथ भी संबंध बनाकर कार्य करता है।

4) एक भाग में परिवर्तन दूसरे भाग में भी परिवर्तन लाता है, या कम से कम दूसरे भाग और के कार्य को प्रभावित करता है, क्योंकि सभी भाग एक दूसरे से नजदीकी संबंध बनाकर जुड़े रहते है।

5) पूरा समाज या संस्कृति - जिसके लिए हम 'पूर्ण/संपूर्ण' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं यह सभी हितों के योग से बड़ा होता है। यह किसी भाग से कम नहीं हो सकता, या कोई भाग संपूर्ण को व्याख्या नहीं कर सकता। एक समाज (या संस्कृति) की अपनी पहचान होती है, अपनी 'चेतना' होती है, या दुर्खीम के शब्दों में, 'सामूहिक चेतना' होती है।

12.4 सामाजिक मानव विज्ञान में प्रकार्यवादः रेडक्लिफ ब्राउन और मैलिनॉस्की

दोनों ब्रितानी प्रकार्यवादी दृष्टिकोण के संस्थापक (रेडक्लिफ ब्राउन और मैलिनॉस्की) उन्नीसवीं शताब्दी के विकासवाद के प्रखर विरोधी थे। रेडक्लिफ ब्राउन (1952) ने कहा कि यह 'आनुमानिक इतिहास' पर आधारित था, एक शब्द जिसे हमने पहले प्रयोग किया, और न कि प्रमाणिक इतिहास। यह छद्म ऐतिहासिक' था, इसलिए वैज्ञानिक मूल्य से अलग था। मैलिनॉस्की के लिए विकासवाद 'अनुमानिक पुनर्निमाण का कारागार था। इन विद्वानों के

कार्य से एक बदलाव आया :

1) बिना क्षेत्र कार्य मानव विज्ञान से क्षेत्र कार्य आधारित अध्ययन पर जोर,

2) समाज के विकास के स्तरों और समाज के उद्‌विकास के अध्ययन से संस्थाओं (ऐतिहासिक अध्ययन) के अध्ययन, से समाज यहाँ और अब (समकालिक अध्ययन) की ओर।

3) पूरे समाज और संस्कृति (दीर्घ उपागम) के अध्ययन से विशिष्ट समाज के अध्ययन की ओर, विशेष रूप से छोटे स्तर के समाज (सूक्ष्य उपागम), और

4) सैद्धान्तिक स्तर तक सीमित समाज की समझ यहॉ और अब के सामाजिक ज्ञान को रखकर व्यावहारिक प्रयोग की ओर बढना, समाज में इच्छित परिवर्तन लाने के लिए। यह माना गया कि अर्जित ज्ञान समाज में लोगों की स्थिति सुधारने के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए। मैलिनॉस्की ने मानव-विज्ञान के इस संबंध को 'व्यावहारिक मानव विज्ञान' कहा।

प्रकार्यवादी अपनी आलोचना को विकास और प्रसार की प्रक्रिया के विरूद्व नहीं लगाया, जिसके लिए वे जानते थे कि ये परिवर्तन की महत्वपूर्ण प्रक्रियाएँ है। वास्तव में, रेडक्लिफ-ब्राउन और मैलिनॉस्की सोचते थे कि संभवतः वे इन प्रक्रियाओं के अध्ययन को करेंगे। वे जिसके विरूद्व थे वह था 'आनुमानिक इतिहास' के माध्यम से अतीत का अध्ययन बल्कि वे आनुमनिक अध्ययन में विश्वास करते थे। यदि प्रमाणित दस्तावेज समाज के बारे में उपलब्ध हो वे बदलाव में कुछ अंतदृष्टि हेतु उपयोग में लाए जा सकते है। किन्तु प्रकार्यवादियों ने यह पाया कि 'प्राक् और पूर्व-शिक्षित' समाजों के बारे में दस्तावेज उपलब्ध नहीं थे।

क) रेडक्लिफ ब्राउन कर संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम

रेडक्लिफ-ब्राउन (1952:180) प्रत्येक समाज को 'प्रकार्यात्मक अंत संबंधित पद्धति' के रूप में परिभाषित करते हैं जिसमें कि 'सामान्य नियम या कार्य संचालित होते है वह स्वीकार करते हैं कि दुर्खीम ने पहला व्यवस्थित प्रकार्य संकल्पना को निरूपित किया और यह संकल्पना 'सामाजिक और जैविक जीवन के मध्य सादृश्य' पर आधारित है। फिर भी, रेडक्लिफ ब्राउन ने संदेह व्यक्त किया कि प्रकार्यवाद जैसा कि दुर्खीम ने प्रयोग किया है वह उद्‌देश्य परक हो सकता है। इसलिए वे 'आवश्यकता' शब्द के लिए इस्तेमाल करते हैं जो कि 'अस्तित्व की आवश्यक स्थिति' है। वह मानते है कि अस्तित्व के लिए जिस स्थिति का प्रश्न आवश्यक है वह अनुभावात्मक है, और समाज का अध्ययन इसके बारे में सूचित करेगा। रेडक्लिफ ब्राउन ' विभिन्न पद्धतियों के अन्तर्गत के लिए आवश्यक स्थिति की विविधता' को पहचानते है। एक बार जब हमने इसे पहचान लिया, हम यह कहने से बच जाएंगे कि संस्कृति के प्रत्येक विषय का एक प्रकार्य होना चाहिए और कि 'विभिन्न संस्कृतियों के विषयों का एक ही प्रकार्य होना चाहिए' (टर्नर 1987:48)।

रेडक्लिफ ब्राउन 'प्रकार्यवाद' शब्द को पंसद नहीं करते, जिसे कि मैलिनॉस्की ने उत्साह के साथ प्रसारित किया। उदाहरण के लिए, एक संस्थान समाप्त हो जाता है, किन्तु समाज समय के साथ अस्तित्व में बना रहता है, हॉलाकि यह बदल सकता है और रूपांतरित भी हो सकता है। एक संस्थान का अध्ययन हो सकता है यहाँ तक कि जब इसके हिस्से काम करना बंद कर दें। दूसरे शब्दों में, एक संस्थान की संरचना का अध्ययन उसके प्रकार्य से हटकर किया जा सकता है, जो कि समाज के साथ ऐसा नहीं है। सामाजिक संरचना को तभी देखा जा सकता जब यह काम करता है। संरचना और प्रकार्य समाज-मानव विज्ञान में अलग न किये जाने वाली संकल्पनाएं है। इसलिए रेडक्लिफ ब्राउन अपने उपागम को

'संरचनात्मक प्रकार्यात्मक' कहते है, न कि 'प्रकार्यत्मक' जैसा कि कईयों ने किया है। वह लिखते है। (1952 : 180)

प्रकार्य की संकल्पना में संरचना की संकल्पना शामिल रहती है जिसमें संबंधों के समुच्चय इकाई तत्वों के बीच भी शामिल रहती है, सरंचना का सातत्य जीवन की प्रक्रिया से सुरक्षित रहती है जो इकाई अंगों से बनी होती है।

रेडक्लिफ ब्राउन के संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम में निम्न धारणाएँ शामिल रहती हैः

1) समाज के अस्तित्व के लिए आवश्यक स्थिति बनाए रखना इसके हिस्सों का न्यूनतम एकीकरण है।

2) प्रकार्य की संकल्पना उन प्रक्रियाओं की ओर संकेत करती है जो आवश्यकता एकीकरण या एकता को बनाए रखती है।

3) और, प्रत्येक समाज में, संरचनात्मक लाभ आवश्यक एकता के बचाए रखते के योगदान को प्रदर्शित कर सकती है।

दुर्खीम के लिए, एकता मुख्य (केंद्रीय) संकल्पना है, जबकि रेडक्लिफ ब्राउन के लिए यह समाज का 'संरचना सातत्य' है। उदाहरण के लिए, वंश परंपरा के विश्लेषण में, रेडक्लिफ ब्राउन के अनुसार, सर्वप्रथम किसी को यह मान लेना चाहिए कि एकता का कुछ न्यूनतम स्तर इसके सातत्य में अवश्य बने रहना चाहिए। तब वंश परंपरा से जुड़ी प्रक्रियाओं का परीक्षण किया जाना चाहिए, उनके द्वारा सामाजिक एकता को बनाए रखने के परिजामों के मूल्यांकन हेतु। तब, कोई समाज के दूसरी पंरपराओं की ओर मुड़ेगा, उनके अंगों के योगदान का प्रत्येक स्तर पर विश्लेषण पूर्व संरचनात्मक सातत्य को बनाए रखेगा।

रेडक्लिफ ब्राउन अपने कथन के हठधर्मी होने से काफी दूर हैं। उनके लिए, सामाजिक व्यवस्था की प्रकार्यात्मक एकता (या एकीकरण) एक परिकल्पना है कि हम समाज की एकता और संरचनात्मक सातत्य को देखते हैं जिसका यह मतलब नहीं कि यह बदलता नहीं, रेडक्लिफ ब्राउन यह मानते है कि सामाजिक स्वास्थ्य की अवस्था (यूनोमिया) और सामाजिक बीमारी (डिसनोमिया) सातत्य के दो सीमाओं को शामिल करते है, और वास्तविक समाज इन दोनों के मध्य कहीं पड़ा रहता है।

मैलिनॉस्की का प्रकार्यवाद

रेडक्लिफ ब्राउन से तुलना करने पर, यह मैलिनॉस्की हैं के अलग 'विचारधारा' के निर्माण का दावा करते हैं, 'प्रकार्यात्मक स्कूल'। मैलिनॉस्की (1926:132-3) मानते हैं कि प्रत्येक सभ्यता में प्रत्येक प्रथा, भौतिक वस्तु, विचार और विश्वास कुछ महत्वपूर्ण प्रकार्य की पूर्ति करता हैं, तथा इसे कुछ कार्यों की भी पूर्ति करनी होती है और यह कार्यरत पूर्ण के भीतर अपरिहार्य होता है।

जबकि रेडक्लिफ ब्राउन समाज और इसके अस्तित्व के आवश्यक स्थिति (अर्थात् एकीकरण) से शुरू करते हैं, मैलिनॉस्की का प्रारंम्भिक बिंदु व्यक्ति है, जिसकें पास मूल (या जैविक) आावश्यकताओं का समुच्चय होता है। जिसे उसके अस्तित्व के लिए पूरा किया जाना चाहिए। यह इस महत्व के कारण है कि मैलिनॉस्की व्यक्ति को प्रदान करते हैं वह शब्द है 'मनोवैज्ञानिक प्रकार्यवाद' जो व्यक्ति के जिए संरक्षित हैं, रेडक्लिफ ब्राउन के उपागम की तुलना में जिसे 'सभाचर भारतीय प्रकार्यवाद' कहा जाता है क्योंकि इसमें समाज एक मुक्त संकल्पना है।

मैलिनॉस्की का उपागम तीन स्तरों के मध्य तुलना करता है, जैविक सामाजिक संरचनात्मक और सांकेतिक (टर्नर 1987: 50-1)। इन प्रत्येक स्तरों की आवश्यकतों की एक प्रवृत्ति है जो कि व्यक्ति को जीवित बचे रहने के लिए उसकी पूर्ति करना जरूरी है। यह उसकी

उत्तर जीविता है कि बड़े अस्तित्व को उत्तर जीविता (जैसे कि समूह, समुदाय, समाज) उस पर निर्भर रहती है। मैलिनॉस्की प्रस्तावित करते हैं कि इन तीनों स्तरों में एक अधिक्रम है। इसके नीचले स्तर पर जैविक व्यवस्था रखी गई हैं, उसके बाद सामाजिक संरचनात्मक व्यवस्था है और अंत में, सांकेतिक व्यवस्था है। जिस तरह एक स्तर पर आवश्यकताओं की पूर्ति होती है वह दूसरे स्तर के आवश्यकताओं की पूर्ति में भी वैसा ही प्रभाव डालती है।

सबसे मूल आवश्यकता जैविक है, किंतु यह किसी प्रकार के अपचयवाद की और संकेत नहीं करती, क्योंकि प्रत्येक स्तर में इसके भिन्न गुण और आवश्यकताएँ शमिल होती हैं और कई स्तरों के अंतसंबंधों से संस्कृति की एक एकीकृण पूर्णता उजागर होती हैं। संस्कृति मैलिनॉस्की के उपागम का मुख्य बिंदु है। यह अनोखा मानवीय है, जिसके लिए यह उप मानवीयता के अस्तित्व में नही पाई जाती। इन सभी चीजों को मिलाकर भौतिक और अभौतिक जिसे कि मनुष्य ने बनाया है जबसे वे अपने वानर पूर्वज़ों से अलग हुए हैं। संस्कृति वह उपकरण जिससे कि मनुष्य अपनी जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह आवश्यक सेवा और आवश्यक पूर्ति की व्यवस्था है। इस भूमिका की वजह से संस्कृति मनुष्य की जैविक आवश्यक पूर्ति करता है जिसके कारण मैलिनॉस्की का प्रकार्यवाद 'जैस सांस्कृतिक प्रकार्यवाद' कहलाता है।

रेडक्लिफ ब्राउन और मैलिनॉस्की के बीच एक और अंतर पर विचार किया जा सकता है। मैलिनॉस्की की मौलिक संकल्पना संस्कृति की संकल्पना है - घटना मात्र है। (गौड़ और प्रासंगिक) रेडक्लिफ ब्राउन के लिए। वह मानते हैं कि सामाजिक संरचना का अध्ययन (जो कि उनके अनुसार प्रेक्षयीय तत्व है) संस्कृति के अध्ययन को भी समाहित कर लेती हैं, इसलिए, संस्कृति के अध्ययन के लिए अलग अनुशासन की जरूरत नहीं है। अभी जबकि सामाजिक संरचना व्यक्तित्व लोगो को होती हैं, संस्कृति लोगों के मन में होती हैं, अवलोकन के अधीन नही होती है उसी तरह नहीं होती जैसे कि सामाजिक संरचना होती है। रेडक्लिफ ब्राउन सामाजिक मानव विज्ञानिकों प्राकृति के विज्ञान को एक शक्ति बनाना चाहते हैं, जो तभी संभव होगा जब आनुभविक अन्वेषण की विषय सामवती होगी।

मैलिनॉस्की के उपागम का आधार 'महत्वपूर्ण अनुक्रम सिद्वांत हैं, जिसका कि जैविक आधार है और वह सभी समाजों में समाविष्ट की जाती है। मे अनुक्रम ग्यारह तक होता हैं, हर एक में एक मनोवेग को बनाए रखता हैं, एक दैहिक क्रिया से जुड़ी होती हैं, और एक संतोष जो उस क्रिया के परिणाम से प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए, निद्राकुता का मनोवेब सोने के कार्य को साथ लिए रहती हैं, 'बची हुई ऊर्जा के जागृति के संतोष में परियत होती है। (मैलिनॉस्की 1944:77, बनदि 2000:68)। मैलिनॉस्की ग्यारह प्रदत के रूपावली को सात जैविक आवश्यकताओं और उनके सांस्कृतिक प्रत्युत्तर के समुह के साथ मानते हैं (देखें तालिका 6.2)।

मूल आवश्यकता	संस्कृति प्रत्युत्तर
1. मेटावॉलिज्म़	सहानुभूति
2. उत्पत्ति	नातेदारी
3. शरारिक आराम	आप्रय
4. ब्चाव	सभवाभ
5. गतिविधि	क्रियाकलाप
6. विकास	प्रक्षिशक
7. स्वास्थ्य	स्वास्थ्य विज्ञान

उदाहरण के लिए, पहली आवश्यकता भोजन है, और सांस्कृतिक तंत्र भोजन प्राप्त करने की प्रक्रिया पर केंद्रित हैं, जिसके लिए मैलिनॉस्की सहानुभूति शब्द का इस्तेमाल करते हैं, जिसका तात्पर्य होता है कि भोजन को भेजना। उसी तरह, दूसरी आवश्यकता उत्पत्ति (समाज का जैविक सातत्य) की है और जिसका सांस्कृतिक प्रत्युत्तर नाते दारी है जो विवाह और यौन संबंध से संबंधित है। इससे, मैलिनॉस्की चार परत अनुक्रम में जाते हैं, जिसे वे उपकरणात्मक आदेश कहते हैं, और सभी को उसके सांस्कृतिक प्रत्युत्तर से जोड़ते है। चार परत वाला अनुक्रम है अर्थ, सामाजिक नियंत्रण, शिक्षा और राजनीतिक संगठन। यहाँ से, वे सांस्कृतिक व्यवस्था की ओर बढ़ते हैं - धर्म, जादू, विश्वास और मूल्य संस्कृति में इसकी भूमिका का वे परिक्षेय करते हैं।

12.5 टॉलकोट पार्सन्स (1902-1975) और रॉबर्ट मर्टन (1910-2003 का प्रकार्यवाद

सन् 1975 में, एक महत्वपूर्ण लेस में, पार्सन्स अपने विद्याथी रॉबर्ट मर्टन और स्वंय को प्रखर प्रकार्यवादी करार देते हैं। उनके अनुसार, संरचना जीवित व्यवस्था के अंगों के मध्य संबंधों के किसी समूह को कहते हैं। अनुभविक आधार पर, वे कहते हैं, इसका अनुमान लगाया जा सकता है, या दिलाया जा सकता है कि ये संबंध कुछ काल तक स्थिर रहते हैं। प्रक्रिया संरचना से सहसवादी संकल्पना हैं, कोई परिवर्तन कहता है जो व्यवस्था की अवस्था में होता है या कि इसके प्राभाविक हिस्सों में होता हैं। संरचना के साथ, मुख्य संकल्पना स्थिरता की है, और प्रक्रिया के साथ, यह परिवर्तन की है। इसलिए, संरचना से, सामाजिक व्यवस्था के संबंधों के प्रतिमान का ध्यान दिलाता है, और प्रक्रिया उस व्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों की ओर ध्यान दिलाता है, संरचना मात्सक प्रकार्यवाद का महत्वपूर्ण अभिलोकन रहा है कि इसने प्रक्रिया की अपेक्षा संरचना पर जोर दिया है।

पार्सन्स मानते हैं कि उनका मूल प्रतिपादन संरचनात्मक प्रकार्यवाद, शीर्षक से है समाज का विश्लेषण उसे स्थिर होने की प्रवृत्ति से करते हैं, किंतु नया प्रतिपादन, संरचनात्मक प्रकार्यवाद, शीर्षक से है समाज का विश्लेष उसे स्थिर होने की प्रवृत्ति से करते हैं, किंतु नया प्रतिपादन/जहाँ प्रकार्य की संकल्पना पर ज्यादा जोर है अपेक्षाकृत संरचना के, जो परिवर्तन और विकास को ज्यादा महत्व देता है। उदाहरण के तौर पर कोई अमेरिकी संदर्भ में इसका परिक्षेप कर सकता है।, स्थिर संरचना जैसे कि परिवार में महिलाओं की शिक्षा की प्रक्रिया का प्रकार्य (पार्सन्सः 1951)।

पार्सन्स का प्रकार्यवाद, प्रकार्यात्मक आदेश के शब्दों में अधिक जाना जाता है। व्यवस्था के अस्तित्व को बनाए रखने की आवश्यकता स्थिति की जरूरत पड़ती है। इसे अंग्रेजी भाषा में AGIL मॉडल के नाम से भी जाना जाता है (पहले चार अक्षरों के प्रकार्य पर आधारित जिसका पार्सन्स ने खोज किया है) या 'चार-प्रकार्य रूपावली' यह पार्सन्स के सहयोगी कार्य रॉबर्ट एफ. बेल्स के साथ लघु समूहों में नेतृत्व के प्रयोग से विकसित हुआ (रॉकर : 1974)।

सभी कर्म सिद्दांत और समान उनमें से एक हैं - चार प्रमुख समस्याओं का सामना करें (जो चार प्रमुख आवश्यकताएँ हैं), अर्थात् अनुकूलन (A), लक्ष्य प्राप्ति (G), एकीकरण (I), और आदर्श अनुपालन या जैसा कि पार्सन्स ने दूसरा नाम दिया, अंतनिर्हित (अव्यक्त) आदर्श अनुपालन या समान रूप से, अव्यक्तता (L)। पार्सन्स समाज (या सामाजिक व्यवस्था) को एक बड़े वर्ग के रूप में देखते हैं, जिसे वे चार बराबर भागों में बाँटते हैं। रेखाकित विचार यह है कि सभी व्यवस्थाओं को इन चार प्रकार्यों को जीवित रहने के लिए आवश्यक रूप से पूरा करना चाहिए। इन चार प्रकार्यात्मक आदेशों के अर्थ इस प्रकार हैं।

1) अनुकूलनः इसका तात्पर्य समाज से काफी मात्रा में संसाघनों को जुटाने की समस्या से है और उन्हें पूरी व्यवस्था में बाँटने से है। प्रत्येक समाज को कुछ संस्थाओं की जरूरत होती है। जो व्यवस्था में अनुकूलन का प्रकार्य करते हैं जो कि एक बाह्य प्रकार्य है। अनुकूलन साधान प्रदान करता हैं - उपर्कात्यक पक्ष - लक्ष्य की प्राप्ति के लिए है। जैविक तत्व कार्य के सामान्य व्यवस्था में अनुकूलन का कार्य करते हैं। समाज के संदर्भ में, आर्थिक संस्था यह प्रकार्य करती हैं।

2) लक्ष्य प्राप्ति : यह प्रकार्य संसाधन जुटाने के लक्ष्य प्राप्ति की आवश्यक व्यवस्था से संबंधित है और पूरी व्यवस्था में उसे बाँटने से है। यह कार्य करने वालों की अभिप्रेरणा को लामबंध (संघटित) करती है। कार्य की समान्य व्यवस्था में, व्यक्तित्व इस प्रकार्य को करता है, जबकि समाज के मामले में यह कार्य राजनीतिक संस्थाओं का दिया जाता हैं, क्योंकि सत्ता निर्णय लेने और उसे अमल में लाने के लिए आवश्यक होती हैं। लक्ष्य प्राप्ति ध्येय से संबंधित हैं - उपभोगात्मक पक्ष। चूँकि लक्ष्य बाह्य वातावरण के संबंध से चित्रित की जाती हैं, यह अनुकूलन की तरह हैं, एक बाह्य प्रकार्य।

3) एकीकरणः यह पार्सन्स के चार प्रकार्य रूपावली का ह्रदय माना जाता है (वैलेस ए. ड वोफ 1980:36)। एकीकरण का अर्थ विभिन्न कर्त्ताओं (या, व्यवस्थाओं इकाई जैसे कि संस्थाएँ) के मध्य संबंध नियंत्रित करना, समायोजन और संयोजन की आवश्यकता। जिससे कि व्यवस्था एक चलायमान तत्व बना रहे। क्रिया के सामान सिद्धांत के अनुसार, सामाजिक व्यवस्था इस प्रकार्य को निभाती है, जबकि समाज में, वैधानिक संस्थाएँ और न्यायालय इस कार्य को करते हैं। एकीकरण ध्येय या साहस से संबंधित हैं, और व्यवस्था के आंतरिक पक्ष से भी संबंधित हैं।

4) अव्यक्तता (आदर्श अनुपालन और तनाव प्रबंधन) : इस प्रकार्य में व्यवस्था को ज्ञान और सूचना प्रदान करना शामिल होता है। क्रिया के सामान्य सिद्धांतों में, संस्कृति ज्ञान और सूचना का संग्रह - इस प्रकार्य का निष्पादन करते हैं। संस्कृति कार्य नहीं कर सकती क्योंकि इसके पास ऊर्जा नहीं होती। यह छिपी होती हैं, कर्त्ताओं को उपलब्ध (जो कि ऊर्जा से भरे होते हैं) करातीं है ज्ञान और सूचना जिसकी आवश्यकता क्रिया को पूरा करने के लिए होती हैं। क्योंकि संस्कृति पीछे अस्तित्व में होती हैं लोगों को कार्य पूर्ण करने के लिए, इसे अव्यक्त कहते हैं। एकीकरण दो चीज़ों पर ध्यान देती हैं, पहला यह कर्त्ता को प्रेरित करती है व्यवस्था में अपनी भूमिका निभाने हेतु और आदर्श मूल्यों को बनाए रखने हेतु, और दूसरा, कर्त्ताओं के विभिन्न अंगों के बीच आंतरिक तनाव प्रबंधन की यात्रिकता प्रदान करना। प्रत्येक समाज जिस समस्या का सामना करती हैं वह है उसकी मूल्य व्यवस्था को अक्षुण बनाए रखना और यह सुनिश्चित करे कि वे मूल्य अच्छी तरह संप्रेषित किए जाएँ और उसे आत्यसात कर पाएँ। संस्थाएँ इसे आगे बढ़ाती है वे परिवार, धर्म और शिक्षा। अव्यक्तता ध्येय प्राप्ति का साधन प्रदान करती हैं, यह व्यवस्था का आंतरिक हिस्सा हैं।

AGIL मॉडल

साधन (उपकरणात्मक)	ध्येय (उपभोगात्मक)
बाह्य अनुकूलन A	लक्ष्यप्राप्ति G
आतंरिक अव्यक्तता (आर्दश अनुपालन और तनाव मुक्त प्रबंधन) यात्रिकता	एकीकरण I

कर्म सिद्धांत का	सामान्य स्तर
तत्व	व्यक्तित्व
संस्कृति	समाजिक व्यवस्था

समाजिक व्यवस्था में AGIL प्रकार्य

अर्थ	राजनीति
न्यालीय व्यवस्था	सामाजिक समुदाय

विश्लेषण के उद्देश्य के लिए, पार्सन्स AGILके अनुरूप उप-व्यवस्था की पहचान करते हैं सभी व्यवस्थाओं में और उनके उप व्यवस्थाओं में भी (देखें चित्र)। जैसे कि हमने देखा हैं, कर्म सिद्धांत के सामान्य स्तर पर जैविक तत्व अनुकूलन का प्रकार्य करता है, व्यक्तित्व व्यवस्था, लक्ष्य प्राप्ति का प्रकार्य, सामाजिक व्यवस्था कई इकाइयों को जोड़ती हैं, और सांस्कृतिक व्यवस्था आदर्श अनुपालन से संबंधित है। तब सामाजिक व्यवस्था चार AGIL प्रकार्यों में बाँटा गया है। हमने पहले ध्यान दिया कि अर्थ अनुकूलन का प्रकार्य करता हैं, जबकि, राजनीतिक (राजनीतिक संस्था), लक्ष्य प्राप्ति का प्रकार्य है। उप-व्यवस्था के लिए जो एकीकरण का प्रकार्य करती हैं, पार्सन्स 'सामाजिक समुदाय' शब्द का प्रयोग करते हैं, जो कि कठिनाई होती होती है के जेमिनशाफ्ट (समुदाय) के विचार को याद दिलाता है। 'सामाजिक समुदाय' भाईचारा, एकता, सम्बद्धता और प्रतिमान के प्रतिनिष्ठाा, मूल और संस्थाओं को उत्पन्न करती है। आदर्श अनुपालन का प्रकार्य, पार्सन कहते हैं, न्यासीय व्यवस्था के लक्ष्य नाम देते हैं।

जो न्यास की प्रकृति को शामिल किए रहती है या न्यासित समाहित किए रहती है। यह व्यवस्था नैतिक मूल्य, विश्वास ओर अभिव्यक्ति संकेतों को उत्पन्न करती है और उसे वैधता प्रदान करती है।

व्यवस्था को प्रत्येक उप-व्यवस्था को व्यवस्था मानक विश्लेषक के लिए लिया जा सकता है और फिर उसके अंगों को चार हिस्सों में तोड़कर जो कि क्रमशः अनुकूलन, लक्ष्य प्राप्ति, एकीकृत और अव्यक्तता का कार्य निभाता है। समाज के इस प्रकार के विशलेषण को व्यवस्थित उपागम कहते हैं।

12.6 सारांश

पार्सन्स का एजीआईएल मॉडल एक आदर्श प्रकार है सामान्य समाजों की अपेक्षा निर्देशित समाजों में उपयुक्त है यह प्रचलित रूप से महान सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है सभी एकीकृत सम्मिलित सिद्धान्त- जिसमें माना जाता है कि विस्तृत विवरण शक्ति है पार्सन्स का यह विद्यार्थी रॉबर्ट मर्टन ऐसे सिद्धातों से संदेह वादी है जिनके लिए यह अति सामान्य है ज्यादा प्रयोग होने हेतु मर्टन 1957। इसके स्थान पर वह अपनी पसंद मध्य स्तर में अभिव्यक्त करते है जो कुछ सीमित प्रश्नों में समाहित घटनाओं (जैसे- कि समूह, सामाजिक गतिशीलताा या भूमिका संघर्ष) को प्रतिपादित करता है। आंशिक रूप से, इस मध्य-स्तर योजना की वजह से, मर्टन का प्रकायवाद पार्सन्स से अलग है। उदाहरण के लिए, मर्टन किसी प्रतिकात्मक पूर्व-आवश्यकता की खोज का त्याग करते हैं जो सभी सामाजिक व्यवस्थाओं में वैद्य होगा। वे पहले के प्रकार्यवाद विचार को अस्वीकार करते हैं कि पुनरावर्ती सामाजिक घटनाएं पूरे समाज के लाभ के संदर्भ में व्यवस्थित होनी चाहिए। आलोचना के

लिए, मर्टन पूर्वी के प्रकार्यता- दिपों के तीन मान्यताओं की पहचान करते हैं जो नीचे दिए गए हैं-

1) समाज के प्रकार्यात्मक इकाई की अवधारणा। यह एक अनुमान है कि समाज में एकता है, जो पेचिदा की वजह से अलग करता है जो पूर्व में एक अशं बनाता है।

2) सार्वभौमिक प्रकार्यवाद की अवधारणा। यह एक अनुमान है कि सभी समाजों या सांस्कृतिक रूपों में ससकारात्मक प्रकार्य है। जो समाज की भलाई और उसके अनुपालन के लिए है।

3) अपरिहार्यता की अवधारणा। यह एक अनुमान है कि प्रकार्य के एक समान या सांस्कृतिक रूप से निर्वाह करता है वह समाज के जीवित रहने की अपरिहार्य पूवस्थिति है। मर्टन मानते हैं कि ये अवधारणाएं अनुभाविक रूप से प्राथमिक नहीं है उदाहरण के लिए, यह मान लेने का कोई कारण नहीं हैं कि विशिष्ट संस्थाएं एकमात्र हैं जो प्रकार्यों की पूर्ति करें। आन्दभविक शोध यह दर्शाता है कि कई स्तर हो सकते हैं किसे मर्टन प्रकार्यात्मक-विकल्प कहते हैं? वे उसी प्रकार्य को निभाने में सक्षम हो सकते हैं।

तार्किक दृष्टि से मर्टन यह प्रयास करने की कोशिश करते हैं जिसे कि वे समाजशास्त्र में प्रकार्यात्मक विश्लेषण का वर्गीकरण कहते हैं। एक प्रकार्यात्म्क रूपावली। हेतु जो कि महान सिरुद्धान्त नहीं है। के सामाजिक यथार्थ के वास्तविक दिशाओं पर विचार करता है। विचलन और अनुरूपता, उनका विवेचन ओर समझ प्रस्तुत करता है। अन्य प्रकार्यवादियों की तरह, वे समाज को, व्यवस्था का अंतरर्निछित अंग मानते हैं, जहां एक अंग का प्रकार्य दूसरे अंग पर प्रभाव चलता और वही व्यवस्था पर भी प्रभाव डालता है। अपने पूर्ववर्तियों की तरह वे एकीकृत और समय की संकल्पना में रूचि रखते हैं। और समाज के बने रहने के लिए प्रथाओं और संस्थाओं के योगदान में भी रूचि रखते हें। उनके प्रकार्य की परिभाषा पूर्व के अंश का सकारात्मक योगदान के रूप में है : प्रकार्य वे योगदान या परिभाषा है जो किसी प्रदत्त व्यवस्था के अनुकूलन या समायोजन के लिए बनते हैं।''

ऊपर अन्य प्रर्कावादियों से कुछ बिंदुओं पर सहमत होकर मर्टन दो वर्गीकरण के समूह से अलग योगदान करते हैं, जैसे कि, प्रकार्य और अप्रकार्य'' मानते हैं कि सभी योगदान आंतरिक रूप से समाज के लिए अच्छे या ''प्रकार्यत्मक'' है। एक प्रतिष्ठित। जिसे स्वीकार करने में कठिनाई महसूस करते हैं। वे मानते हैं कि ऐसे कार्य है जिनमें कि परिणाम है व्यवस्था के अनुकुलन या समायोजन को कम करने की'। ऐसे कार्य नुकसान पहुंचाने वाले कारक बन जाते हैं, जिसके लिए परिभाशिक शब्द 'अप्रकार्य' है। इसलिए यह अपेक्षा की जाती है कि समाजशास्त्री हमेशा निम्न प्रश्नों को पूछेंगे।- ''किस लिए परिभाषा प्रकार्यत्य या अप्रकार्यात्मक है वहीं संस्था एक संदर्भ में प्रकार्यात्मक और दूसरे संदर्भ में अप्रकार्यात्मक हो सकती है। सभी सामाजिक संस्थाएं कुछ प्रकार्या और अप्रकार्य की अपेक्षा रखती है। बहरहाल संस्था एक सापत्य में परिणामों के बीच पूर्व संतुलन पर निर्भर करता है।

मर्टन दो द्विभाजन (प्रकार्य और अप्रकार्य, व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य के रूप में चार प्रकार के विवरण को आगे बढ़ाते हैं। पूर्व के प्रकार्यवादी सिर्फ एक विवरए को आगे रखते हैं ओर वह भी अव्यक्त प्रकार्य के संदर्भ में। मर्टन की संकल्पित योजना अनुभाविक शोध की ओर निर्देश करती है, अपेक्षाकृत उस सिद्धान्त के साथ रहना जिसके कि कई कथित दावे हों, जैसे कि पार्सन्स का महान सिद्धान्त'।

बॉक्स 2 : व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य

व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य के बीच अंतर का मूल समाज शासक के संस्थापक के लेखन में भी है। धर्म को अपने अध्ययन में, उदाहरण के तौर पर, दुखिया (1915) अंतर करते हैं ' लोग वह कार्य करते है जिससे वे जागरूक रहते हैं' और जो उनके सामूहिक कार्य से उभरता है जो वे नहीं करना चाहते थे या जिसका अनुमान नहीं था।' जब लोग सामूहिक टोटलवादी प्रथा के लिए एकजुट होते हैं, उनका विशिष्ट लक्ष्य उनके टोटल का सम्मान होता है, किंतु जो ये टोटल उत्पन्न करते हैं वह है हमराजन की शक्ति जो कि गैर-इरादतन बिना पहचाने ओर अनुमानिक परिव्यय होता है। इसको मानकर, कोई भी कह सकता है कि व्यक्ति प्रकार्य वे प्र्याप्त है जो न तो पहचाने जा सकते हैं न ही उसका विचार करते हैं।

बोध प्रश्न

1) रेडक्लिफ ब्राउन के संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम, वर्ण संकल्पना क्या है?

2) रेडक्लिफ ब्राउन और (मैलिनॉस्की के सैधांतिक उपागमों के मध्य प्रमुख अंतर क्या है?

3) पार्सन्स के एजीआईएल मॉडल का परीक्षण करें।

12.7 संदर्भ

बर्नार्ड, एलन (200) हिस्टरी एंड थ्योरी इन सेंथ्रोलॉजी कैम्ब्रिज यूनिवसिटी प्रैस।

डेविस, किंग्स्ले (1959), द मिथ ऑफ फंक्शनल एनॉलिसिस ऐसए स्पेशल मैथड इन सोशियोजॉजी एंड ऐंथ्रोलॉजी अमेरिकन सोशियोलॉजीकल रिव्यू, 24:757-72.

दुर्खाइम, एमिल (1893) द डिविजन ऑफ लेबर इन सोसायटी ग्लेकाः द

दुर्खाइम, एमिल (1895) द रूल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मेथ्ड, न्यूयॉर्क

दुर्खाइम, एमिल (1915) द एलिमेंटरी फार्म्स ऑफ रिलीजियस लाईफ, लंदन, एलन ए.ड अनवीन,

गिडेन्स, एंथोनी (1973) डक्लास स्ट्रक्चर्स ऑफ द एडवांस्ड सोसाइटीक, लंदन हंचिंसन

गाउल्डनर, एर्लवन डत्ल्यू (1973) फॉर सोशियोलॉजी लंदनः एलनलेन

गाउल्डनर, एर्लवन डब्ल्यू (1973) ऐंथ्रोपोलॉजिस्ट्स एंड ऐथ्रोपोलॉजीः द यॉडर्न ब्रिटिश स्कूल, लंदनः रूतलेज

लेवी, जू. मार्मयन जे. (1968) फेक्षनल एनॉलिसिस : स्ट्रक्चरल फंक्शनल एनॉलिसिस. इंटरनेशनल एनसाईकलोपीडिया ऑफ सोशलसाइंसेसः मैकमिलन कम्पनी एंड फ्री प्रैस।

मैलिनॉस्की, ब्रोनिस्लेव (1922) अर्गोनिट्स ऑफ दी वेस्टर्न पेसिफिक, लंदन : जॉर्ज रूतलेज संस.

मैलिनॉस्की, ब्रोनिस्लेव (1926) ऐथ्रोपोलॉजी. इनसाइक्लो बिटेनिकल : फर्स्ट सटली मेंटरी वोल्यूम.

मैलिनॉस्की, ब्रोनिस्लेव (1949) ए सांइटिफिक थ्योरी ऑफ कल्चर एंड अदर एसेज. चैपलोहिल : यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ -कैरोलिना प्रैस।

मर्टन, रॉबर्ट. के (1957) सोशल थ्योरी एंड सोशल स्ट्रक्चर, (रिवाइज्ड एनलार्ज्ड एडिशन). न्यू यॉर्क : द फ्री प्रैस।

पार्सन्स, टेलकॉट (1951) द सोशल सिस्टम. न्यू यॉर्क : द फ्री प्रैस।

पार्सन्स, टेलकॉट (1975) द प्रजेंट स्टेटस ऑफ स्ट्रक्चरल फंक्शनल थीयरी इन सोशियोलॉजी. इन लेविस ए. कैंसर (सं.), द आइडिया ऑफ सोशलट्रचर : पेपर्स इन ऑनर ऑफ रॉवर्ट के मर्टन. , न्यू यॉर्क : हरकोर्ट ब्रास जोवानोविच।

पार्सन्स, टैलकाट एंड जेरॉहड एम. प्लॉट. (1973), द अमेरिकन यूनिवर्सिटी, कैम्ब्रिज : हावर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस।

रेडक्लिफ ब्राडन, ए.आर. (1922) दी अंडमान आईलैंडस. कैम्ब्रिज : यूनिवर्सिटी-प्रैस।

रेडक्लिफ ब्राडन, ए.आर. (1952) स्ट्रचर ए.ड फंक्शन इन प्रीमिटिव सोसायटीः एंथेस एंड एडेसेज, लंदन : कोहेन वेस्ट।

रोचर, गे (1974) टैलकॉट पार्सन्स एंड अमेरिकन सोशियोलॉजी, लंदन नेलसन

टर्नर जोनॉथन एच़ (1987) द स्ट्रक्चर ऑफ सोशियोलॉजिकल क्यिरी, जयपुर : रावत पब्लिकेशन।

बैलेस, रूथ ए. एंड एलिसन वॉल्फ (1980) कंटेम्पोरेरी सोशियोलोजिकल थीयरी। एंगलवुड क्लिपन्स, एन.ज. : प्रोंसि. हाल.

इकाई 13 सामाजिक नियंत्रण और परिवर्तन*

संरचना

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 सामाजिक नियंत्रण का अर्थ और परिभाषा

13.3 सामाजिक नियंत्रण के प्रकार

13.4 सामाजिक नियंत्रण के माध्यम

13.5 सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा और अर्थ

13.6 सामाजिक परिवर्तन को समझने के दृष्टिकोण

- 14.6.1 परिवर्तन के उद्गविकासवादी सिद्धांत
- 13.6.2 चक्रीय सिद्धांत
- 13.6.3 संरचनात्मक-कार्यात्मक और संघर्ष सिद्धांत

13.7 सामाजिक परिवर्तन सिद्धांतों का संश्लेषण

13.8 सामाजिक परिवर्तन के कारक

- 13.8.1 जैविक कारक
- 13.8.2 भौगोलिक कारक
- 13.8.3 तकनीकी कारक
- 14.8.4 सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

13.9 सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव

13.10 सारांश

13.11 संदर्भ

13.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप समझ पाएंगे:

- एक अवधारणा के रूप में सामाजिक नियंत्रण;
- सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक व्यवस्था के बीच संबंध एजेंसियां जो सामाजिक नियंत्रण के रूप में कार्य करती हैं;
- सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा;
- सामाजिक परिवर्तन की समझ के लिए विभिन्न दृष्टिकोण;
- सामाजिक परिवर्तन के कारण कारक;
- सामाजिक परिवर्तन की गति।

13.1 प्रस्तावना

सामाजिक नियंत्रण समाजशास्त्र में एक केंद्रीय अवधारणा है। हम सभी को एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने की उम्मीद होती है। यह सड़क के बाईं ओर गाड़ी चलाने, राष्ट्र

*डॉ. आर वाशुम, इग्नू और शुस्वी के, परामर्शदाता, न्यूपा

के नियमों का पालन करने और हमारे बुजुर्गों का सम्मान करने के लिए कैसे सिखाया जाता है। कुछ वांछित नियमों का पालन करने के पीछे बहुत ही बुनियादी विचार सामूहिक सामाजिक जीवन को संभव बनाना है। सामुदायिक जीवन केवल सामाजिक बाधाओं के संदर्भ में संभव है क्योंकि सामाजिक हित व्यक्तिगत हितों के बलिदान की मांग करते हैं। उदाहरण के लिए एक हमेशा ट्रैफिक सिग्नल कूदने का लुत्फ उठाता है लेकिन जुर्माना के डर के लिए ऐसा नहीं करता है। इस प्रकार, सुचारु रूप से और कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए समाज कुछ नियम और विनियम बनाता है और उम्मीद करता है कि उसके सदस्य उनका अनुसरण करेंगे। परिवार, स्कूल, धार्मिक संस्थानों और मीडिया जैसे सामाजिक संस्थान कुछ ऐसे अभिकर्ता हैं जो इन नियमों को सुदृढ़ और बनाए रखते हैं। कई प्रतिबंध सीधे लागू नहीं होते हैं बल्कि केवल समाजीकृत व्यक्ति में कुछ मूल्यों को आत्मसात कराके ही लागू होते हैं। इस प्रकार अधिकांश लोग डर के कारण नहीं मानते हैं, बल्कि इसलिए मानते हैं कि वे आंतरिक रूप से ऐसा करने के लिए अनुकूलित हैं। सबसे मौलिक अर्थ 'सामाजिक नियंत्रण' में किसी समाज के वांछित सिद्धांतों और मूल्यों के अनुसार स्वयं को नियंत्रित करने की क्षमता को संदर्भित किया जाता है।

13.2 सामाजिक नियंत्रण का अर्थ और परिभाषा

सामाजिक नियंत्रण का उद्देश्य यह है कि शब्द इंगित करता है कि लोगों पर प्रभावी तरीके से नियंत्रण करना है। समाज के मानदंडों के अनुसार पुष्टि या व्यवहार को अनुरूपता के रूप में जाना जाता है। वास्तव में एक आधुनिक जटिल समाज में लोगों को स्वीकार करने और कुछ निर्दिष्ट समूह मानदंडों का पालन करके सामाजिक आदेश प्राप्त किया जा सकता है। अपने सदस्यों के बीच एकजुटता और स्थिरता बनाए रखने से समाज इसकी निरंतरता सुनिश्चित करता है। नतीजतन, सामाजिक नियंत्रण का साधन व्यक्ति के लिए बाहरी नहीं रहता है लेकिन अनजाने में भी इसका पालन किया जाता है और संस्कृति का बड़ा हिस्सा बन जाता है और एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक फैल जाता है। और इस तरह एक सामाजिक आदेश बनाए रखा जाता है। यह समाज के कामकाज में अराजकता और भ्रम की संभावना को सीमित करता है। इसलिए, सामाजिक नियंत्रण सामाजिक आदेश का एक आवश्यक घटक है।

रॉस, एक अमेरिकी समाजशास्त्री जिन्होंने 1901 में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "सोशल कंट्रोल" में सोशल कंट्रोल की अवधारणा पेश की। उन्होंने सामाजिक नियंत्रण को "उपकरणों की प्रणाली" के रूप में परिभाषित किया है जिससे समाज अपने सदस्यों को व्यवहार के स्वीकार्य मानकों के अनुरूप लाता है। ओगबर्न और निमकोफ जैसे अन्य लोगों ने कहा है कि सामाजिक नियंत्रण "दबाव के पैटर्न को दर्शाता है जो समाज आदेश बनाए रखने और नियमों को स्थापित करने के लिए प्रयुक्त होता है"।

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि समाज व्यक्ति के व्यवहार पर किसी प्रकार का प्रभाव डालता है। प्रभाव जनता की राय, धर्म, नैतिकता, विचारधारा या जबरदस्ती के माध्यम से किया जा सकता है। इस तरह के प्रभाव विभिन्न स्तरों पर लगाया जाता है। यह समाज के सभी सदस्यों या छोटे समूहों या व्यक्तियों पर एक प्रमुख समूह के प्रभाव पर प्रभाव हो सकता है। कुछ सदस्य उन पर नैतिक अधिकार रखते हुए दूसरों के व्यवहार का अभ्यास और प्रभाव डालते हैं। व्यक्तिगत या समूह पर समाज के प्रभाव के परिणामस्वरूप उदारता और देखभाल देने का दृष्टिकोण भी हो सकता है। इस प्रकार समाज के नैतिक संहिता में सामाजीकरण के परिणामस्वरूप कुछ सदस्य दूसरों की देखभाल करते हैं। इस प्रकार सामाजिक नियंत्रण सामाजिक व्यवहार के सभी रूपों का पालन करता है और प्राचीन से हाल के दिनों में सभी समाजों का एक आवश्यक पहलू रहा है।

13.3 सामाजिक नियंत्रण के प्रकार

समाज कई तरीकों से व्यक्ति या समूह के व्यवहार पर अपना नियंत्रण करता है। सामाजिक नियंत्रण की प्रकृति सामाजिक स्थिति और सामाजिक लक्ष्यों की प्रकृति पर भी निर्भर है। कुछ सरल समाजों में कुछ प्रकार के विश्वास और रीति-रिवाजों में व्यक्तियों या समूहों पर सामाजिक दबाव के रूप में कार्य करने के लिए पर्याप्त नियंत्रण होता है। ग्रामीण समाज में लंबे समय से स्थापित परंपराओं और मान्यताओं का व्यक्ति या समूह के व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। हालांकि, यह आधुनिक औद्योगिक शहरी समाज में भिन्न है। यहां, रेडियो, टेलीविजन, स्कूल और कानून इत्यादि जैसे आधुनिक साधन समाज के सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करने के उद्देश्य से अधिक प्रभावी ढंग से काम करते हैं। एक तरह से, औपचारिक और अनौपचारिक समाज के सदस्यों पर प्रभाव डालने के दो प्रकार के साधनों का प्रतिनिधित्व करता है।

इस प्रकार, सामाजिक नियंत्रण का उपयोग किए जाने वाले सामाजिक नियंत्रण के साधनों के आधार पर दो प्रमुख प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

वे हैं: औपचारिक नियंत्रण और अनौपचारिक नियंत्रण।

औपचारिक नियंत्रण: कुछ संस्थागत संगठनों या औपचारिक प्राधिकरण द्वारा विशेषता संगठनों द्वारा औपचारिक नियंत्रण का उपयोग किया जाता है, जो कानून और कानून को नियंत्रित करने के लिए बनाता है। औपचारिक नियंत्रण आधुनिक शहरी जटिल समाज की एक विशेषता है जिसमें बातचीत ज्यादातर अवैयक्तिक स्वरूप में है और सामाजिक जीवन अज्ञात है। एक जटिल समाज को अपने सदस्यों को अनुरूप बनाने के लिए औपचारिक नियंत्रण या नियमों और विनियमन की आवश्यकता होती है। कानूनी संस्था और न्यायपालिका सामाजिक नियंत्रण के एक अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त और अच्छी तरह से स्वीकार्य साधन हैं। विभिन्न कानूनों का प्रयोग विशिष्ट निकाय द्वारा किया जाता है जिसमें अधिकारियों को नियंत्रण लागू करने के लिए शक्ति के साथ निहित किया जाता है। राज्य अक्सर सामाजिक नियंत्रण का उच्चतम माध्यम होता है और नियंत्रण के प्रवर्तन के लिए पुलिस और सेना जैसे सहायक संस्थाओं के भीतर उप-समूह होता है।

अनौपचारिक नियंत्रण: अनौपचारिक नियंत्रण मुख्य रूप से लोक कथाओं, पारंपरिक मान्यताओं और रीति-रिवाजों, अनुष्ठानों, गपशप, जनमत आदि जैसे अनौपचारिक माध्यमों द्वारा विशेष रूप से अनचाहे नियमों और विनियमों द्वारा किया जाता है। सामाजिक नियंत्रण का अनौपचारिक साधन स्वयं पर विकसित होता है और यह एक अभिन्न और स्वीकार्य हिस्सा होता है किसी कालावधि में जीवन के लिए । वे अभ्यास के साथ और अधिक स्थापित हो जाते हैं। हालांकि उल्लंघन के मामले में व्यक्तियों को कोई विशिष्ट दंड नहीं दिया गया है, फिर भी औपचारिक नियंत्रण औपचारिक नियंत्रण से उनके प्रभाव में अधिक प्रभावी होते हैं। वे सरल या ग्रामीण समाज में अधिक प्रभावी हैं जहां समाज के सदस्य अधिक परंपरा उन्मुख हैं और समुदाय अधिक कसकर बुना हुआ है। वे परिवार जैसे प्राथमिक समूहों में भी अधिक प्रभावी होते हैं जहां व्यक्तिगत जमीन पर बातचीत होती है। अनौपचारिक नियंत्रण में, नियंत्रण या तो आंतरिक मूल्यों के माध्यम से या तिरस्कार, सम्मान और उपहास की भावनाओं के माध्यम से होता है।

जटिल समाजों और शहरी शहर के जीवन में, सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए औपचारिक और साथ ही नियंत्रण के अनौपचारिक तंत्र दोनों काम करते हैं।

13.4 सामाजिक नियंत्रण के माध्यम

एक समाज उन माध्यमों से सामाजिक नियंत्रण बनाए रखता है जो समय के साथ प्रभावी होने के लिए विकसित हुए हैं। समाज के सदस्यों पर नियंत्रण करने के लिए लोकमार्ग , धर्म, पारंपरिक रीति-रिवाजों, लोकाचार इत्यादि के अलावा कानून, शिक्षा, शारीरिक दबाव और नियमों का उपयोग करती है। समाज द्वारा उपयोग की जाने वाली सामाजिक नियंत्रण तंत्र के प्रकार इसकी संगठनात्मक जटिलता के संदर्भ में समाज की प्रकृति पर निर्भर करते हैं।

कानून द्वारा नियंत्रणः आधुनिक शहरी औद्योगिक समाज में कानून सामाजिक नियंत्रण का सबसे शक्तिशाली साधन है। राज्य के राजनीतिक संगठन के साथ समाज में कानून प्रकट होता है। 'कानून' शब्द को विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है। जे एस रोऊक कहते हैं कि "कानून राजनीतिक माध्यमों से उत्पन्न सामाजिक कानून का एक रूप है"। कानून के स्रोत कई हैं। कानून बनाए जाते हैं और सामाजिक सिद्धांतों, आदर्शों और लोकाचार के आधार पर कानून लागू किए जाते हैं। कानून औपचारिक तभी बनते हैं जब वे एक उचित कानून बनाने के प्राधिकरण द्वारा अधिनियमित होते हैं। औपचारिक कानून जानबूझकर उचित योजना के साथ किए जाते हैं। पश्चिमी प्रणाली कानूनों में निश्चित, स्पष्ट और सटीक माना जाता है और समान परिस्थितियों में कानून के समक्ष सभी को समान रूप से माना जाता है। हालांकि यूरोपीय संघ के अलावा संस्कृतियों से निकलने वाले गैर-पश्चिमी कानूनों के लिए यह सच नहीं हो सकता है। कानून एजेंसियों द्वारा लागू किया जाता है; इसलिए, औपचारिक निकाय बनाए जाते हैं। उपनिवेशीकरण और पश्चिमी सभ्यता के प्रसार के साथ, औपचारिक कानून की प्रकृति ज्यादातर समाजों में समान हो गई है।

शिक्षा द्वारा नियंत्रणः शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण उपकरण है और समाज के सभी रूपों में सामाजिक नियंत्रण का एक तंत्र है। शिक्षा को केवल युवा पीढ़ियों द्वारा सामाजिक मूल्यों और मानदंडों के प्रतिबिंब के रूप में देखा जा सकता है। अनौपचारिक शिक्षा सभी सामाजीकरण माध्यमों, विशेष रूप से परिवार द्वारा प्रदान की जाती है। ऐमाइल दुर्खिम द्वारा शिक्षा को युवा पीढ़ी के सामाजीकरण के रूप में देखा गया है क्योंकि यह शिक्षा के माध्यम से है जिसके द्वारा समाज अपनी विरासत को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक ले जाता है। औपचारिक शिक्षा, वह शिक्षा है जो एक संस्था द्वारा प्रदान की जाती है जो मुख्य रूप से समर्पित है और जिसके पास अपने उपकरण और तकनीक, किताबें और शिक्षक हैं, समाज के सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करने में केंद्रीय भूमिका निभा रहे हैं। औपचारिक शिक्षा समाज के युवा सदस्यों को सही तरह की विचारधारा प्रदान करने के लिए तैयार की गई है ताकि वे इसके प्रजनन में योगदान दे सकें। औपचारिक शिक्षा में अक्सर धार्मिक और देशभक्ति मूल्य शामिल होते हैं जिन्हें जिम्मेदार नागरिक के गठन के लिए आवश्यक समझा जाता है।

सार्वजनिक राय द्वारा नियंत्रितः सार्वजनिक राय सामाजिक नियंत्रण की एक महत्वपूर्ण एजेंसी है। सार्वजनिक राय केवल उन विचारों के द्रव्यमान को संदर्भित करती है जो लोग किसी दिए गए मुद्दे पर व्यक्त करते हैं। वास्तव में यह समाज के अधिकांश सदस्यों की सामूहिक राय के रूप में काम करता है। इसके अलावा यह लोकतांत्रिक समाजों में अधिक मूल्यवान है। प्रेस, रेडियो और टेलीविज़न इत्यादि जैसे विभिन्न आधुनिक माध्यमों के माध्यम से जनमत इकट्ठा की जाती है।

प्रचार द्वारा नियंत्रितः प्रचार लोगों के दृष्टिकोण, व्यवहार, विश्वास और विचारधारा को प्रभावित करता है। कभी-कभी इसे पुराने विश्वास प्रणाली को नए के साथ बदलने के लिए

भी उपयोग किया जाता है। हालांकि, यह सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव हो सकता है। ज्यादातर सरकारें और शासन व्यवस्था लोगों के व्यवहार में बदलाव लाने के लिए प्रचार का उपयोग करती हैं। इस प्रकार लोगों से राज्य के लक्ष्यों को स्वेच्छा से प्रचार के अनुरूप करने का आग्रह किया जाता है जो उन्हें विश्वास दिलाता है कि समाज जो चाहता है वह वास्तव में उनके लिए भी अच्छा है।

बलप्रयोग द्वारा नियंत्रितः जबरन व्यक्ति किसी व्यक्ति या समूह के व्यवहार को रोकने या नियंत्रित करने के लिए भौतिक बल को संदर्भित करता है। जब लोगों को खतरे के तहत या कुछ लगाए गए नियंत्रणों के तहत कुछ नियमों का पालन करने के लिए मजबूर किया जाता है, तो ऐसा कहा जाता है कि किसी व्यक्ति या समाज के सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए मजबूर का उपयोग किया जाता है। राज्य एकमात्र एजेंसी है जो इसे वैध रूप से उपयोग करती है हालांकि हर कोई बल के उपयोग की हर स्थिति से सहमत नहीं हो सकता है, जैसे कि पुलिस शांतिपूर्वक लोगों का प्रदर्शन करने पर बल का उपयोग करती है या जब राज्य किसी भी विरोध को दबाने के लिए दमनकारी उपायों का उपयोग करता है।

सीमा शुल्क द्वारा नियंत्रितः कस्टम मूल रूप से सामाजिक नियंत्रण का एक अनौपचारिक माध्यम है। यह ज्यादातर अनिश्चित रूप से प्रयोग किया जाता है। हम उन्हें अपने परिवारों में बचपन से सीखते हैं या जो हम प्राथमिक समूहों में बहुत अनौपचारिक तरीके से कहते हैं। यह सामूहिक जीवन सुनिश्चित करता है। वे पारंपरिक या ग्रामीण समाज में अधिक प्रभावशाली हैं।

धर्म द्वारा नियंत्रितः धर्म कुछ अलौकिक शक्तियों में विश्वास को संदर्भित करता है। मैकइवर और पेज ने धर्म को धर्म के रूप में परिभाषित किया है "न केवल मनुष्यों और मनुष्यों के बीच बल्कि मनुष्यों और कुछ उच्च शक्तियों के बीच संबंधों का तात्पर्य है।" यह सामाजिक नियंत्रण का एक मजबूत साधन है। इसलिए, यह इस विश्वास पर आधारित है कि यह भगवान के साथ मनुष्यों के रिश्ते की पुष्टि करता है और इसलिए, एक धार्मिक कोड बनाता है। और यह धार्मिक कोड है जो मानव व्यवहार के आचरण को नियंत्रित करने के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। धर्म की शक्ति बहुत गहरी जड़ है क्योंकि यह उच्च शक्ति की इच्छाओं के साथ सामाजिक आवश्यकताओं को स्वीकार करती है। उदाहरण के लिए कई धर्मों में महिलाओं को विश्वास है कि पुरुषों की सेवा करना उनका धार्मिक कर्तव्य है और यह बनाए रखने और जारी रखने में पितृसत्तात्मक समाज में बहुत प्रभावी है।उसी तरह राजा के शासन को कई धर्मों ने समर्थन दिया है यह कहकर कि राजा एक दैवीय शक्ति है।

नैतिकता द्वारा नियंत्रितः नैतिकता और धर्म के बीच घनिष्ठ संबंध है। नैतिकता "विवेक द्वारा हमारे लिए प्रकट होने वाले अच्छे और बुरे से संबंधित नियमों और सिद्धांतों का मुख्य भाग है"। नैतिकता वह है जो व्यक्ति को सही आचरण को गलत से अलग करता है। लेकिन नैतिक आदेश सार्वभौमिक नहीं है और एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न होता है, और प्रत्येक समाज अपने बच्चों में अपने मानदंडों और मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। पश्चिमी समाज के संदर्भ में कोई नैतिक अवधारणाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए ईमानदारी, विश्वास, निष्पक्षता, ईमानदारी, दया और बलिदान की पहचान कर सकता है। भारतीय समाज का नैतिक आदेश परिवारों और बुजुर्गों और निम्नलिखित नियमों के प्रति सम्मान के प्रति अधिक है। नैतिक आदेश लोगों द्वारा आंतरिक रूप से किया जाता है और इसलिए, लोगों के व्यवहार को प्रभावित करने या समाज के सदस्यों पर नियंत्रण बनाए रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सामाजिक नियंत्रण के औपचारिक और अनौपचारिक साधनों के उपर्युक्त तंत्र के अलावा अनुष्ठानों के संदर्भ में विभिन्न सामाजिक समारोहों, फैशन का उपयोग किसी व्यक्ति या समाज के सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए भी किया जाता है।

इस प्रकार, समाज सुचारू रूप से और प्रभावशाली ढंग से काम करने के क्रम में अंतर्निहित तंत्र के कुछ रूपों का उपयोग करता है। व्यक्तियों के पास वांछित व्यवहार से विचलन करने की प्रवृत्ति होती है क्योंकि उनकी इच्छाओं की इच्छा होती है, जैसे खुशी और व्यक्तिगत लक्ष्य पूर्ति। उदाहरण के लिए लोग जीवन की अच्छी चीजों की इच्छा रखते हैं कि वे निष्पक्ष साधनों से प्राप्त नहीं कर पाएंगे, लेकिन सामाजिक-विरोधी साधनों जैसे कि चोरी या नियमों को तोड़ना। सामाजिक नियंत्रण उन सभी तंत्रों को संदर्भित करता है जिनका प्रयोग व्यक्तियों के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है और उन्हें अपने मानदंडों और मूल्यों के अनुरूप बनाता है। यह वह तरीका है जिसके माध्यम से समाज अपने सामूहिक जीवन को सुनिश्चित करता है और मानक सामाजिक आदेश बनाए रखता है। तंत्र की प्रभावशीलता सरल से जटिल समाज में भिन्न होती है। ग्रामीण परंपरागत सरल समाज में रीति-रिवाज, लोकमार्ग और लोकाचार जैसे साधन अधिक प्रभावी होते हैं। लेकिन कानून, शिक्षा, सार्वजनिक राय शहरी जटिल समाज में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बोध प्रश्न

1) सामाजिक नियंत्रण के अर्थ और परिभाषा की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) विभिन्न प्रकार के सामाजिक नियंत्रण पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सामाजिक नियंत्रण की एजेंसियों पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

13.5 सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा और अर्थ

सामाजिक परिवर्तन को विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है। विद्वानों और लेखकों ने उन्हें कई अलग-अलग तरीकों से परिभाषित किया है ताकि सामाजिक परिवर्तन की कोई भी सहमत परिभाषा न हो। फिर भी, हमारे उद्देश्य के लिए हम सामाजिक परिवर्तन की प्रचलित परिभाषा देने का प्रयास करेंगे। सामाजिक परिवर्तन को व्यापक रूप से किसी भी सामाजिक संगठन और/या सामाजिक संरचना और समाज के कार्यों और इसके विभिन्न अभिव्यक्तियों के महत्वपूर्ण परिवर्तन या संशोधन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। परिभाषा सामाजिक संबंधों के विभिन्न पैटर्न - सामाजिक प्रक्रियाओं, सामाजिक पैटर्न, कार्रवाई और बातचीत-संबंधों और आचरण (मानदंड), मूल्यों, प्रतीकों और सांस्कृतिक उत्पादों के नियमों में महत्वपूर्ण परिवर्तनों के पहलुओं को शामिल करती है। सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा संस्कृति के भौतिक और गैर भौतिक पहलुओं दोनों के साथ समय के साथ विविधता को संदर्भित करती है। ये परिवर्तन दोनों समाजों (अंतर्जात बलों) और बिना बाहरी (बाहरी शक्तियों) से बाहरी ताकतों द्वारा लाए जाते हैं।

13.6 सामाजिक परिवर्तन को समझने के दृष्टिकोण

सामाजिक परिवर्तन और/या सामाजिक परिवर्तन की समझ के लिए कुछ मुख्य दृष्टिकोण हैं। वो हैं:

1) उद्धविकासवादी सिद्धांत;

2) चक्रीय सिद्धांत; तथा

3) संरचनात्मक-कार्यात्मक और संघर्ष सिद्धांत।

13.6.1 परिवर्तन के उद्धविकासवादी सिद्धांत

सामाजिक परिवर्तन के विकासवादी सिद्धांत परिवर्तन के कई लेकिन संबंधित सिद्धांतों के समूह हैं। परिवर्तन के विकासवादी सिद्धांत की मुख्य धारणा यह है कि मूल से अंतिम चरण तक विकास के चरणों के समान अनुक्रम में, या एक सरल और 'आदिम' से अधिक जटिल में सभी समाजों के सामाजिक परिवर्तन की एक सतत दिशा है और उन्नत राज्य। विकासवादी सिद्धांत का भी अर्थ है कि विकासवादी परिवर्तन विकास के अंतिम चरण तक पहुंचने के लिए खत्म हो जाएगा। विकासवादी सिद्धांतवादी प्रगति और विकास के रूप में परिवर्तन पर विचार करते हैं। सिद्धांत को दो मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है- प्राचीनकाल संबंधों विकासवादी सिद्धांत और नव-विकासवादी सिद्धांत।

19वीं शताब्दी के मानवविज्ञानी और समाजशास्त्रियों द्वारा शास्त्रीय विकासवादी सिद्धांत विकसित किए गए हैं। हालांकि, उनके बीच दृष्टिकोण अलग-अलग हैं, विचारों के अभिसरण का एक अंतर्निहित सिद्धांत है कि एक अनौपचारिक और समान दिशा में विकासवादी परिवर्तन होता है। वे बड़े पैमाने पर सरल अनियंत्रित जीवों से सबसे जटिल पशु-मानव के लिए पशु जीवन की प्रगति की एक समानता बनाते हैं। उनका मानना है कि जैसे-जैसे समाज विकसित होते हैं और बढ़ते हैं, उनके सदस्यों के कार्य भी अधिक विशिष्ट होते जाते हैं जैसे कि लाखों शरीर कोशिकाओं के विकास एक अंतरबंधित प्रणाली के भीतर विशिष्ट कार्यों को करने के लिए होते हैं। विकासवादी परिवर्तन के शास्त्रीय सिद्धांतों के मुख्य समर्थक अगस्त कॉम्ट (फ्रांसीसी इवोल्यूशनरी और पॉजिटिविस्ट स्कूल से), हर्बर्ट स्पेंसर, ई.बी. टेलर, एच जे एसमेन, जे एफ मैकलेनन और एस जे जी फ्रैज़र (ब्रिटिश

इवोल्यूशनरी स्कूल से) थे; लुईस हेनरी मॉर्गन (अमेरिकी विकासवादी स्कूल से); और जे जे बाचोफेन, एडॉल्फ बस्टियन और फर्डिनेंड टोनीज़ (फर्डिनेंड टोनीज़) (जर्मन इवोल्यूशनरी स्कूल से)। हम इन प्राचीन काल संबंधी विकासवादियों द्वारा विकसित मानव विकास के वर्गीकरण के कुछ ढांचे पर विचार करेंगे।

नव-विकासवादी सिद्धांतों को 20वीं शताब्दी में वी .गॉर्डन चाइल्ड, जूलियन स्टीवर्ड और लेस्ली व्हाइट द्वारा पेश किया गया था। विकासवादी सिद्धांतों के उनके सूत्रों को साक्ष्य, व्यवस्थित विश्लेषण और कठोर तर्क की सावधानीपूर्वक जांच करने की विशेषता है। उन्हें शास्त्रीय विकासवादी सिद्धांतकारों से अलग करने के लिए, उन्हें नव-विकासवादी के रूप में भी लेबल किया गया है। बाद में, मार्शल डी. सहलिन्स और एल्मन सेवा ने 'विशिष्ट' और 'सामान्य' विकास की अवधारणा को विकसित करके विकास के सिद्धांतों (विशेष रूप से जूलियन स्टीवर्ड और लेस्ली व्हाइट के सिद्धांतों) के संश्लेषण का प्रयास किया। इन सिद्धांतों का मुख्य दावा यह था कि विकास जैविक और सांस्कृतिक पहलुओं दोनों में दो दिशाओं में एक साथ स्थानांतरित हो गया। इस विकासवादी प्रक्रिया के बाद प्रगति हुई और नए लोगों ने पुराने लोगों से नया सिद्धांत उभारा। उन्होंने इन दो प्रक्रियाओं को अपनी सम्पूर्णता में एक दूसरे के सम्बन्ध के रूप में माना।

13.6.2 चक्रीय सिद्धांत

चक्रीय सिद्धांतों को लंबे समय तक स्थितियों, घटनाओं, रूपों और/या आचरण के दोहराव में परिवर्तन के साथ चित्रित किया गया है, हालांकि परिवर्तन के पुनरावर्ती चरणों (चक्र) की अवधि अलग-अलग होगी। चक्रीय सिद्धांतकारों का मानना है कि समाज चरणों की एक श्रृंखला से गुज़रते हैं। हालांकि, वे पूर्णता के चरण में समाप्त होने की धारणा पर विचार नहीं करते हैं, लेकिन उन्हें एक स्तर पर लौटने के रूप में देखते हैं जहां यह चक्रीय तरीके से आगे के लिए शुरू होता है। कुछ प्रमुख योगदानकर्ताओं में ए.एल. क्रॉबर, ओस्वाल्ड स्पेंगलर, पितिरिम सोरोकिन, अर्नाल्ड टोनीबी और विल्फ्रेडो परेतो शामिल हैं।

13.6.3 रचनात्मक–कार्यात्मक और संघर्ष सिद्धांत

संरचनात्मक-कार्यात्मक और संघर्ष सिद्धांत आम तौर पर सामाजिक परिवर्तन के सूक्ष्म और मध्यम श्रेणी के सिद्धांतों से संबंधित होते हैं। संरचनात्मक-कार्यकर्ता मानते हैं कि मानव शरीर की तरह समाज, संस्थानों की एक संतुलित प्रणाली है, जिनमें से प्रत्येक समाज को बनाए रखने में एक कार्य करता है। वे स्थिरता के रूप में 'परिवर्तन' पर विचार करते हैं जिसके लिए कोई स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं होती है। वे मानते हैं कि परिवर्तन समाज के संतुलन को बाधित करते हैं, जब तक कि संस्कृति में परिवर्तन को एकीकृत नहीं किया जाता है। सोसाइटी उन परिवर्तनों को स्वीकार और अपनाने वाले हैं जो उपयोगी (कार्यात्मक) पाए जाते हैं, जबकि वे बेकार (निष्क्रिय) में परिवर्तनों को अस्वीकार करते हैं।

संघर्ष सिद्धांत परिवर्तन के संरचनात्मक-कार्यात्मक सिद्धांतों से निकटता से संबंधित हैं। उनके पास बदलाव के प्रति कोई विशिष्ट सिद्धांत नहीं है। संघर्ष सिद्धांतवादी मानते हैं कि जब समाज पीड़ित समूह अपनी जिंदगी की स्थिति में सुधार करते हैं तो समाज उच्च क्रम में प्रगति करते हैं। हालांकि वे मानते हैं कि समाज आसानी से निम्न से उच्च स्तर तक विकसित होते हैं। वे सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए संघर्ष को निरंतर और आवश्यक कारक मानते हैं। वे सामाजिक संघर्ष के परिणामस्वरूप सामाजिक परिवर्तन देखते हैं, लेकिन निरंतर नहीं। संघर्ष लगातार जारी है, इसलिए भी बदल जाता है।

13.7 सामाजिक परिवर्तन सिद्धांतों का संश्लेषण

अधिकांश सिद्धांतवादी आज सामाजिक चर्चा के विभिन्न विचारों और सिद्धांतों को एकीकृत करते हैं जिन पर चर्चा की गई है। हालांकि, एक आम सहमति है कि समाज पर सशक्त विभिन्न कारकों के कारण समाज बदलते हैं। ये कारक समाज के भीतर और बाहर और योजनाबद्ध और अनियोजित दोनों हो सकते हैं। कई सिद्धांतवादी मानते हैं कि समाजों में बदलाव जरूरी नहीं है कि वे अच्छे या बुरे हों। वे मानते हैं कि यद्यपि एक स्थिर समाज आम तौर पर अराजक और विवादित समाज से बेहतर होता है, स्थिरता कभी-कभी शोषण, उत्पीड़न और अन्याय का संकेत देती है। अन्याय और उत्पीड़न की ऐसी स्थिति में, संघर्ष होने वाला है और समाज को बदलने के लिए मजबूर होना होगा।

13.8 सामाजिक परिवर्तन के कारक

सामाजिक परिवर्तन विभिन्न कारकों से लाया जाता है। ये कारक मुख्य रूप से विभिन्न समाजों में और अलग-अलग समय में परिवर्तन की प्रकृति, गति और उसमें अंतर के लिए ज़िम्मेदार हैं। उन्हें व्यापक रूप से निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

1) जैविक कारक
2) भौगोलिक कारक
3) तकनीकी कारक
4) सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

13.8.1 जैविक कारक

जैविक कारकों को आगे दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है- गैर मानव जैविक कारक, और मानव जैविक कारक। गैर मानव जैविक कारकों में पौधे और जानवर शामिल हैं। वे विभिन्न तरीकों से लोगों के जीवन को प्रभावित करते हैं। मनुष्यों को जीवित रहने के लिए पौधों और जानवरों की आवश्यकता होती है, चाहे वह किसी संस्कृति की परिभाषा के अनुसार कई अलग-अलग तरीकों से भोजन, कपड़ा, दवा और अन्य उद्देश्यों के लिए हों। मनुष्य को कई प्रक्रियाओं के माध्यम से ऑक्सीजन और अन्य उपयोगिताओं का लाभ उठाने के लिए परोक्ष रूप से पौधों और जानवरों की भी आवश्यकता होती है। पर्यावरण के परिवर्तन आजीविका, भोजन की आदतों और संबंधित सामाजिक पहलुओं में बदलाव ला सकते हैं। मानव जैविक कारक दो मुख्य तरीकों से सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करते हैं- किसी दिए गए आबादी के आनुवांशिक चरित्र, और मात्रा, घनत्व और जनसंख्या की संरचना। आनुवांशिक कारक के विपरीत जनसंख्या परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन के सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक माना जाता है। आबादी में वृद्धि और वह भी रचना सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित कर रही है। स्थानान्तरण दो या दो से अधिक विदेशी लोगों और संस्कृतियों के संपर्क के बाद एक नई पर्यावरण व्यवस्था बनाकर परिवर्तन लाता है जिसके साथ कई नई समस्याएं आती हैं। प्रवासन संवर्धन, सांस्कृतिक प्रसार और / या सामाजिक संघर्ष की प्रक्रियाओं को भी प्रभावित कर सकता है।

13.8.2 भौगोलिक कारक

भौगोलिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन के महत्वपूर्ण कारक रहे हैं। ऐसे कई उदाहरण हैं जहां भौगोलिक कारकों से सामाजिक परिवर्तन लाए गए हैं। प्राकृतिक आपदाएं जैसे भूकंप

और बाढ़ पर्यावरण और सामाजिक दोनों परिवर्तनों का कारण बन सकती हैं। अक्सर जब इस तरह के दुर्घटनाओं में भूमि और संसाधन खो जाते हैं तो सामाजिक असमानताओं में गहराई होती है क्योंकि अधिकांश बोझ हाशिए वाले लोगों पर पड़ता है। आधुनिक समय में पारिस्थितिक परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख स्रोत भी है। मनुष्यों द्वारा कई पारिस्थितिकीय परिवर्तन प्रेरित किए गए हैं। एक क्षेत्र की आबादी से अधिक, सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष, वनों की कटाई, बड़े बांधों के निर्माण, दूसरों के बीच, एक कारण या किसी अन्य कारण के लिए क्षेत्र/सीमा क्षेत्र के अतिवृद्धि ने समकालीन दुनिया में भारी सामाजिक और पारिस्थितिकीय समस्याओं का कारण बना दिया है स्थानांतरण और आपदाओं की तुलना में सामाजिक परिवर्तन के भी बड़े कारक बनें।

13.8.3 तकनीकी कारक

प्रौद्योगिकी को सामाजिक परिवर्तन के महत्वपूर्ण कारकों में से एक माना जाता है। यह विशेष रूप से समकालीन दुनिया के संदर्भ में काफी सच है। यह इस तथ्य के लिए है कि प्रौद्योगिकी में बदलाव एक महत्वपूर्ण तरीके से सामाजिक संगठन और/या समाज की संरचना को प्रभावित करता है। मास मीडिया का उपयोग और इंटरनेट के माध्यम से सूचना के तेजी से हस्तांतरण और संचार प्रौद्योगिकी में क्रांति ने दुनिया का चेहरा बदल दिया है। हालांकि इसने अक्सर अमेरिकी संस्कृति जैसे प्रमुख संस्कृतियों को दुनिया भर में अपना प्रभाव बना दिया है। लोगों ने पश्चिमी कपड़े पहनना शुरू कर दिया है और पूरी दुनिया में लोकप्रिय जंक फूड खाया जाता है। साथ ही, प्रौद्योगिकी की उपलब्धता और उपयोग के आधार पर परिवर्तन की परिमाण और परिवर्तन एक अवधि और स्थिति से भिन्न हो सकता है। जबकि आधुनिक तकनीक मनुष्य के लिए एक महान वरदान रहा है, इसके अलावा अन्य अंधेरे पक्ष भी हैं। यह मुख्य रूप से जीवन और प्रणालियों के पुराने तरीकों, विनाशकारी अंत के लिए प्रौद्योगिकियों के डिजाइन या दुरुपयोग की जा रही प्रौद्योगिकियों की विनाशकारी प्रकृति के परिवर्तन के कारण है।

13.8.4 सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

सामाजिक परिवर्तन के सामाजिक-सांस्कृतिक कारक सबसे महत्वपूर्ण कारण रहे हैं। मानव सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण अदाकार हैं। चूंकि समाज एक मानव सृजन है, इसलिए इंसान भी मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं ताकि वे अपनी सृष्टि को बदल सकें। खोज, आविष्कार, प्रसार, सामाजिक आंदोलनों, आदि के रूप में विभिन्न मानव गतिविधियों के कारण सामाजिक परिवर्तन हुआ है। समाज में नवाचार की ओर लोगों के दृष्टिकोण और मूल्यों के कारण परिवर्तन भी होता है। कुछ लोग अधिक रूढ़िवादी और बदलने के लिए प्रतिरोधी हैं जबकि अन्य परिवर्तन के लिए अधिक खुले हैं। परिवर्तन ज्यादातर लोगों द्वारा अपरिहार्य और प्राकृतिक के रूप में देखा जाता है।

सांस्कृतिक संपर्क के क्षेत्रों में स्थित समाज हमेशा परिवर्तन के केंद्र रहे हैं और अपने आपको विश्व के चौराहे की स्थिति की तरह पाते हैं। दूसरी ओर, अलग-अलग क्षेत्र आमतौर पर स्थिरता, रूढ़िवाद, और परिवर्तन के प्रतिरोध के केंद्र होते हैं। नृजाति वर्णना साक्ष्य दर्शाते हैं कि सबसे आदिम जनजातियों को सबसे अलग समुदायों में पाया गया है। खोज और आविष्कारों ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में बहुत योगदान दिया है। आधुनिक तकनीकी ज्ञान के परिचय के बाद आधुनिक समय में यह सत्य तेजी से महसूस किया जा रहा है।

विघटन, समूह से समूह तक संस्कृति के फैलाव की प्रक्रिया को सामाजिक परिवर्तन के मुख्य कारणों में से एक माना जाता है। संपर्क के माध्यम से समाजों और समाजों के बीच अंतर होता है। यही कारण है कि अलगाव की स्थिति में प्रसार की प्रक्रिया में प्रवेश करना मुश्किल हो जाता है। जाज, जो न्यू ऑरलियन्स के काले संगीतकारों के बीच पैदा हुआ था, समाज के अन्य समूहों के लिए फैल गया, और फिर बाद में अन्य समाजों के साथ-साथ दुनिया के विभिन्न हिस्सों में फैल गया।

सामाजिक आंदोलन निश्चित रूप से सामाजिक परिवर्तन के सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। हम सामाजिक आंदोलन को दो अलग-अलग रूपों में समझ सकते हैं- एक, उन आंदोलनों का आयोजन कुछ नए सामाजिक रूपों को बनाने के लिए किया जाता है जो आम तौर पर प्रकृति में उग्र और उदार होते हैं; और दो, वे आंदोलन जो पुराने सामाजिक रूपों को बनाए रखने या पुनर्जीवित करने से संबंधित हैं जो आम तौर पर रूढ़िवादी या प्रतिक्रियात्मक होते हैं। हालांकि, इन दोनों मामलों में, सामाजिक परिवर्तन आंदोलनों की सफलता और समाज के कारण होने वाले प्रभाव पर निर्भर करेगा।

फिर, नए सामाजिक रूपों को बनाने के उद्देश्य से सामाजिक आंदोलन की सफलता की मात्रा कई अंतर-संबंधित कारकों पर निर्भर करेगी, जैसे लक्ष्य के असर और प्रासंगिकता और संबंधित लोगों को आंदोलन के उद्देश्य, नेतृत्व की गुणवत्ता प्रदान करता है , रणनीति की कला, प्रभावशाली व्यक्तियों और समाज के वर्गों को शामिल करने की क्षमता, और किस हद तक निहित हितों, काउंटर बलों और बाधाओं को सफलतापूर्वक निपटाया जाता है।

क्रांतिकारी आंदोलन को सामाजिक आंदोलन के रूप में माना जा सकता है। क्रांतिकारी आंदोलन भी सामाजिक परिवर्तन का कारण बनता है। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने फ्रेंच लोकतंत्र के उदय, आधुनिक नागरिक सेना का उदय देखा और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कई लोगों के लिए एक महान आंख खोलने वाला एक नमूना था जो मुक्ति और न्याय के लिए संघर्ष कर रहे हैं। रूसी क्रांति क्रांतिकारी परिवर्तन का एक और उदाहरण है जो रूस में राजशाही सरकार और वर्ग स्तरीकरण का अंत लाया।

13.9 सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव

मानव समाज पर सामाजिक परिवर्तन का असर सामाजिक वैज्ञानिकों, विशेष रूप से, समाजशास्त्रियों के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय रहा है। समाजशास्त्री व्यक्ति के मुकाबले समूह के प्रभाव से चिंतित हैं। सामाजिक परिवर्तन के बारे में समाजशास्त्री की राय विभिन्न विचार धारा के अनुसार अलग-अलग होती है।

ऐसे कई समाजशास्त्री हैं जो मानते हैं कि औद्योगिक समाज काम की प्रकृति के कारण व्यक्तियों को एक-दूसरे से अलग करता है। कार्ल मार्क्स विचारकों में से एक थे जो मानते थे कि कृषि से औद्योगिक समाजों के कदम से लोगों को उनके श्रम से अलग कर दिया जाएगा और इसलिए उनके असली सेवकों से अलग हो जाएगा। यह, उन्होंने महसूस किया, अपरिहार्य था क्योंकि उत्पादित माल का स्वामित्व कारखाने के मालिक के पास होगा, न कि कामगार के पास। ऐसे अन्य समाजशास्त्री भी हैं जो सोचते हैं कि औद्योगिक समाज मानव समाज को प्रभावित करेगा। फर्डिनेंड टॉनीज और मैक्स वेबर, दूसरों के बीच, उन समाजशास्त्रियों के रूप में उद्धृत किए जा सकते हैं जिन्होंने इस विचार की सदस्यता ली है कि औद्योगिक समाज मानवीय संबंधों को प्रभावित करेगा, हालांकि विभिन्न तरीकों से। जबकि पूर्व का मानना था कि औद्योगिकीकरण और शहरीकरण ने लोगों को अलग किया है और सामाजिक संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, बाद में उनका मानना था कि लोग अधिक तर्कसंगत और व्यावहारिक बन जाएंगे।

कुछ समाजशास्त्री हैं, जैसे कि एमाइल दुर्खीम, जिन्होंने महसूस किया कि जटिल औद्योगिक समाजों के पास श्रम विभाजन के आधार पर श्रम विभाजन के आधार पर मानव संबंधों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जो कि अन्य विशेषताओं के बीच विशेषज्ञता के बाद है जो समाज पर निर्भरता और एकीकरण को बढ़ावा देता है। लेकिन उन्होंने विसंगति के बारे में भी बात की और सामाजिक संबंधों को तोड़ दिया।

समाजशास्त्रियों ने आज महसूस किया कि औद्योगिक समाज ने पारंपरिक परिवार और सामुदायिक प्रणालियों को विघटित कर दिया है और टूटे हुए परिवारों और तलाक के मामलों में वृद्धि हुई है। व्यक्तित्व का उदय और अधिक उदार विचारों को भी एक उदार और मानवीय समाज में लाने के रूप में देखा गया है। समाजशास्त्रियों को यह भी पता है कि आधुनिक समाजीकरण और जीवन शैली व्यक्तियों को इस तरह से व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करती है जो औद्योगिक जीवन और विशेष व्यवसायों के अनुकूल होगी। मीडिया मध्यम वर्ग के जीवन शैली को अनुकरण और अनुकूलित करने के लिए व्यक्तियों को प्रभावित करने में अत्यधिक भूमिका निभाता है।

आधुनिक ज्ञान और प्रौद्योगिकी के परिचय ने मानव जीवन और पर्यावरण के लिए बड़ी समस्याएं और चिंता भी पैदा की हैं। ऑटोमोबाइल और ईंधन का भारी उपयोग भारी प्रदूषण और खतरनाक उत्सर्जन का कारण बनता है। यह शारीरिक वातावरण को भी प्रदूषित और नुकसान पहुंचाता है जो मनुष्य के अस्तित्व के लिए निर्भर करता है। ईंधन की मांग और मांग को पूरा करने के साधनों ने अक्सर युद्ध की सीमा तक समुदायों और राज्यों के बीच संघर्ष का कारण बना दिया है। परमाणु हथियार और सामूहिक विनाश के अन्य हथियारों के आविष्कार और उपयोग ने मानवता को बहुत चिंता का कारण बना दिया है। साथ ही मनुष्य दुनिया भर में बंधन बना रहे हैं और अब हमारे पास वैश्विक गांव की अवधारणा है। इस प्रकार परिवर्तन दोनों तरीकों से काम करता है और भविष्य हमेशा अप्रत्याशित होता है।

बोध प्रश्न

1) सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) सामाजिक परिवर्तन के कारकों की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) मानव समाज पर सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

13.10 सारांश

इस इकाई में, हमने सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक परिवर्तन के अर्थ और अवधारणा को समझाया है। हमने चर्चा की है कि सामाजिक तंत्र विभिन्न तंत्रों के माध्यम से समाज में व्यक्तियों के बीच संबंध बनाए रखने के लिए सामाजिक आदेश का एक आवश्यक घटक है। हमने विकासवादी सिद्धांतों, चक्रीय सिद्धांतों, संरचनात्मक-कार्यात्मक और संघर्ष सिद्धांतों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिए विभिन्न पहलुओं और दृष्टिकोणों को भी समझाया है। सामाजिक परिवर्तन के लिए विभिन्न कारकों और समाज और व्यक्ति पर उनके प्रभाव पर भी चर्चा की गई है।

13.11 सन्दर्भ

चिल्ड,वी गॉर्डन(1942).व्हाट हैपेंड इन हिस्टरी. मिडल्सेक्स. पैंगविन

कॉम्ट,ऑगस्त(1974). द पॉज़िटिव फिलोसोफी. न्यू यॉर्क.एएमएस प्रेस

दुर्खाइम, 1947 (1893). द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसायटी. न्यू यॉर्कः द फ्री प्रेस

क्रोबर,ए. एल (1958). स्टाइल एंड सिविलाइजेशन. न्यू यॉर्कः कोर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस

मार्क्स,कार्ल 1946 (1867). कैपिटल. सं फ़्रेडरिक एंजेल्स. लंदनः जॉर्ज एलन अंड अनवीन

मॉर्गन,लेविस हेनरी. 1963(1877). एनसिएंट सोसायटी. क्लीवलैंड एंड न्यू यॉर्कः द वर्ल्ड पब्लिशिंग कंपनी

परेटों,विल्फ़्रेदों(1935). द माइंड एंड सोसायटी. न्यू यॉर्कः हारकोर्ट ब्रास

शाहलिन्स, मार्शल डी एंड एलमन आर सर्विस (1960) (सं). इवोलुशन एंड कल्चर. एन आर्बरःयूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन प्रेस

सोरोकिन पितिरिम(1957). सोसल एंड कल्चरल डाइनामिक्सः ए स्टडी ऑफ चेंज इन मेजर सिस्टम्स ऑफ आर्ट,ट्रुथ एथिक्स लॉ एंड सोसल रिलेशनशिप. बोस्टनः पोर्टर सर्जेंट

स्पेन्सर, हर्बर्ट(1898). द प्रिंसिपल्स ऑफ सोसिओलोजी. खंड 3. न्यू यॉर्कः डी. अपलेटन एंड कंपनी

स्पेंगलर,ओसवल. 1962(1918). द डेक्लाइन ऑफ द वेस्ट. न्यू यॉर्कः नोफ़

स्टीवर्ड, जूलियन.एच (1963). थियरी ऑफ कल्चर चेंजः द मेथडोलोजी ऑफ मल्टीलिनियर इवोलुशन. अरबानाःयूनिवर्सिटी ऑफ इलिनोय प्रेस

टोनबी, अर्नोल्ड 1946 (1934). स्टडी ऑफ हिस्टरी. न्यू यॉर्कः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

टाईलर, एडवर्ड बी(1871). प्रीमिटिव कल्चरः रिसर्चेस इंटु द डेवलपमेंट ऑफ माईथोलोजी, फिलोसोफी,रेलीजन,लंगवेज़, आर्ट एंड कस्टम्स.लंदनः जे. मुरे

वेबर , मैक्स(1958). द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म. ट्रांस. टेलकोट पारसंस. न्यू यॉर्कः स्क्रिबनर्स

व्हाइट, लेसली. ए(1959). द इवोलुशन ऑफ कल्चर,न्यू यॉर्कः मैकग्रा हिल्स

सहायक पुस्तकें

इकाई 1 समाजशास्त्र और समाजिक मानव विज्ञान का उद्‌भव

बोट्‌मोरे, टी बी (1962), सोशिओलोजी ए गाइड टू प्रोब्लमस एंड लिटरेचर, लंडनः जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड।

एरिक्सन, थॉमस हाईलैंड एंड फिन सिवर्टनेल्सन (2001), ए हिस्ट्री ऑफ़ अन्थ्रोपोलोजी (सेकिंड एडिशन), न्यू योकः प्लूटो प्रेस।

हैरिस, मर्विन 1979 (1969), दा राइज़ ऑफ अन्थ्रोपोलोजीकल थ्योरी, लंडन एंड हेनलीः रूटलेज एंड केगन पॉल।

रिट्‌ज़र, जी (2016), क्लासिकल सोसियोलोजिक्ल थ्योरी, न्यू दिल्लीः मैकग्रो हिल एजुकेशन (इंडिया)।

वोगेट, फ्रेड डब्लू (1975), ए हिस्ट्री ऑफ एथ्नोलोजी, यू एस एः होल्ट, राइनहार्ट एंड विंस्टन।

इकाई 2 समाजशास्त्र का मानव विज्ञान के साथ संबंध

बी टी, जॉन, 1980 (1964), अदर कल्चर्स, लंदन एवं हेनलीः रूटलेज एंड कीगेन पॉल

बीटेल, अंद्रे, 2004 (2002) सोशियोलॉजीः एस्से ऑन अप्रोच एंड मेथड (तृतीय संस्करण), नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, प्रेस।

धंगारे, डी.एन. 1993, थीम्स एंड पर्सपेक्टिव्स इन सोशियोलॉजी, जयपुर एवं नई दिल्लीः रावत प्रकाशन।

मेलीनोंस्की, ब्रोनीसलॉ, 1922, आर्गोनॉट्स ऑफ द वेस्टर्न पेसिफिकः एन एकाउंट ऑफ नेटिव एंटरप्राइजेज एंड एडवेंचर इन द आर्किपेलेगोज ऑफ मेलेनेशियन न्यू ग्यूना, लंदनः जार्ज रूटलेज एंड संस लिमिटेड।

रेडक्लिफ–ब्राउन, ए.आर. 1983 (1958) मेथड इन सोशल अंथ्रापॉलॉजी, शिकागो, इलियोनॉइसः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।

सरना, गोपाला (1983) सोशियोलॉजी एंड एंथ्रापोलॉजी एंड अदर एस्सेज, कलकत्ताः इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल रिसर्च एंड एप्लाइड एंथ्रापोलॉजी।

इकाई 3ः समाजशास्त्र का मनोविज्ञान से संबंध

बैरन,आर.ए एंड बयर्ने, डी. (1997). सोशल साइकोलॉजी.(8जीएडिशन). बोस्टन, एम.एःआलिन एंड बेकन.

डलमटेर, जे. (2006). हैंडबुक ऑफ़ सोशल साइकोलॉजी. यु ऐस एः स्प्रिंगर.

मैक डॉगल, डब्लू. (2001). ऐन इंट्रोडक्शन टू सोशल साइकोलॉजी. (14जी एडिशन). ओंटारियोःबातोचे बुक्स.

इन्कलेस, ए. (1964). व्हाट इस सोशियोलॉजी? ऐन इंट्रोडक्शन टू द डिसिप्लिन एंड प्रोफेशन. न्यू जर्सीः प्रेन्टिस हॉल.

डलेंटी, जी. एंड इषन इंजिन एफ़. (2003) हैंडबुक ऑफ़ हिस्टोरिकल सोशियोलॉजी, न्यू दिल्लीः सेज।

लाचमैन, आर. (2014) वॉट इज़ हिस्टोरिकल सोशियोलॉजी, कैम्ब्रिजः पोलिटि प्रैस।

टिली, सी (1981) एज़ सोशियोलॉजी मीट्स हिस्ट्री, न्यू यार्कः अकैडमिक प्रैस।

निसबैट, आर. (1969) सोशीयल चेंज एंड हिस्ट्री, ऑक्सफोर्ड, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस।

इकाई 5: समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र से संबंध

बोर्दियू, पिएर्रे .1984 डिस्टिंक्शन सोशल क्रिटिक ऑफ द जजमेंट ऑफ टेस्टहार्वर्डः यूनिवर्सिटी प्रेस हार्वर्ड।

स्वेडबर्ग , नील जे एंड रिचर्ड. 2005 द हैंडबुक ऑफ इकोनॉमिक्स सोशियोलॉजी प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क।

ओंकार नाथ, जी. 2012 इकोनॉमिक्स, प्राइमर फॉर इंडिया, ओरियंट ब्लैकस्वान।

स्मेल्सर, ए मार्टिनेली.इकोनामी एंड सोसाइटीज, ओवरव्यू इन इकोनामिक सोशियोलॉजी,लंदनः सेज।

इकाई 6 समाजशास्त्र का राजनीति विज्ञान से संबंध

जानोस्की, थॉमस एट अल (2005)। द हैंडबुक ऑफ पॉलिटिकल सोशियोलॉजीः स्टेट, सिविल सोसाइटीज एंड ग्लोबलाइजेशन, कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

मैकौली, डब्ल्यू, जेम्स (2003)। एन इनट्रोडकशन तो पॉलिटिक्स , स्टेट एंड सोसाइटी , नई दिल्ली, सेज पब्लिकेशन।

नैश, केट (2010)। कोंटेम्पोरेरी पॉलिटिकल सोशियोलॉजी : ग्लोबललिजेशन , पॉलिटिक्स एंड पावर , माल्डेन, विली–ब्लैकवेल।

इकाई 7 – संस्कृति और समाज

दूबे, एस. सी.(1990) इंडियन सोसाइटी. नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्टद्य

अप्पादुरई, ए(1996). मॉडर्निटी एट लार्जः कल्चरल डायमेंशन ऑफ़ ग्लोबलीसेशन. लंदनः यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिनेसोता प्रेस।

लिंटन, आर (1955).द ट्री ऑफ़ कल्चर. नई यॉर्कः अल्फ्रेड ए. क्नोप्फ़।

सेन, एस.(2007). ग्लोबलाइजेशन एंड डेवलपमेंट.नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट।

इकाई 8 सामाजिक समूह और समुदाय

हौर्टन,पॉल बी एंड हंट,चेस्टर एल. 2004. सोसिओलोजी. न्यू यॉर्क : टाटा मैगरा–हिल

टोनीज़,एफ. 1955. कोंयूनीति एंड असोसियेशन. लंदनः रुतलेज एंड किगा पॉल

यंग के. 1949. सोसिओलोजीः ए स्टडी ऑफ सोसिओलोजी एंड कल्चर. न्यू यॉर्क. अमेरिकन बुक कंपनी

यूनिट 9 संगठन और संस्थाएँ

ब्ला, पी.एम. एवं स्काट, डब्ल्यू.आर, (1963) फार्मल आर्गेनाइजेंसः ए कंपेरेटिव एप्रोच, रूटलेज एंड केगेन पॉल

ऍटिजियोनी, ए. (1964) मॉडर्न आर्गेनाइजेशंस, इंग्लेवुड क्लिफ्स, एन.जे. प्रेंटिस–हॉल

गिडेंस, एंथोनी, 1984, द कंस्टीटयूशन ऑफ़ सोसायटीः आउटलाइन ऑफ़ द थ्योरी ऑफ स्ट्रक्चरेशन, कैम्ब्रिजः पॉलिसी प्रेस

नाइट, जे. (1992) इंस्टीटयूशंस एंड सोशल कॉनफ्लिक्ट, कैम्ब्रिज, एनवाईः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

टर्नर, जोनाथन, 1997, द इंस्टीटयूशनल ऑर्डर, न्यू यॉर्क, लोंगमेन

वेबेर, एम, (1964) द थ्योरी ऑफ सोशल एंड इकोनॉमिक आर्गेनाइजेशन, न्यू यॉर्क द फ्री प्रेस

इकाई 10 प्रस्थिति और भूमिका

बैंटन, एम. (1965). रोल्सः एन इंटरोडकषण टू द स्टडी ऑफ सोसल रिलेशन्स .लंदनः टैविस्टॉक

गिडेंस, ए और सटन, पीडब्ल्यू (2014). एसेंशिययल्स कोन्सेप्ट्स इन सोसिओलोजी . कैम्ब्रिजः पोलिटि

गोफमैन, ई. (1990).द प्रजेंटेशन ऑफ सेलफ़िन एवरीडे लाइफ.लंदनः पेंगुइन।

इकाई–11 सामाजीकरण

अब्राहम, एम्. फ़. (2014). कंटेम्पररी सोशियोलॉजीः एन इंट्रोडक्शन टू कॉन्सेप्ट्स एंड थेओरीज़, सेकंड एडिशन. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

गिड्डेन्स, ए. एट अल. (2014). इंट्रोडक्शन टू सोशियोलॉजी, नाइनथ एडिशन. न्यू यॉर्कः डब्लू. डब्लू. नॉर्टन एंड कंपनी.

जॉनसन, एच.एम्. (1960). सोशियोलॉजीः ए सिस्टेमेटिक इंट्रोडक्शन. न्यू यॉर्कः हरकोर्ट, ब्रेस एंड वर्ल्ड.

इकाई 12 संरचना और प्रकार्य

बर्नार्ड, एलन–2000 हिस्टरी एंड थोयरी इन एन्थ्रोपोलॉजी,(कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी–प्रैस)।

गाइल्डनर, झूलिविन डब्लयू (1973) फॉर सोषियोलॉजी, लंदन ऐलेन लेन टर्नर, जोनॉथन, एच (1987) स्ट्रक्चर ऑफ सोषियोलॉजिकल थ्योरी (जयपुर, रावत पब्लिकेशन)।

इकाई 13 सामाजिक नियंत्रण और परिवर्तन

होरटन,पॉल बी एंड चेस्टर एल हंट 1987(1984),सोसिओलोजी. लंदन एतालः मैक ग्रा हिल बुक कं

मुरे, विलबर्ट ई (1987). सोसल चेंज. न्यू दिल्लीः प्रेंटिस हाल ऑफ इंडिया लि.

ओगबर्न विलिअम एफ. 1950(1922). सोसल चेंज. न्यू यॉर्कःविकिंग

ओरेन्स्टिन, डेविड माइकल(1985). द सोसिओलोजिकल क्वेस्टः प्रिंसिपल्स ऑफ सोसिओलोजी. सेंट पॉल, न्यू यॉर्क एटालःवेस्ट पब्लिशिंग कं

टोनीज़, फेर्डिनेंद. 1963(1887). कम्यूनिटी एन सोसायटी. ट्रांस सी पी लुमिस. न्यू यॉर्कः हार्पर एंड रो

शब्दकोष

पूंजीपति– उत्पादन की औद्योगिक प्रणाली में, उत्पादन के साधनों के मालिकों का वर्ग (जैसे पूंजी, यानी धन, संपत्ति, उपकरण इत्यादि) को पूंजीपति कहा जाता है।

सांस्कृतिक सापेक्षता– संस्कृति एक समूह के लिए विषिश्ट है, प्रत्येक समूह को अपनी संस्कृति के अनुसार अध्ययन किया जाना चाहिए।

सांस्कृतिक उत्तरजीविता– सांस्कृतिक तथ्य परिस्थितियों के समूह में अधिक समय तक जीवित रहती है जिनके तहत ये विकसित होती है।

ज्ञानोदय– यह यूरोपीय इतिहास में उस अवधि से सम्बंधित है, जिसमें अट्ठारहवीं शताब्दी के फ्रांसीसी दार्षनिकों के विचारों को चेतना दी। इस अवधि के दौरान एक विश्वास विकसित हुआ की प्रकृति और समाज दोनों का वैज्ञानिक रूप से अद्ययन किया जा सकता है। मानवीय करण और विकास के विचार विकसित हुए।

संपत्ति– 17 वीं–18 वीं शताब्दी के मध्ययुगीन यूरोपीय समाज में स्तरीकरण की व्यवस्था का पालन किया गया, जिसमें समाज को अलग–अलग सामाजिक समूहों में विभाजित किया गया था जिसमें प्रत्येक के लिए कानूनों और सामाजिक स्थिति का एक अलग समूह था।

सामंती–कृषि क्षेत्रों में कार्यकाल की एक अवधि जिसमें एक दास या कृशक मजदूर भूमिपति के लिए कार्य करता है जिसके पास ज़मीन होती है। बदले में भूमिपति मज़दूर की इजाज़त देता है की वो उसकी ज़मीन पर काम करे और रहे।

मानव जाति की मानसिक एकता– एक अवधारणा जो यह मान्यता रखती है कि सभी मनुष्य, विभिन्न संस्कृति या जाति के बावजूद, समान बुनियादी मनोवैज्ञानिक और संज्ञानात्मक सोच रखते।

समूह प्रक्रियाः समाजशास्त्रीय मनोविज्ञान की वह विधि जिससे ये पता लगाया जाता है कि आधारभूत सामाजिक पद्धति सामाजिक संदर्भ में किस प्रकार कार्य करती हैद्य

मनोविज्ञानः मानव व्यवहार के अध्ययन का विज्ञान।

सामाजिक तथ्यः वे सभी नियम, नैतिकताएं, मूल्य, धार्मिक विश्वास, रीति–रिवाज, रस्में, परंपराएं तथा सभी संबंधिक सांस्कृतिक मूल्य जो सामाजिक जीवन को नियंत्रित करते हैंद्य

सामाजिक अंतःक्रियाः एक सैद्धांतिक अवधारणा जिसके द्वारा अध्ययनकर्ता समाज में व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधों को उनसे प्राप्त जानकारी (संकेत व भाषा) के आधार पर यथासंभव जान लेता है।

समाजशास्त्रीय कल्पनाः वह योग्यता जिससे यह पता लगता है कि तुम्हारा अतीत अन्य लोगों के अतीत से किस प्रकार सम्बंधित है

सामाजिक मनोविज्ञानः लोगों के विचारों, भावनाओं तथा व्यवहारों का सामाजिक संदर्भ में सिलसिलेवार अध्ययन।

समाजशास्त्रः समाज का सिलसिलेवार अध्ययन।

वेरस्टेहनः जर्मन भाषा का शब्द जिसका अर्थ है गहराई तक समझ जाना।

ऐतिहासिक समाजशास्त्रः यह एक उप–क्षेत्र है जो समाजशास्त्र और इतिहास के बीच प्रतिच्छेदन के परिणामस्वरूप उभरा है। अध्ययन के लिए यह रूचिकर रहा है कि कैसे लोग, समुदाय और समाज समय–समय पर बदलते रहते हैं, कैसे उन्होंने स्वयं को समकालीन आधुनिक समाजों में परिवर्तित किया। इस तरह के अध्ययन के लिए यह ऐतिहासिक तथ्यों पर निर्भर करता है।

इतिहासः आम तौर पर, इतिहास को अतीत के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह लोगों और अतीत की घटनाओं का अध्ययन करता है। यह मानव समाज की पिछली घटनाओं, विकास और वृद्धि का एक कालानुक्रमिक लेखा प्रस्तुत करता है।

सामाजिक इतिहासः सामाजिक इतिहास समाजशास्त्र और इतिहास को करीब लाने वाला एक उप–क्षेत्र है। यह मुख्य रूप से सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं को परिभाषित करने वाली विशेषताओं के रूप में शामिल करता है। पारिभाषिक शब्द सामाजिक इतिहास, अक्सर ऐतिहासिक समाजशास्त्र शब्द के साथ परस्पर विनिमयशीलता से उपयोग किया जाता है।

राजनीति विज्ञानः इसे आमतौर पर राजनीति के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है। इस विषय में राजनीति और इसके विभिन्न संस्थानों से संबंधित सरकार, राज्य और राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन शामिल है।

राजनीतिक समाजशास्त्रः यह समाजशास्त्र का एक उप–क्षेत्र है जो मुख्य रूप से समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच सकारात्मक संबंधों के परिणामस्वरूप उभरा है। दूसरे शब्दों में, यह समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच का अंतरक्षेत्र है।

राजनीतिक पूंजीः राजनीतिक पूंजी, सद्भावना, विश्वास और प्रतिष्ठा के रूप में, एक प्रतीकात्मक पूंजी है जो मुख्य रूप से राजनीतिक क्षेत्र के भीतर निर्णय लेने, मूल्य और प्रतिष्ठा से संबंधित है। राजनीतिक पूंजी एक उपकरण के रूप में कार्य करती है जो लोगों को राजनीतिक क्षेत्र में अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने में मदद करती है। दूसरे शब्दों में, राजनीतिक क्षेत्र जितना बेहतर होगा, राजनीतिक क्षेत्र में प्रभावशाली या प्रतिष्ठा बेहतर हो सकती है।

राजनीतिक समाजीकरणः शब्द एक सामाजिक प्रक्रिया को संदर्भित करते हैं जिससे लोग या समूह राजनीति या राजनीतिक व्यवहार सीखते हैं। यह समाजीकरण वैचारिक रूप से निर्देशित हो भी सकता है और नहीं भी। उदाहरण के लिए, कुछ राजनीतिक दल अपने वैचारिक तर्ज पर अपने कैडरों को या आबादी को प्रशिक्षित करते हैं। हालाँकि, दूसरी ओर नागरिक/मानवाधिकार समूह केवल लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने का प्रयास करते हैं।

राजनीतिक भूमिकाः सामाजिक रूप से, भूमिका एक सामाजिक रूप से अपेक्षित व्यवहार है। राजनीतिक भूमिका शब्द एक प्रक्रिया को संदर्भित करता है जब किसी व्यक्ति को राजनीतिक क्षेत्र के भीतर प्रदर्शन करने के लिए स्थिति और जिम्मेदारियों के सेट के साथ जोड़ा जाता है। समाज उनसे अपेक्षा करता है कि वे राजनीतिक सीमाओं के निर्धारित दायरे में ही प्रदर्शन करें।

राजनीतिक संस्कृतिः यह शब्द नियमों, परंपराओं, विश्वास प्रणालियों और मूल्यों के एक समूह को संदर्भित करता है जो अनिवार्य रूप से राजनीतिक प्रणाली की ओर उन्मुख होते हैं। प्रत्येक राष्ट्र की अपनी अलग राजनीतिक संस्कृति होती है। शब्द का आधुनिक मूल 1950 के दशक में वापस चला जाता है जब यह लोकप्रिय रूप से इस्तेमाल किया गया था और विषय का हिस्सा बन गया था। इस शब्द का उपयोग हेरडर, टोकेविले और मोंटेस्क्यू के काम में किया जाता है।

ऐनोमी – सामान्य सामाजिक व्यवस्था ढह जाने की स्थिति।

आर्टिफैक्ट्स – मानव निर्मित वस्तुएं जिनकी अपनी सांस्कृतिक पहचान होती है।

सांस्कृतिक अंतराल – वह स्थिति जब संस्कृति के कुछ अवयव दूसरों की तुलना में अधिक तेजी से बदलने लगते हैं।

प्रमुख विचारधारा – वे विचार, विश्वास तथा मूल्य जिन्हें बहुसंख्यक समाज अन्य संस्कृतियों वाले लोगों पर अपनी सामाजिक को पकड़ बनाए रखने के लिए इस्तेमाल करता है।

मेंटिफेक्ट्स– वह तरकीब जिससे कोई संस्कृति अपने विश्वासों व विचारों को पीढ़ी दर पीढ़ी बनाए रखती है।

बहुसंस्कृतिवाद – विभिन्न संस्कृतियों वाले लोगों के एक साथ मिलकर रहने तथा एक दूसरे के सांस्कृतिक मूल्यों के साथ समझदारी व सामंजस्य बनाए रखने की स्थिति।

सलाद बाउल – सलाद से भरा कटोराः विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले लोगों का एक साथ मिलकर रहना तथा एक दूसरे के साथ वैसे ही सहज ढंग से व्यवहार करना जिस प्रकार सलाद के विभिन्न घटक करते हैं।

संघः एक विशिष्ट उद्देश्य या सीमित संख्या में उद्देश्यों के लिए एकजुट लोगों का एक समूह; जैसे– सेना, स्कूलआदि।

समुदायः एक स्थायी सामाजिक समूह, जिसका लक्ष्य या उद्देश्य पूर्णता को समाविष्ट करता है।

संस्कृतिः व्यवहार, रीति–रिवाजों, विनियमों आदि की प्रणाली जिसे सामाजिक और सामाजिक रूप से अधिगृहीत किया जाता है।

भूमिकाः सामाजिक जीवन में मानव विभिन्न जिम्मेदारियों को निभाता है, उदाहरण के लिए पति, पत्नी, माता, पुत्र आदि वे विभिन्न भूमिकाएँ हैं।

स्थानीयताः किसी समुदाय का भौतिक आधार।

समूहः दो या दो से अधिक लोगों की गणना करता है जिनके पास एक सार्थक अन्तःक्रिया और सामान्य लक्ष्य हैं।

जेमिनशाफ्टः एक सामान्य परंपरा के भीतर भावना और रिश्तेदारी के मजबूत पारस्परिक बंधन।

जेसल्शाफ्ट : अवैयक्तिक रूप से व्यक्तियों के बीच संपर्क संघ ।

वर्गीकरणः सामाजिक डेटा को विभिन्न श्रेणियों और समूहों में रखने का एक तरीका।

संदर्भ समूहः किसी भी समूह को हमारे निर्णयों और कार्यों के लिए मॉडल या मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार किया जाता है।

प्राथमिक और गौण समूहः निकट संबंधों और व्यवहारों वाला एक छोटा समूह प्राथमिक समूह है; जैसे परिवार। शिथिल संबंधों के साथ एक बड़ा समूह, लेकिन सामान्य लक्ष्य द्वितीयक समूह है; जैसे कार्यालय के कर्मचारी।

समूहः कुछ संख्या मे व्यक्ति सदस्यता की साझेदारी और अन्तःक्रिया करते हों।

संस्थाः सामाजिक संबंधो की संगठित व्यवस्था जो कुछ निश्चित सामान्य मूल्य और प्रक्रिया

अपनाए रहती है और समाज की मूल आवश्यकता की प्राप्ति करती है।

स्वैच्छिक संघः कुछ निश्चित प्रकार्य की ओर निर्दिष्ट औपचारिक संगठन जो स्वैच्छिक रूप से प्रवेश करते हैं न कि आरोपित रूप से ।

प्रसारः समूह से समूह तक संस्कृति लक्षणों का प्रसार।

औद्योगिक समाजः एक समाज जिसमें सामान मुख्य रूप से उत्पादन के मशीन–फैक्ट्री विधियों के माध्यम से उत्पादित होते हैं।

खोजः एक नया संयोजन या मौजूदा ज्ञान का एक नया उपयोग।

प्रवासनः लोगों के क्षेत्र में या बाहर स्थानान्तरण।

जनसंख्या परिवर्तनः समाज में लोगों की संख्या में परिवर्तन, या आबादी की विशेषताओं जैसे आयु या लिंग।

प्रगतिः मूल्यों के कुछ सेट के अनुसार सामाजिक या सांस्कृतिक परिवर्तन जिसे वांछनीय माना जाता है।

सामाजिक आंदोलनः परिवर्तन को बढ़ावा देने या विरोध करने के लिए एक सामूहिक कार्य।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY